# THE BOOK WAS DRENCHED

UNIVERSAL LIBRARY

OU_180530
UNIVERSAL LIBRARY

OUP—23—4-4-69—5,000

**OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY**

Call No. H83 H34M Accession No. P.G. H3307

Author हाशमी , मुजतर .

Title मंझधार . 1960 .

This book should be returned on or before the date last marked below.

# मंझधार

# मंझधार

लेखक

मुज्तर हाशमी

प्रकाशक

एन० डी० सहगल एण्ड सन्ज़

दरीबा कलां, दिल्ली

प्रकाशक :
**नारायण दत्त सहगल एण्ड सन्ज**
दरीबा कलां, दिल्ली—६

सर्वाधिकार सुरक्षित
प्रथम सस्करण
सन् १९६०

**मूल्य : ४ रुपए २५ नए पैसे**

**आवरण : श्री आनन्द**

मुद्रक :
केसर क्यारी इलैक्ट्रिक प्रेस,
दिल्ली

MANJDHAR : MUZTAR HASHMI Rs. 4.25 nP.

अनवर की मौन निगाहों को

तामीरे आशियाँ की हवस का है नाम बर्क़
जब हमने कोई शाख़ चुनी शाख़ जल गई।

चल दिये दुनिया से फ़ानी अहले ज़ौक़
और हम मरने को ज़िन्दा रह गये।

# दो शब्द

सन् १९४८ के आरम्भिक दिन ! मैं 'आकाशवाणी', दिल्ली के स्टाफ़ में नया-नया था। साम्प्रदायिक दंगों की स्मृति अभी धूमिल भी न होने पाई थी। शरणार्थियों के यत्र-तत्र पड़े कैम्प उसकी स्मृति ताजा करते रहते थे। राख में दबी अग्नि का आभास वातावरण में अभी था कि मेरे मित्र स्व० श्री सत्यदेव शर्मा ने, जो उन दिनों 'आकाशवाणी' में लेखक के पद पर कार्य कर रहे थे एक दिन मुझसे कहा—

'शास्त्रीजी ! धर्म-संकट में फंसा हूं। क्या आप उबारियेगा ?'

और मैं स्तम्भित खड़ा एक क्षण उनकी ओर देखता रहा। मैंने कहा—

'आज्ञा कीजिये, मैं किस योग्य हूं ?'

'एक मुसलमान हिन्दू होना चाहता है।' और वे हंस दिये जैसी कि उनकी प्रकृति थी।

'उसे आर्य समाज में ले जाइये।' मैंने गम्भीरता से उत्तर दिया।

'मेरा मतलब चोटी-जनेऊ से नहीं।' शर्माजी मेरे उत्तर से हंस दिये। 'वह हिन्दी पढ़ना चाहता है और उसके घर जाते सब घबराते हैं। क्योंकि मुहल्ला मुसलमानों का है।'

'ओ, समझा ?' मैंने तात्पर्य समझकर कहा 'मैं ट्यूशन तो नहीं करता, पर यदि आप आवश्यक समझते हैं तो मैं यह काम करूंगा।'

और तब जिस व्यक्ति से उन्होंने मेरा परिचय करवाया वे थे श्री मुज़तर हाशमी, जो 'आकाशवाणी' में कृष्णचन्द्र, राजेन्द्रसिंह बेदी, उपेन्द्रनाथ 'अश्क' और मण्टो की पीढ़ी के लेखकों में से एक थे।

मैंने उन्हें पढ़ाया। वे मुझे गुरू मानते हैं जबकि मैं उन्हें अपना उस्ताद, जिसका संभवतः उन्हे भी ज्ञान नहीं।

बात यों हुई कि मैं हिन्दी पढ़ाता और वे मुझे रेडियो शैली के बारे में समझाते और यह क्रम तब तक चलता रहा जब तक कि उन्हें सरकारी काम से श्रीनगर न भेज दिया गया। वहां भी उनके कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा हुई। यह बात दूसरी है कि अन्त में आपसी मतभेद के कारण उन्हे 'आकाशवाणी' से अलग होना पड़ा। मुझे यह मानने मे कोई आपत्ति नहीं कि श्री हाशमी से हुई उन आरम्भिक गोष्ठियों के कारण ही प्रायः मुझे रेडियो पर सफलता प्राप्त हुई।

श्री हाशमी वर्षों 'आकाशवाणी' से सम्बद्ध रहे। प्रत्येक स्थिति में उनके कार्य की प्रशंसा हुई। किन्तु मेरी धारणा है कि यदि समय रहते 'हाशमी साहब ने 'आकाशवाणी' का मोह छोड़ दिया होता और कृष्णचन्द्र, बेदी, उपेन्द्रनाथ 'अश्क' आदि के साथ ही अपने लिये स्थान खोजने निकल पड़े होते तो निश्चय ही आज उनका भी स्थान देश के अग्रगण्य लेखकों में होता।

श्री हाशमी की प्रतिभा बहुमुखी है। वे लब्धप्रतिष्ठ पत्रकार हैं। नाटककार और उपन्यासकार हैं। इनकी लेखनी में ओज, बात कहने में सामर्थ्य और विषय की सूझ-बूझ है। विषय को आत्मसात् कर कागज़ पर उतारने की कला मे वैचित्र्य है जैसा कि प्रस्तुत उपन्यास के अध्ययन से स्पष्ट है।

भूमिका के मैं पक्ष मे नहीं हूं। जो वस्तु सामने हो, पारखी उसे स्वय ठोक-बजाकर देख लेगा और मेरा विश्वास है कि 'मंझधार' में वह सब-कुछ है जो एक उपन्यास में होना चाहिये।

जवाहरनगर, दिल्ली

**राजाराम शास्त्री**

# १

**

नाजिम जब विलायत से डी० लिट्० करने के पश्चात् लाहौर पहुंचा तो उसे शीघ्र ही एक स्थानीय कालेज मे अंग्रेज़ी की सीनियर प्रोफेसरी का पद प्राप्त हो गया। उसके पिता मिया मैराजउद्दीन एक बहुत बड़े ठेकेदार थे, जो लाखों रुपयों की जायदाद के अधिपति थे। नाज़िम उनका एकमात्र पुत्र था और दूसरी सन्तान थी एक कन्या, जो बी० ए० में पढ़ती थी। नाजिम और उसकी बहिन प्रवीण अभी छोटे ही थे कि उनकी माता का देहान्त हो गया। मिया मैराज उद्दीन का व्यापार दूर-दूर तक फैला हुआ था किन्तु पत्नी के देहान्त के उपरान्त उन्होंने बच्चों के पालन पोषण पर विशेष ध्यान देना आरम्भ कर दिया और ठेकेदारी का कार्य केवल कर्मचारियो की देखभाल पर छोड़ दिया। इस नई व्यवस्था से उनके धन्धे को स्वभावतः हानि का सामना करना पड़ा। परिणाम स्वरूप आय में पर्याप्त कमी हो गई किन्तु नदी से चीड़ी चोंच भर ले जाए तो कोई अन्तर नही पड़ता। केवल इतना हुआ कि लाखों की आय मे हजारों की कमी हो गई। एक पूजीपति के लिए यह हानि चाहे साधारण बात नही किन्तु मियां मैराज उद्दीन ने इसकी कोई चिन्ता न की। उन्होंने आर्थिक हानि को सहन किया। किन्तु बच्चों की ओर से उदासीन रहना उचित न समझा। जब नाजिम ने एम० ए० कर लिया तो उन्होने उसे उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए इंगलैंड भेज दिया।

मियाँ मैराज उद्दीन के पास ईश्वर का दिया बहुत कुछ था किन्तु उनकी यह हार्दिक इच्छा थी कि उनका पुत्र उच्च शिक्षा प्राप्त करके किसी कालेज में प्रोफेसर हो जाए। उनकी इच्छा पूर्ण हुई और नाजिम विलायत से आते ही एक कालेज में अंग्रेजी का सीनियर प्रोफेसर हो गया।

मियां मैराज उद्दीन का घराना वैसे तो आधुनिकता वादी और शिक्षित था किन्तु पर्दे आदि के बारे मे अब भी प्राचीनता वादी था। उनकी लडकी प्रवीन कालेज मे भी बुर्का ओढकर जाया करती थी। नाजिम विलायत से लौटने के बाद पर्दे आदि का पक्षपाती नही रहा था और इस बात के विरुद्ध था कि उसकी बहिन इस विज्ञान के युग मे भी बुर्के मे लिपटी कालेज जाए। कालेज जाना और पर्दा उसके लिए दो विरोधी बातें थी किन्तु पिता के विचारों के कारण वह इसके विरुद्ध भी कुछ न कहता। एकाध बार उसने सकुचाते हुए सकेत भी किया कि प्रवीण को बुर्का पहनने के लिए विवश न किया जाए किन्तु पिता ने बुर्के की धार्मिक आवश्यकता जितला कर उसे चुप करा दिया, और भविष्य में उसने इस बारे में कुछ कहना उचित न समझा।

जिस कालेज मे नाजिम प्रोफेसर था उसी कालेज में प्रवीण पढा करती थी। नाजिम एम० ए० और बी० ए० की श्रेणियों को अंग्रेजी पढाया करता था। क्योकि शैक्स्पीयर पर उसे अधिकार था इस लिए यही विषय वह उन्हे पढाता। कालेज मे प्रसिद्ध था कि शैक्स्पीयर के सभी नाटक उसे कण्ठस्थ हैं। सम्भव है यह उनका केवल विश्वास हो किन्तु यह वास्तविकता थी कि शैक्स्पीयर से उसे असाधारण लगाव था और उसने इसके नाटकों पर पर्याप्त साहित्य पढा था। इसके अतिरिक्त इस बारे में उसका व्यक्तिगत अन्वेषण भी पर्याप्त था। उसकी गणना देश के उन कुछ प्रोफेसरों में होती थी जो शैक्स्पीयर के नाटकों के विशेषज्ञ माने जाते थे। जब वह शैक्स्पीयर का कोई नाटक पढाने के लिए खड़ा होता तो ऐसा प्रतीत होता कि वह नाटक लन्दन के किसी रगमंच पर खेला जा रहा हो। कालेज के ऐसे विद्यार्थी जिनका उद्देश्य कालेज

में शरारतें करने के अतिरिक्त और कुछ नहीं होता उसके अध्यापन काल में मौन रहते और उनकी शरारतें एकाग्रता में डूब कर रह जातीं।

क्लासरूम के एक ओर कुछ बेंच लड़कियों के लिए सुरक्षित थे। अगले बेंच पर नाजिम की बहिन प्रवीन और उसकी सखी ताहिरा बैठी होतीं। प्रवीन बुर्के में होती किन्तु ताहिरा खुले मुह। वह भी लाहौर के एक शिक्षित और प्रतिष्ठित परिवार की लड़की थी किन्तु यह परिवार एक समय से पर्दे के बन्धन से मुक्त हो चुका था। जब नाजिम शेक्सपीयर के किसी पात्र पर टिप्पणी कर रहा होता तो प्रवीण अपने भाई की विद्वत्ता पर प्रसन्नता के मारे फूली न समाती। टिप्पणी समाप्त होने पर जब अवकाश मिलता तो ताहिरा उसके भाई की प्रशंसा किए बिना न रहती तब प्रवीन कुछ ऐसी प्रसन्नता अनुभव करती जिसका अनुमान किसी विद्वान् भाई की बहिन ही कर सकती है।

प्रवीन की पाठ्य पुस्तकों मे शैक्स्पीयर का दुःखान्त नाटक 'अथैलो' भी था। एक दिन नाजिम ने नाटक की नायिका 'डसडी मोना' का दुःखात्मक परिणाम शैक्स्पीयर की भाषा मे सुनाया और उसी दुखात्मक शैली मे उसकी व्याख्या की। सम्पूर्ण विद्यार्थियो पर एक जादू सा छाया था। उनके नेत्र आसुओ से भीगे थे। स्वय नाजिम की आवाज भर्राई हुई थी किन्तु वह पूरे प्रवाह के साथ बोलता जा रहा था। उसकी भाषा का उतार-चढाव उसकी हार्दिक भावनाओ का दर्पण था। जब उसने 'डसडी मोना' के अन्तिम शब्द करुण स्वर मे कहे तो लड़कियो की बेंचों से एक हल्की-सी चीख सुनाई दी। नाजिम ने उन बेंचों की ओर देखा। इसकी बहिन प्रवीन ताहिरा को संभाल रही थी। ताहिरा के आरक्त कपोल अश्रुओं से तर थे। किसी अन्य समय यदि यह घटना होती तो कालेज के बेफिक्रों को परिहास के लिए एक नई बात हाथ आ जाती और वे उसकी खूब चर्चा करते किन्तु क्योकि सबके हृदय करुणा से ओत-प्रोत थे इस लिए किसी ने उस ओर कोई विशेष ध्यान न दिया। इतने में अवकाश हो गया और सभी विद्यार्थी उठ कर चल दिए। नाजिम

भी यहां से छुट्टी पा स्टाफरूम में जाकर बैठ गया और अन्य प्रोफेसरों के साथ बातचीत में खो गया।

कमरा खाली हो गया। उसमें केवल प्रवीण और ताहिरा बैठी रह गईं। ताहिरा के नेत्रों से उसी प्रकार अश्रु प्रवाहित हो रहे थे। प्रवीन ने अपने रेशमी रूमाल से उसके अश्रु पोंछते हुए कहा 'ताहिरा! यह क्या कर रही हो? तुम भी विचित्र हो कि कथा कहानिया सुनकर रोने लगी हो। भला यह भी कोई बात है? मै भी तो तुम्हारे समान मानव हूं। परमात्मा के लिए रोना-धोना बन्द करो। फारसी का पीरियड आरम्भ होने वाला है। उठो चले।'

ताहिरा ने हिचकियां लेते हुए कहा 'प्रवीन! मै आज फारसी के पीरियड में नही जाऊंगी। मेरी तबीयत खराब हो रही है। मै अब घर जाना चाहती हूं।'

'बडा हल्का दिल है तुम्हारा?'

'हां प्रवीन! तुम सच कहती हो। मेरा दिल कुछ ऐसा नरम है कि मै गम की कोई बात सहन नही कर सकती। मुझे अब घर चला जाना चाहिए। नहीं तो तबीयत और खराब हो जाएगी।'

'आखिर क्यों—?'

'यह तो तुम ने देख ही लिया है कि मै बहुत भावुक हू। मेरे दिल की जो दशा हो रही है उस का मै वर्णन नही कर सकती। काश! 'डस डी मोना' की मौत मुझे मिल जाए।' यह कह कर ताहिरा ने फिर रोना आरम्भ कर दिया। प्रवीन ने उसे छेड़ते हुए और गुदगुदाते हुए कहा---

'ऐसी मौत की इच्छा करने से पहले कोई 'अथैलो' तो ढूंढ लो।'

'ताहिरा ने स्वय को उसके व्यंग्य से बचाने का यत्न करते हुए कहा—

'प्रवीन! तुम्हे तो हर समय मजाक ही सूझता रहता है। यहां दिल पर बनी हुई है और तुम मज़ाक कर रही हो।'

प्रवीन ने एक अट्टहास किया और बोली—

'अब समझी। तो यों कहो कि 'अथैलो' तुम ने ढूढ लिया है और शायद कोई बेवफा सा 'अथैलो' है। अरे, यह गलत कहा है मैंने। 'अथैलो' तो होता ही बेवफा है। खैर, मतलब यह है कि 'अथैलो' तुम ने ढूंढ लिया है, वर्ना दिल पर बनने का मतलब क्या है? हां, तो वे 'अथैलो' साहब कौन सज्जन हैं? मैं भी तो उनका नाम सुनू।'

ताहिरा ने एक बनावटी मुस्कराहट लाते हुए कहा—

'अब यह तुम ने एक नई बात निकाली है। पहिले तुम 'अथैलो' खोजने की पट्टी पढा रही थी अब कह रही हो कि तुम ने 'अथैलो' खोज भी लिया है। एक बात पर कही तो टिको।'

प्रवीन ने गम्भीरता से कहा—

'यह मैंने सत्य कहा है कि तुमने कोई 'अथैलो' खोज लिया है।'

'वह कैसे?'

'वह ऐसे कि जब हम किसी व्यक्ति को दुःखी देखते हैं तो हमारी भावना को तब तक प्रेरणा नही मिलती जब तक हमे खुद उस प्रकार के दु ख का अनुभव न हुआ हो। हम किसी व्यक्ति को दुःखी देख कर नही रोते बल्कि अपने दु.ख को याद कर के रोते हैं। क्यों, सत्य कहा है न मैंने?'

'ये तुम्हारी दार्शनिक बातें मेरी समझ में नही आती।'

'इसे कहते हैं जानबूझकर अनजान बनना।'

'तो गोया मैं असल बात तुम से छुपा रही हूं?'

'बिल्कुल यही बात है।'

'प्रवीन! यह सीधी-सी बात है कि परमात्मा ने किसी का दिल कठोर बनाया है किसी का नरम। जिस का दिल नरम होता है वह करुण भावनाओं को आसानी से स्वीकार कर लेता है और वह आंसुओं के रूप में प्रकट हो जाता है।'

'यह तुम ने सही कहा है किन्तु दिल का नरम होना भी इल्लत से खाली नही होता। इस का भी कोई कारण होता है।'

'वह क्या ?'

'वह यह कि करुणा ही मनुष्य के दिल को नरम बना देती है। तुम्हारा दिल वास्तव मे नरम है। लेकिन इस नरमी की जिम्मेदारी किसी 'अर्थलो' की बेवफाई पर नही आती।'

यह कह कर प्रवीन खिलखिलाकर हस पडी। ताहिरा ने हठात् मुस्कराने का यत्न किया किन्तु और अश्रुओं ने उस के नरगिसी नेत्रों में उमड़कर उस की मुस्कान का भेद स्पष्ट कर दिया। उसने दोनों हाथों से अपने चहरे को ढाप लिया। प्रवीन समझ गई कि उसको बहलाना कठिन है। इस लिये उस से अधिक परिहास करना उचित न समझा और बोली—

'ताहिरा ! चलो फिर मै तुम्हे घर छोड आऊ। मै भी आज फारसी के पीरियड मे नही जाती।'

ताहिरा ने अश्रुपूर्ण नेत्रो से उसकी ओर देखते हुए कहा—

'तुम अपना क्यो हर्ज करती हो। मै खुद, घर चली जाऊगी।'

'नही, मेरा कोई हर्ज नही। एक दिन फारसी का पीरियड छोड देने से क्या फर्क पड जाएगा। चलो दोनों चले।'

यह कहते हुए प्रवीन ने ताहिरा को उठाया और कमरे से निकल कर कालेज के बाहिर के द्वार की ओर चली। रास्ते मे दो चार लडकों ने उन्हे देख कर आपस मे कुछ कानाफूसी की। प्रवीन ने उन्हे देख लिया। ये लडके उसके सहपाठी थे। वह समझ गई कि वे आज की घटना के बारे मे परस्पर कानाफूसी कर रहे हैं। वे दोनों चुपके से उनके पास से निकल गईं और बाह्य द्वार पर पहुच गईं। द्वार पर प्रवीन का शोफर कार लिए खड़ा था। उस ने इन दोनों को देखते ही कार का पिछला द्वार खोल दिया। जब ये दोनों पिछली सीट पर बैठ गईं तो वह भी लपक कर अगली सीट पर बैठ गया और स्टीयरिंग पर हाथ रखते हुए बोला—

'तो क्या बीबी जी ! सीधा घर चलूं ?'

प्रवीन ने कहा—

'नहीं, पहिले नं० ३ टैम्पल रोड पर चलो। ताहिरा को वहां उतारने के बाद घर चलेंगे।'

शोफर ने कार चला दी और कुछ मिनटों में उन दोनों को ले कर नं० ३ टैम्पल रोड पर पहुंच गया। प्रवीन ने ताहिरा को कार से उतारा और उसे ले कर कोठी के भीतर चली गई।

कुछ मिनटो में ही प्रवीन लौट आई और आकर कार में बैठ गई। वह शोफर से बोली—

'चलो अब घर।'

शोफर ने कार कोठी से निकाली और उसका मुह ऐम्प्रैस रोड को ओर कर दिया। वही प्रवीन का घर था। जब वह घर पहुंची तो नाजिम भी आ चुका था। वह प्रवीन को देखते हुए बोला—

'प्रवीन ! आज तुमने मेरा इन्तजार भी न किया और कार ले कर चल दी। मै प्रोफेसर वहीद की कार मे घर आया हू। वे बेचारे मुझे यहा छोड़ कर अभी-अभी गए है।

प्रवीन ने अपना बुर्का एक खूटी पर लटकाते हुए कहा—

'भाई जान ! ताहिरा की तबीयत कुछ खराब हो गई थी। मै उसे छोड़ कर आ रही हू। आप की छुट्टी मे अभी कोई पन्द्रह मिनट थे इस लिए मै ने आपका इन्तज़ार न किया।'

नाजिम ने कुछ चकित होते हुए कहा—

'हां, तो ताहिरा को क्या हुआ था ? क्लासरूम मे तो उस का बहुत बुरा हाल हो रहा था। बड़ी भावुक लड़की है।'

'हां, भाई जान ! वहीं उसकी तबीयत खराब हो गई। मैंने उसे बहुतेरी तसल्ली दी मगर उसका रोना न थमा। मालूम नहीं क्या बात है ?'

नाजिम कुछ देर तक मौन बैठा सोचता रहा। फिर बोला—

'हा, तो अब क्या हाल है उस का ?'

'उसी हाल मे छोड़ आई हू उसे। उसकी अम्मां ने उसकी यह हालत देखी तो बड़ी घबराई और मुझ से पूछने लगी कि क्या बात हुई है। अब मैं इस का क्या जवाब देती। चुपके से वापिस आ गई।'

यह कह कर प्रवीन दूसरे कमरे मे चली गई। नाजिम एक आराम कुर्सी पर बैठ गया। और सिग्रेट सुलगाकर लम्बे-लम्बे कश लगाने लगा। उस की दृष्टि सामने की दीवार पर किसी चिह्न पर जमी हुई थी। और ऐसा प्रतीत होता था कि वह किसी गहरी चिन्ता मे डूबा हुआ है। उस ने एक के बाद एक कई सिग्रेट सुलगाए किन्तु उसकी एकाग्रता मे किसी प्रकार का अन्तर न आया। यों ही बैठे-बैठे सध्या हो गई। इतने में प्रवीन टैनिस के खेल से अवकाश प्राप्त कर रैकेट हाथ मे लिये कमरे मे प्रविष्ट हुई। और बोली—

'भाई जान ! आज आप खेलने के लिये आए ही नही। मैंने आखिर कौशल्या के साथ खेलना शुरू कर दिया। कौशल्या को तो आप जानते है न। साथ वाली कोठी मे रहती है और रायबहादुर नारायण दास सिविल सर्जन की लड़की है।'

नाजिम अभी उस का उत्तर भी न देने पाया था कि वह बोली—

'है ? तो अभी तक आप ने कपड़े भी नही बदले ? वही सूट पहने बैठे है जो पहनकर कालेज गए थे ?'

नाजिम ने अपनी भावनाओ को छुपाते हुए कहा—

'प्रवीन ! सोमवार के दिन वाई० एम० सी० ए० में मेरी एक तकरीर है न, बस उसी के बारे मे सोच रहा था और शाम हो गई।'

प्रवीन ने बिजली का स्विच दबाते हुए कहा—

'तो उठिये, और कपड़े बदल लीजिये। खाना भी अब तैयार है। अब्बाजान खाने की मेज़ पर बैठे हम दोनों का इन्तजार कर रहे होगे।'

नाजिम ने उठकर वस्त्र बदल लिये और खाने के कमरे में चला गया।

## २

**

ताहिरा लाहौर के एक स्वतत्र किन्तु शिष्ट परिवार की लड़की थी। ये लोग नवीन सभ्यता मे रंगे होने के कारण पर्दे आदि को त्याग चुके थे और पाश्चात्य सभ्यता का उन पर बहुत प्रभाव था किन्तु थे बहुत सभ्य। ताहिरा पुरुषों से स्वतंत्रतापूर्वक मिलती थी। कालेज के लड़कों के साथ घूमने फिरने में न उसे कोई आपत्ति थी और न माता पिता को ही। वह कालेज के प्रत्येक उत्सव मे स्वतंत्रा पूर्वक सम्मिलित होती और कालेज के प्रोफेसरों और लड़कों के साथ खुल कर बातें करती किन्तु इस पर भी उस के आचल पर कोई हलका सा धब्बा भी न लग पाया था जो साधारणतया स्वतंत्र युवतियों के व्यवहार का स्वाभाविक परिणाम होता है। उस का कारण सम्भवत: यह था कि वह अपनी स्वतंत्रता और पुरुषो के साथ अपने स्वतंत्र मेल-मिलाप को फैशन ख्याल नहीं करती थी। अपितु उस के वंश के रीति-रिवाज ही कुछ इस प्रकार के थे कि वह इन सम्पूर्ण बंधनों से स्वतंत्र थी जो भारतीय समाज में नवयुवतियों पर लगे होते है।

स्त्री स्वभाव से चाहे जितनी सभ्य हो कालेज के स्वतंत्र वातावरण से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकती। वैसे तो कालेज के हर लड़के में आसक्ति के कीटाणु बसे रहते है जो आवश्यक होने पर तेजी से बढ़ते है और उसे आसक्ति के मालीखौलिया का रोगी बनाने की सामर्थ्य

रखते है किन्तु एक भाग तो ऐसा है जो इस बारे में पेशावर कहलाता है। इस भाग के युवकों का काम सिवा इस के कुछ नही होता कि किसी सुन्दर लडकी को देखा तो दो चार लम्बी-लम्बी ठण्डी आहे भर दी। अथवा दो चार शेर पढ़ कर हृदय खोल कर रख दिया। इस प्रकार के लड़के सभ्य से सभ्य स्त्री को भी अपने जाल में फास सकते है और जब कोई लड़की बहुत ही खुली और स्वतत्र स्वभाव की हो तो उसे शीशे में उतारते उन्हे कोई कठिनाई नही होती। जब ताहिरा इस कालेज में प्रविष्ट हुई तो ये पेशावर आशिक उसे अपने जाल में फासने का प्रयत्न करने लगे। क्योकि सौन्दर्य के अतिरिक्त वह असाधारण रूप मे मिलने जुलने में स्वतन्त्र भी थी इस लिये यार लोगों के हौसले और भी बढे। जिस मार्ग से वह निकलती ठण्डी आहो और गरमागरम शेरों से उस का स्वागत होता। वह इन आवारा लड़कों की इन हरकतों को देख मुस्करा देती और आगे बढ जाती। लडकों की हिम्मत और बढ़ी और उन्होने खुले तौर पर प्रेम प्रकट करना आरम्भ कर दिया। वह सब कुछ जानती थी और केवल यह देखने के लिये मौन थी कि वह कहा तक इन बातों को सहन कर सकती है। इन लड़कों के बढे हुए हौसलों की विजय होती है अथवा उस के मौन की।

एक दिन वह क्लास रूम से निकलकर सामने घास के एक प्लाट पर जा बैठी। एक सज्जन भी उन के सामने आ बैठे और बेझिझक बोले—

'ताहिरा ! क्या कहू ? तुम सौन्दर्य की प्रतिमा हो। जब तुम पर दृष्टि पडती है तो स्वभावत: एक आह निकल जाती है।'

ताहिरा ने मुस्कराते हुए कहा—

'आदाब अर्ज है।'

युवक का हौसला और बढा और उसने और निकट हो कर कहा—

'किन्तु ताहिरा प्यारी ! सच्ची बात यह है कि

वह मजाके इश्क ही क्या जो एक ही तरफ हो
मेरी जा मजा तो जब है कि तुझे भी कल न आए।'

ताहिरा ने गम्भीरता से कहा—

'आप चाहते क्या है ?'

युवक ने अश्रु बहाने का यत्न करते हुए कहा—

'बस यही चाहता हू कि अपने दिल के मन्दिर में तुम्हे बिठा कर तमाम उम्र पूजा करू और अपने जीवन को तुम्हारे कदमो पर न्योछावर कर दू ।'

ताहिरा ने उसी गम्भीरता के साथ मुस्कराते हुए कहा—

'अगर तुम कहो तो इस पूजा का आरम्भ आज ही कर दू ?'

युवक का मुख मण्डल मारे प्रसन्नता के चमक उठा और बोला—

'नही', यह कर्तव्य मेरा है । पूजा के योग्य तुम हो न कि मैं । पूजा मुझे ही करनी चाहिए ।'

ताहिरा ने उठते हुए कहा—

'नही', आज तो पूजा मैं ही करूगी ।'

यह कहते हुए ताहिरा ने अपनी ऊची एड़ी का सैण्डल उतार लिया और जनाब पुजारी की पूजा आरम्भ कर दी । युवक घबरा गया और ताहिरा के हाथों स्वतत्र होकर भागने का यत्न करने लगा । किन्तु ताहिरा भी डील-डौल की खासी थी । उसने उसे भागने का अवसर ही न दिया और लगातार जूते बरसाती रही ।

ताहिरा ने उसे मार-मारकर अधमरा कर दिया । कालेज के लड़के पर्याप्त सख्या मे वहा एकत्र हो गए और उसे यो पिटते देख शोर मचाने लगे । एक लडके ने डरते-डरते आगे बढ़ कर कहा—

'ताहिरा ! यह क्या कर रही हो ?'

ताहिरा ने मुस्कराते हुए कहा—

'स्वामी जी की पूजा कर रही हू ।'

यह सुन कर सब खिलखिला कर हंस पडे और बोले—

'चलो, अब जाने दो । अच्छी खासी पूजा हो चुकी है । पूजा की

दूसरी किस्त अगर कल हो जाए तो क्या हर्ज है ?'

ताहिरा ने सैण्डल पहन लिया और उस लड़के के सिर पर हैट रखते हुए बोली—

'जाइये अब ।'

युवक वस्त्र झाड़कर उठ खडा हुआ और कालेज के मुख्य द्वार की ओर दौडा । दूसरे लड़को ने ठहाका लगाते हुए उसका पीछा किया ।

इस घटना के उपरान्त कालेज के दिल फेंक युवको के हौसले कुछ मन्द पड़ गए और कुछ दिन आराम से बीत गए । एक दिन एक मनचले के मन मे ख्याल आया कि पिटने वाले लड़के ने ताहिरा से प्रेम की भीख मागने मे कुछ भूल की है । यदि वह नियमानुसार उस से प्रेम निवेदन करता तो ताहिरा ऐसी हृदय हीन नही कि उसकी मुरम्मत करती । सो उसने अपने मन से गढे नियमो और विधानो के अनुसार प्रेम निवेदन का क्रम आरम्भ किया किन्तु उसका भी वही अन्त हुआ जो उससे पहले प्रेमी का हो चुका था । इस के उपरान्त दो तीन अन्य लडको को प्रेम की इस परीक्षा से गुजरना पड़ा और फिर कभी किसी को ऐसे निवेदन की हिम्मत न हो सकी । कालेज के बडे-बड़े प्रसिद्ध प्रेमी दुम दबा कर मैदान से भाग निकले । जब कभी दो चार असफल प्रेमी मिल बैठते तो न केवल अपने अपमान की चर्चा करते अपितु अति खेद के साथ कहते कि परमात्मा ने ताहिरा को सौन्दर्य प्रदान करने मे तो कजूसी नही की किन्तु हृदय के स्थान पर उसे पत्थर का टुकड़ा दे दिया है । ताहिरा के बारे मे लडकों की यह सम्मति गलत थी । उसका हृदय अति नरम था । उसके पास भी प्यार भरा एक दिल था किन्तु वह ऐसे नव युवको की वासना का शिकार होने के लिए तैयार न थी जो प्रेम प्रदर्शन की आड़ मे भोली-भाली लड़कियों की लाज लूटने के अभ्यस्त है ।

नाजिम रात गए तक जागता रहा और दिन की घटना पर विचार करता रहा । उसने स्वयं ताहिरा के सुन्दर नेत्रों से अश्रु प्रवाहित होते देखे थे । उसे यह भी मालूम था कि वह एक बड़ी गम्भीर और कठोर

स्वभाव की लडकी है। और कालेज के आवारा लडके उस से बहुत घबराते है। उसने कई आदमियों से सुन रखा था कि ताहिरा स्त्रीत्व के कोमल भावों से एक दम खाली है। उसे एक तेज और अक्खड़ पुरुष होना चाहिए था किन्तु प्रकृति ने उसे स्त्रीत्व प्रदान कर अन्याय किया था। नाज़िम की भी उसके बारे में यही सम्मति थी किन्तु जब उसने उसे एक भाग्यहीन और निष्पाप स्त्री की करुण कथा को सुनकर अश्रु बहाते देखा तो उसे विश्वास हो गया कि वह साधारण स्त्रियो के समान अति कोमल हृदय रखती है और उसका हृदय करुणा और प्यार के कोमल भावो से शून्य नही।

नाजिम देर तक करवटें बदलता रहा। आज उसका हृदय कुछ इस प्रकार की शून्यता का अनुभव कर रहा था जिसका उसे पहले कभी अनुभव न हुआ था। आज तक उसका यही विचार दृढ़ रहा था कि ताहिरा सुन्दरी तो है किन्तु उसके सौन्दर्य के पर्दे मे क्रोध की एक ऐसी आग भड़क रही है जो देखने वालो को जलाकर भस्म कर देने की शक्ति रखती है। आज उस पर यह भेद खुला कि ताहिरा किसी के अभिशप्त हृदय मे प्यार का दीपक जलाने की सामर्थ्य भी रखती है। वह सुन्दर भी है और प्यार भी कर सकती है। जब रात के कोई दो बजे तो नाजिम के नेत्र बोझल होने लगे और उसे नीद आ गई। नीद मे भी वह ताहिरा ही के स्वप्न देखता रहा। प्रातः वह नियम विरुद्ध देर से उठा। प्रवीन कालेज जाने के लिए तैयार हो रही थी। जब उसने उसे जागे हुए देखा तो बोली—

'भाई जान! बड़ी देर से आप उठे है? सात बज चुके है और कालेज खुलने में बहुत कम वक्त रह गया है। जल्दी से उठकर नहा धोकर तैयार हो जाइए। मै आपके लिए चाय कमरे मे भिजवा देती हू।'

नाजिम ने अगड़ाई लेते हुए कहा—

'प्रवीन! आज मेरी तबीयत कुछ खराब है। शायद कालेज न जा सकू? तुम चली जाओ।'

"क्यो ? खैर तो है ?"

'हा, कोई ऐसी बात तो नही । रात देर से सोया था इसलिए कुछ अंग टूट से रहे हैं और डर है कि अगर कालेज गया तो तकलीफ बढ न जाए । मै आज आराम ही करना चाहता हू ।"

'बहुत अच्छा, तो फिर मै जाती हू और नौकर से चाय के लिए कहे जाती हू ।'

यह कह कर प्रवीन कमरे से निकल गई । उसने नौकर को चाय के लिए कहा और स्वय पुस्तके लेकर कार पर कालेज चली गई ।

जब कार कालेज के द्वार पर रुकी तो उसे कालेज के भवन के सामने घास के मैदान मे ताहिरा बैठी हुई दिखाई दी । वह कार से उतर कर सीधी उसके पास पहुची और बोली---

'कहो ताहिरा ! तबीयत कैसी है अब ?'

ताहिरा ने मुस्कराते हुए कहा—

'बिल्कुल ठीक-ठाक हू ।'

'मालूम होता है कल की बेचैनी का कुछ असर बाकी है ।'

'नही तो । यह तुम कैसे कह रही हो ?'

'तुम्हारी आखें कुछ सूजी हुई मालूम होती हैं । मालूम होता है रात तुम सोई नही और फिर तुम्हारे चहरे पर वह पहली सी चमक भी तो नही । बाल भी कुछ परेशान से है । अब मै कैसे मान लू कि तुम ठीक-ठाक हो ।'

ताहिरा कुछ समय तक मौन रही ।

फिर बोली—

'नही, ऐसी तो कोई बात नही । और हा क्या प्रोफेसर साहब आ गए हैं ?'

प्रवीन ने कहा—

'नही, वे तो आज नही आए । उनकी तबीयत कुछ ठीक नही थी ।'

ताहिरा कुछ व्याकुल सी होकर बोली—

'क्यो ? क्या बात हुई ? कल तो वे भले चगे थे।'

प्रवीन ने मुस्कराते हुए कहा—

कल तुम भी तो भली चगी थी। आज देखो तुम्हारा क्या हाल हो रहा है ?'

ताहिरा को यह भय हुआ कि सभवत: प्रवीन को वास्तविकता का पता चल गया है किन्तु उसका यह भय अकारण था। प्रवीन ने वैसे ही कह दिया था कि कल तुम भी तो भली चगी थी। अन्यथा इसमें कोई व्यग न था।

ताहिरा कुछ देर तक मौन बैठी सोचती रही फिर बोली—

'तबीयत कोई ज्यादा खराब तो नही थी उनकी ?'

प्रवीन ने कहा—

'नही, कोई ऐसी बात तो नही। वैसे ही वे कुछ थके हुए से थे। और आज आराम करना चाहते थे।'

अभी ये दोनो बाते कर ही रही थी कि कालेज का घण्टा बजा।

प्रवीन ने कहा—

'ताहिरा ! उठो। एक्नामिक्स का पीरियड शुरू हो गया है।'

ताहिरा उसके साथ चल दी और दोनों एक्नामिक्स के लैक्चर में जा सम्मिलित हुईं। जब पीरियड समाप्त हुआ तो वे फिर निकल कर घास पर बैठ गईं और इधर उधर की बाते करती रही। ताहिरा ने सहसा विषय बदला और बोली—

'प्रोफेसर नाजिम तो आज आए नहीं, इसलिए उनका पीरियड तो खाली रहेगा। बाकी रहे दो और पीरियड। सो उनका इन्तजार कौन करे ? मेरा ख्याल है चलो घर चलें। लेकिन मैं चाहती हूं कि घर जाने से पहिले तुम्हारे साथ प्रोफेसर साहब की खैरियत पूछने के लिए चलू। तुम जानती हो वे मेरे ट्यूटर भी है। क्यों, क्या ख्याल है ? कोई हर्ज तो नही इसमें ?

प्रवीन ने कहा—

'नही, कोई हर्ज नही। तुम शौक से मेरे साथ चलो। मगर दो पीरियड खाली जाएंगे।'

ताहिरा ने उसे बाजू से पकड कर ऊपर उठाते हुए कहा

'अरे, छोडो इन पीरियडों को। असली पीरियड तो वही शैक्स्पीयर का होता है। बाकी रहे फारसी और अग्रेजी कविता के पीरियड तो ये कोई ज्यादा जरूरी नहीं। चलो उठो, चलें।'

दोनों कार मे बैठकर कालेज से चल दीं। जब कोठी में पहुची तो प्रवीन ने कहा—

'ताहिरा! तुम जरा बाहर ठहरो। मै भाईजान से जाकर कहती हूं कि एक साहब आपकी खैरियत पूछने के लिए आए है। मेरा मतलब यह है कि थोडा मजाक ही रहेगा।'

ताहिरा ने कहा—

'बहुत अच्छा। तुम अन्दर जाओ, मै बाहर खडी इन्तजार करती हू।'

यह सुनकर प्रवीन नाजिम के कमरे का द्वार खोल कर भीतर प्रविष्ट हो गई। नाजिम सोने के वस्त्र पहने आराम कुर्सी पर लेटा था और सिग्रेट के कश लगा रहा था। प्रवीन को आते देख कर बोला—

'प्रवीन! आज तुम कालेज नही गई थी?'

'गई तो थी मगर सिर्फ एक्नामिक्स का लैक्चर सुनकर वापिस आ गई हूं। और हां, एक साहब आप की खैरियत जानने के लिए आए हैं और बाहर खडे है। कहिये तो बुला लू अन्दर उन्हे?'

'लेकिन वे है कौन? तुम जानती हो मैने आज सुबह से कपडे भी नही बदले और इसी तरह से बैठा हूं। यों किसी से मिलना बदतमीजी सी है।'

'लेकिन मेरा ख्याल है ये मिलने वाले इस पर कोई आपत्ति न करेगे। और फिर जब आप बीमार है तो कपडे बदलने का सवाल ही पैदा नही होता।'

'बहुत अच्छा तो बुला लो उन्हे।'

प्रवीन कमरे से बाहर चली गई और थोड़ी देर के उपरान्त ताहिरा के साथ कमरे में प्रविष्ट हुई। ताहिरा का मुख कमल आज कुछ मुर्झाया सा था और केश भी इधर उधर चहरे पर बिखरे हुए थे किन्तु न जाने नाजिम को इसमें आज इतना अधिक आकर्षण क्यो दृष्टिगत हो रहा था। उसने ताहिरा का स्वागत करते हुए कहा—

'आओ ताहिरा ! आज कैसे भूल कर आ गईं ? शायद इस से पहले तो मैंने तुम्हे यहा कभी नही देखा।'

'हा, आज मै पहली बार आपके यहां आई हू। प्रवीन की जुबानी मालूम हुआ था कि आपकी तबीयत खराब है इस लिए पूछने चली आई थी।'

नाजिम ने कमरे मे इधर उधर देखा। प्रवीन उन दोनो को छोड कर अपने कमरे मे जा चुकी थी। प्रवीन को कमरे में न पा कर नाजिम ने कुछ रुकते हुए कहा—

'यह तुमने बडी महरबानी की कि मेरी खैरियत पूछने के लिए आ गई। वैसे यह फर्ज तो मेरा था कि तुम्हारी खैरियत पूछने के लिए आता। मेरा मतलब यह कि कल क्लास रूम में बैठे २ तुम्हारी तबीयत भी तो खराब हो गई थी।

नाजिम और ताहिरा दोनों एक दूसरे के प्रेम के शिकार हो चुके थे। दोनों के हृदय कामदेव के वाणो से बिंध चुके थे किन्तु प्रत्येक को यही ख्याल था कि प्रेम का प्रभाव केवल उसी के व्यक्तित्व तक सीमित है और कि दूसरे पर इसका कोई प्रभाव नही। यही कारण था कि नाजिम हृदय की बात मुख पर लाते झिझक रहा था और बड़ी सावधानी से बातचीत कर रहा धा। जब उसने ताहिरा की तबीयत की खराबी की चर्चा की तो वह कुछ झेंप सी गई और बोली—

'हां, प्रोफेसर साहब ! बात ही कुछ ऐसी थी कि उसका मेरे दिल पर बहुत ज्यादा प्रभाव हुआ और बे अख्तयार मेरी आखों में आसू आ गए। मुझे बाद में शरम भी आई मगर उस वक्त अपनी इस हरकत

पर अफसोस करना एक बेकार सी चीज़ थी। लेकिन साहब ! बात यह है कि अपने आप पर काबू रखना मेरे बस के बाहर हो चुका था।'

नाजिम ने मुस्कराते हुए कहा—

'मालूम होता है तुम बहुत नरम दिल हो लेकिन लोगो की राय तुम्हारे बारे मे कुछ और है। मेरा मतलब यह है कि वे तुम्हे कुछ कठोर स्वभाव की लडकी ख्याल करते हैं।'

ताहिरा ने कुछ देर मौन रहने के उपरान्त कहा—

'हां, मैं यह जानती हू कि मेरे बारे में लोगो की राय ऐसी ही है। और ऐसी ही होनी चाहिए। हर शरीफ़ औरत के बारे मे लोगों की राय ऐसी ही होती है।'

नाजिम कुछ घबराया। उसने सोचा कि संभवतः ताहिरा को उसके ये शब्द कुछ अनुचित प्रतीत हुए हैं। उसने पैंतरा बदलते हुए कहा—

'लोगों की राय का जो मैंने चर्चा किया है उसका मतलब यह नही कि तुम वाकई ऐसी ही हो। लोग तो ऐसी बाते करने के आदी हैं। खैर, छोडो इस किस्से को। हा, तो यह बताओ कि अब तो तुम्हारी तबीयत ठीक है न ?'

ताहिरा ने उसका कोई उत्तर न दिया और कुछ देर तक मौन रहने के उपरान्त बोली—

'कल तक तो आप की तबीयत ठीक हो जाएगी और आप कालेज आएगे ?'

'हा, ख्याल तो यही है। आप भी तो आएगी ?'

'अगर आप आएं तो।'

इसके पश्चात् कुछ देर तक पुनः मौन रहा। नाजिम की दृष्टि उस के सुनहले केशो, सुन्दर मुख मण्डल और सुडौल अगों पर पड़ रही थी और वह नीची दृष्टि किए उसके सामने कुर्सी पर बैठी थी। उसने एक दो बार नाजिम के चहरे पर दृष्टि डाली और फिर नेत्र झुका लिए। नाजिम ने कुर्सी पर सभल कर बैठते हुए कहा—

'क्या मेरा आना शर्त है ?'

'हां, आप ही का तो जरूरी पीरियड है। अगर आप न आएं तो मेरा आना बेकार है। फारसी और एक्नामिक्स तो मैं घर पर भी तैयार कर सकती हू।

यह सुनकर नाजिम की दशा उस प्यासे हरिण सी हो गई जो सुराब को पानी समझकर दौडता है किन्तु निकट पहुच कर उसे प्रतीत होता है कि वह तो सूर्य की चमक मे चमकती रेत थी। 'अगर आप आए तो' के शब्द उसकी तसल्ली का पूर्ण सामान थे और उसे यह आशा हो चली थी कि वह अब लक्ष्य पर पहुचने के निकट है। किन्तु ताहिरा ने उस के पीरियड की महत्ता की चर्चा कर उसकी आशा पर पानी फेर दिया। वह कुछ कहना चाहता था कि प्रवीन कमरे मे आ गई और ताहिरा को सम्बोधन कर बोली—

'क्यो ताहिरा ! भाई जान की खैरियत पूछ ली तुमने ?'

ताहिरा ने मुस्कराते हुए उसकी ओर देखा और बोली—

'हा, पूछ ली।'

प्रवीन ने नाजिम से कहा—

'ताहिरा की तबीयत भी तो कल से खराब है। आपने भी इन की खैरियत पूछी ?

नाजिम ने कहा—

'हा, वह तो मैंने इनके आते ही कहा था कि खैरियत पूछना मेरा फर्ज था।'

यह सुनकर प्रवीन ने ताहिरा से कहा—

'चलो ताहिरा ! अब मेरे कमरे में। भाई जान की नई तस्वीर तुम्हे दिखाऊ।'

नाजिम चाहता था कि ताहिरा कुछ देर और बैठे किन्तु प्रवीन के कहने से वह उठ खड़ी हुई और उसके साथ चल दी। द्वार पर पहुच कर उसने मुड़कर देखा। एक क्षण के लिए दोनो के नेत्र मिले और

ताहिरा कमरे से निकल गई।

नाजिम के हृदय की जलन और तीव्र हो गई। उसका दिल जोर जोर से धडकने लगा और वह उठकर कमरे मे टहलने लगा। वह देर तक टहलता रहा। उसका विचार था कि ताहिरा जाने से पूर्व उससे मिल कर जाएगी किन्तु कमरे के बाहर निकल कर उसे पता चला कि शोफर उसे कार पर छोडने के लिए जा चुका है। यह सुनकर उस का हृदय धक् से रह गया और वापस कमरे मे आकर आराम कुर्सी पर लेट गया।

*

३

**

जब 'अथैलो' का नाटक समाप्त हो गया तो नाजिम ने दूसरे दिन क्लास के सामने 'अथैलो' के चरित्र पर लैक्चर आरम्भ किया। ताहिरा और प्रवीन उसी प्रकार अगले बैंचों पर इकट्ठी बैठी थी। नाजिम वैसे तो अथैलो का चरित्र चित्रित कर रहा था किन्तु उसके विचारों का केन्द्र बिन्दु कोई अन्य था। एकाग्रता के अभाव मे वह दो-तीन बार रुका और उसे अनुभव हुआ कि वह प्रकरण भूल गया है। जब लडकों ने उसे बताया तो वह फिर आगे बढ़ा। शेक्सपीयर पढ़ाने मे नाजिम की जो प्रसिद्धि थी वह बहुत कम प्रोफेसरो के भाग्य मे थी। किन्तु आज वह स्थान-स्थान पर रुक रहा था। लड़के चकित थे कि क्या बात है? वास्तविकता का किसी को ज्ञान न था। ताहिरा उसे एक टक ताक रही थी। वह स्वय भी कुछ खोई-खोई सी प्रतीत हो रही थी किन्तु नाजिम की दशा तो और भी अधिक खराब प्रतीत होती थी। प्रवीन आश्चर्य से उसे तक रही थी और मन ही मन लज्जित हो रही थी कि उसका भाई जिसकी विद्वत्ता की विद्वानों में धाक बैठी हुई है साधारण सी गलतियां कर रहा है। ताहिरा उसकी लज्जा को भांप गई और उसके कान के निकट मुह ले जाकर बोली—

'मालूम होता है प्रोफेसर साहब की तबीयत अभी ठीक नहीं हुई।'

प्रवीन ने धीरे से कहा—

'मेरा भी यही ख्याल है।'

पीरियड चालीस मिनट का था। नाजिम कठिनाई से पन्द्रह मिनट बोला और यह कहता हुआ बैठ गया—

'अफसोस है कि मेरी तबियत ठीक नही। मै अब ज्यादा नही बोल सकूगा।'

यह कह कर वह क्लास रूम से निकल गया। लडके पूरे ध्यान से उसका लैक्चर सुना करते थे। आज उन्हे बहुत निराशा हुई। किन्तु उन्हे विश्वास था कि वास्तव मे उसकी तबीयत ठीक नही है अन्यथा वह दस पन्द्रह मिनट मे इतनी बार न रुकता।

नाजिम के क्लास रूम से निकलते ही प्रवीन और ताहिरा उसकी ओर लपकी। ताहिरा ने उसके निकट जाकर कहा—

'प्रोफेसर साहब! क्यों, खैर तो है?'

नाजिम ने कहा—'हा ताहिरा! वैसे तो कोई बात नही लेकिन···"

वह कुछ और कहना चाहता था किन्तु न कह सका। उसने ताहिरा की ओर देखा तो उसके नेत्र अश्रुपूर्ण थे। यह देखकर वह कुछ कहे विना आगे बढ गया। प्रवीन ने उससे कहा—

'भाई जान! अब घर चलिए। आप दो-तीन दिन तक पूरी तरह आराम कीजिए।'

ताहिरा ने उसका समर्थन करते हुए कहा—

'हा, हा, आपको दो तीन दिन तक आराम करना चाहिए। ये दुनिया के काम तो होते ही रहेगे। इन्सान को अपनी सेहत का ध्यान पहिले रखना चाहिये।'

ताहिरा की आवाज भर्राई हुई थी। उसका हृदय प्रेम की ज्वाला से पिघला जा रहा था किन्तु वह अपनी भावनाओ पर अकुश रखे हुए थी और अपने अश्रुओ को रोकने का यत्न कर रही थी।

तीनो चलते-चलते कालेज के मुख्य द्वार पर पहुचे। कार के आने मे अभी देर थी। प्रवीन ने एक तागे वाले को आवाज दी। तागा उनके

सामने आकर रुक गया। नाजिम पिछली सीट पर आकर बैठ गया और प्रवीन अगली सीट पर जा बैठी। ताहिरा अभी तागे के समीप ही खड़ी थी। नाजिम ने उसे अर्थपूर्ण दृष्टि से देखते हुए कहा—

'और ताहिरा ! तुम ?'

ताहिरा के मुख से सहसा निकल गया—

'तो क्या मैं भी आपके साथ चलू ?'

प्रवीन ने कहा—

'हा, हा, तुम भी तागे मे बैठ जाओ। मैं कार पर तुमको घर भिजवा दूगी।'

ताहिरा नाजिम के साथ ही पिछली सीट पर बैठ गई और तागा चल दिया। ताहिरा ने नाजिम की ओर देखा और नाजिम ने ताहिरा की ओर। दोनो के नेत्र अश्रुपूर्ण थे। अब दोनों को एक दूसरे की हार्दिक दशा का अनुभव हुआ और उन्हे मालूम हो गया कि अग्नि समान रूप से दोनो ओर लगी हुई है। जब किसी गढ़े आदि के कारण तागे को हिचकोला लगता तो नाजिम का शरीर ताहिरा के नरम और भरे पूरे अगो से छू जाता और उसकी नस-नस मे विद्युत् की एक लहर सी दौड जाती। ताहिरा का दाया हाथ उसके बाए हाथ के निकट ही था उसने यह हाथ बढाकर ताहिरा के हाथ को अपने हाथ मे ले लिया। ताहिरा ने पुनः उसकी ओर देखा। अब भी उसके नेत्रों से अश्रु बह रहे थे किन्तु ये प्रसन्नता के अश्रु थे। वे आसू जो दो बिछुडे हुओ के मिलन पर बरबस नेत्रो से निकल आते है। ताहिरा ने नाजिम के हाथ को अपने गदराए हाथो मे लेकर अपने नयनों पर रख लिया। उसका हाथ आसुओ से भीग गया। इसके पश्चात् उसने नाजिम के हाथ को चूम लिया।

प्रवीन अगली सीट पर बैठी किसी गहरी चिन्ता मे डूबी हुई थी। उसे इस बात का रत्ती भर भी भान न था कि पिछली सीट पर ताहिरा और नाजिम में आखो ही आखों मे प्रेम तथा प्यार किये जा रहे है। उसे यह भी पता नही था कि दोनों मे प्रेम है और दोनो की तबीयत के

बिगडने का वास्तविक कारण भी यही है। कोई पन्द्रह-बीस मिनट में तांगा उनकी कोठी पर पहुच गया। प्रवीन ने अपने बटुए से तागे वाले को पैसे देकर विदा किया और तीनो ड्राइग रूम में आ गए।

ताहिरा और नाजिम दोनों आमने सामने कुर्सियो पर बैठ गए और प्रवीन यह कहती हुई बाहिर निकल गई—

'मै अभी चाय तैयार करवा कर लाती हू। आप बैठिए।'

प्रवीन के चले जाने पर नाजिम और ताहिरा मौन बैठे एक दूसरे को तकते रहे। आखिर नाजिम ने यह कहते हुए मौन भग किया—

'ताहिरा ! [illegible] बाकी रह गया है।'

ताहिरा ने मुस्कराते हुए कहा—

'क्या आप मेरे बारे मे कह रहे हैं ?'

नाजिम ने कहा—

'खुदा न करे ? मै तुम्हारे बारे मे क्यो कहने लगा ? मैंने यह अपने बारे मे कहा है।'

'तो क्या मेरे पागल होने मे कोई कसर है ?'

'लेकिन मेरे पागलपन के लच्छन तो तुम क्लास रूम मे देख चुकी हो ?'

'यह तो आप आज की बात कह रहे है। परसो जब क्लास रूम मे मुझपर पागलपन छाया हुआ था वह आप भूल गए ? और फिर कल भी जब मे आपके यहा आई और यह कहकर अपने पागलपन को छुपाया कि मै आपकी खैरियत पूछने के लिए आई हूं तो उसका आपको ख्याल ही नही। फिर भी यह रोग पहले मुझे लगा।'

नाजिम ने हसते हुए कहा—

'तो मतलब यह है हम दोनो पागल हैं।'

'थे, मगर अब नहीं।'

'वह कैसे ?'

'वह यों कि हमारा पागलपन लक्ष्य प्राप्त न होने की वजह से था।

अब जब कि हमने अपना लक्ष्य पा लिया है तो पागलपन भी जाता रहा है।'

'यह तुम्हारा कहना सही है।'

'लेकिन प्रोफेसर साहब!'

ताहिरा कुछ और कहना चाहती थी कि नाजिम ने उसकी बात को बीच में टोकते हुए कहा—

'ताहिरा! मुझे प्रोफेसर साहब मत कहो। नाजिम कहो।'

ताहिरा ने अपनी नरम तथा कोमल भुजाएं उसके गले में डालते हुए कहा—

'प्यारे नाजिम!'

नाजिम ने उसे गोद मे ले लिया और बोला—

'प्यारी ताहिरा!'

नाजिम ने अपने होठ ताहिरा के पुष्प की पखुडी सरीखे होठो पर रख दिए और उन पर प्यार की मुहर लगा दी। ताहिरा उससे लिपटी हुई थी और उसके सुगन्धित केश नाजिम के कधों पर बिखर रहे थे। नाजिम ने उन केशो को चूमते हुए कहा—

नीन्द उसकी है दिमाग उसका है राते उसकी हैं।
तेरी जुल्फें जिसके बाजू पर परेशा हो गई॥

ताहिरा ने प्यार से उसके गालो पर हाथ फेरते हुए कहा—

'यह तो आप का हुस्ने नजर है वर्ना मै इस काबिल कहां? यह मेरी खुश किस्मती है कि मेरी तमन्नाओं की दुनिया आप के दम से आज आबाद है। खुदा करे हमारी यह मुहब्बत सफल हो। और मै आपकी अदना सी कनीज बन कर रहूं।'

नाजिम ने उसके गदराए हुए शरीर को अपनी दोनों भुजाओं में जकडते हुए कहा—

'ताहिरा! मै तुम्हारा पुजारी हू। मेरे अधेरे दिल मे तुमने प्रेम का चिराग रौशन कर के उसे चमका दिया है। मै यह चाहता हू कि

हम एक पल के लिए भी एक दूसरे से अलग न हों। मगर अभी कड़े इम्तिहान का दौर आने वाला है। अगर हम उसमे पूरे उतरे तो फिर दुनिया की कोई ताकत हमे अलग न कर सकेगी।'

ताहिरा ने उसके हाथ को अपने आरक्त गालो पर मलते हुए कहा 'खुदा ने चाहा तो ऐसा ही होगा। 'इस डी मोना' और 'अथैलो' की मुहब्बत की तरह हमारी मुहब्बत भी हमेशा जिन्दा रहेगी।'

नाजिम कुछ घबरा सा गया और बोला—

'यह क्या कहा ताहिरा! तुम ने? खुदा न करे हमारे प्रेम का अन्त भी वही हो जो 'डस डी मोना' और 'अथैलो' के प्यार का हुआ। तुम तो अपने आप को 'डस डी मोना' करार देकर अपना प्यार जतला रही हो मगर मै 'अथैलो' की तरह कातिल बनना नही चाहता।'

ताहिरा के नेत्रो मे आसू उमड़ आए और बोली—

'अगर मुझे 'डस डी मोना' की तरह अपनी जान आप की मुहब्बत की भेट करनी पडी तो अपने आप को बेहद खुश किस्मत समझूगी।'

नाजिम घबरा कर उठ खडा हुआ और बोला—

'ताहिरा! यह तुम भावना की रौ मे बहे जा रही हो? खुदा के लिए ऐसी बाते न करो। ऐसी बाते सुन कर मुझे डर सालगने लगता है।'

ताहिरा के नेत्रो से फिर आसुओ का फव्वारा सा उबल पडा। उस ने उसे कुर्सी पर बिठाया और फिर उसकी गोद मे बैठती हुई बोली—

'प्यारे नाजिम! न जाने यह विचित्र सी खाहिश क्यो मेरे दिल मे करवटे ले रही है? मैंने यह बात आपको परेशान करने के लिए नही की। आप को परेशान देखकर मै बहुत ज्यादा परेशान हो जाती हू। खैर, छोडिए इस कहानी को। मै अब इस की चर्चा आप से नही करूगी।'

अभी ये दोनो प्रेम और प्यार की बाते कर ही रहे थे कि कमरे के बाहर पाव की आहट सुनाई दी। ताहिरा शीघ्रता से उठकर अपनी

कुर्सी पर जा बैठी। उसने अपने बिखरे हुए केश सभाल कर पीठ पर डाल लिए और अपने दुपट्टे को ठीक ठाक कर लिया। इतने मे प्रवीन कमरे मे प्रविष्ट हुई। उसके पीछे नौकर चाय की ट्रे उठाए ला रहा था। नौकर ने चाय की ट्रे एक तिपाई पर रख दी और चला गया।

प्रवीन ने नाजिम की ओर देखा तो उसके चहरे पर बेचैनी का कोई चिह्न शेष न था। उसका चहरा विकसित था। यह देखकर प्रवीन ने प्रसन्नता के स्वर मे कहा—

'मालूम होता है अब आप की तबीयत सभल गई है ?'

नाजिम ने कहा—

'हाँ, प्रवीन ! अब मै बिल्कुल ठीक हू।'

प्रवीन ने मुस्कराते हुए कहा—

'मालूम होता है ताहिरा ने आप पर कोई ऐसा मत्र पढ कर फूका है कि आप की तमाम परेशानी काफूर हो गई है। भाई जान ! यह बडी बातूनी और हसोड लडकी है। दुखी से दुखी इनसान को हसा देना इसके बाए हाथ का कर्तब है। अच्छा हुआ यह हमारे साथ आ गई।'

नाजिम ने हसते हुए कहा—

'हा, यह तुमने वाकई ठीक कहा। ये तो बडी हसोड है। इनकी यह खूबी तो मुझसे छुपी ही रही है। प्रवीन ! तुम्हे मै क्या बताऊ ? इन्होने ऐसे लतीफे सुनाए कि तमाम परेशानी हवा हो गई। लेकिन तुम यह देख कर हैरान होगी कि इनकी अपनी परेशानी भी तो खत्म हो गई ? सच्ची बात है इनकी परेशानी को दूर करने मे मेरा कोई हाथ नही। शैक्स्पीयर की ट्रेजेडियो मे डूबा रहने वाला प्रोफेसर भला हसना हसाना क्या जाने ?

प्रवीन ने प्रसन्न होते हुए कहा—

भाई जान ! यह तो कुदरती बात है कि जब कोई आदमी किसी दूसरे को खुश करना या बहलाना चाहे तो पहले उसे खुद अपने आप

पर खुशी लानी पड़ती है। आखिर उसकी यही नकली खुशी असली खुशी मे बदल जाती है। और वह दूसरों की परेशानियो को खत्म करने की धुन मे अपनी परेशानियो को भी भूल जाता है। यही वजह है कि अब ताहिरा भी बिल्कुल खुश नजर आती है। देखो न, इस का चहरा खुशी से कितना चमक रहा है ?'

नाजिम ने अट्टहास करते हुए कहा—

'यह तुमने सही कहा है। ताहिरा असल में बडी खुश २ नजर आती है। खैर, इन्हे मुझे खुश करने का कुछ इनाम भी तो मिलना चाहिए था। जो शख्स दूसरो को खुश करता है खुदा उसे खुश करता है।'

दोनो बहिन भाई हास परिहास की बाते कर रहे थे। ताहिरा उनकी बाते सुन २ कर मुस्करा रही थी और चाय बना रही थी। उस ने चाय की दो प्यालिया तैयार करके दोनों की ओर सरका दी। प्रवीन ने चाय की प्याली उठाते हुए कहा—

'ताहिरा ! तुम भी तो पियो न ?

नाजिम ने हसते हुए कहा—

'ये तो दूसरो को पिला कर खुश होती है।'

प्रवीन ने बच्चो के समान बिगड़ते हुए कहा—

'तो क्या आप मेरी सहेली को चाय पीने से रोक रहे है ?'

नाजिम मुस्कराया और बोला—

'हर्गिज नही। मैंने तो एक बात कही थी। मतलब यह था कि ताहिरा दूसरों को खुश करके खुश होती है। और इसका सबूत तुमको मिल ही चुका है। चाय का तो यो ही चर्चा आ गया था। मै भला इन्हे चाय पीने से कैसे रोक सकता हू ? लो मै खुद इनके लिए चाय बनाए देता हू।'

यह कहते हुए नाजिम ताहिरा के लिए चाय बनाने लगा। और प्याली तैयार करके बोला—

'अब कहो तो तो मैं इन्हे पिला भी अपने हाथ से दू । कम से कम इससे तुम्हारा यह शक तो दूर हो जाएगा कि मैं इन्हे चाय पीने से रोक रहा था ।'

यह कहते हुए नाजिम ने चाय की प्याली ताहिरा के होंठो से लगा दी । ताहिरा कुछ झेप सी गई । मगर प्रवीन ने कहा—

'ताहिरा ! तुम पिओ । भाई जान को इतनी तो सज मिलनी ही चाहिए । या तो ये अपने अल्फाज वापस ले या अपने हाथ से तुम्हे चाय पिलाए ।'

नाजिम ने हसते हुए कहा—

'अल्फाज तो मैं वापस लेने को तैयार नही । हा, चाय अपने हाथ से पिलाए देता हू ।'

ताहिरा ने नाजिम के हाथ से चाय पीनी आरम्भ कर दी और तीव्र दृष्टि से प्रवीन की ओर भी देखती रही । जब उनकी दृष्टि दूसरी ओर हुई तो उसने शीघ्रता से नाजिम का हाथ चूम लिया और फिर चाय पीने लगी ।

जब सब चाय पी चुके तो ताहिरा ने कहा—

'अब तुम जरा जाकर मेरे लिए कार का प्रबन्ध करो । अब मुझे घर जाना चाहिए । घर के लोग परेशान हो रहे होगे ।'

'लो अभी प्रबन्ध करवाती हू ।'

प्रवीन यह कहती हुई कमरे से निकल गई । उसके जाने के पश्चात् नाजिम ने ताहिरा को फिर अपनी गोद मे घसीट लिया और उसके पतले २ गुलाबी होठो पर अपने होठ रख दिए । ताहिरा ने भी उसके गले मे बाहे डाल दी और उसे खूब भीच २ कर प्यार किया । इतने में कार कमरे के सामने आ कर खड़ी हो गई । ताहिरा नाजिम से दूर खड़ी हो गई । प्रवीन ने द्वार पर आकर ताहिरा से कहा—

'आओ, कार तैयार है ।'

ताहिरा ने नाजिम को प्यार भरी दृष्टि से देखा और 'खुदा हाफिज'

कह कर कमरे से निकल गई। ताहिरा के जाने के पश्चात् प्रवीन कमरे मे आई और बोली—

'भाई जान ! यह लडकी बडी खुश जौक है। बहुत बार ऐसी २ बाते करती है कि हस २ कर पेट मे बल पड जाते है। मेरा ख्याल है मै तीन चार दिन तक हर रोज इसे साथ ही ले आया करू। आप की दिल लगी का अच्छा खासा सामान हो जाया करेगा।'

यह सुनकर नाजिम मन ही मन बहुत प्रसन्न हुआ और बोला—

'हाँ, प्रवीन ! यह तो तुमने मेरे दिल की बात कही है। तुम कालेज से आती हुई इन्हे साथ ले आया करो।'

'बहुत अच्छा भाईजान ! कल से मै ऐसा ही करूगी। और सच्ची बात है ताहिरा आपकी इज्जत भी बहुत ज्यादा करती है। कल देखा था आपने, आपको खैरियत पूछने के लिए आ गई और आज भी उसने आने से इनकार नही किया। एक ही बार के कहने से तागे मे बैठ गई।

प्रवीन यह कहती हुई कमरे से निकल गई।

## ४

**

नाजिम तीन चार दिन तक कालेज न गया। वैसे वह अब ठीक ठाक था किन्तु केवल इस विचार से उसने कालेज की ओर मुह नहीं किया कि घर पर ही ताहिरा से एकान्त मे भेट का अवसर प्राप्त होता रहेगा। प्रवीन तो यह कह ही चुकी थी कि वह प्रतिदिन ताहिरा को अपने साथ ले कर आया करेगी और उस ने ऐसा ही किया। वह प्रतिदिन जब कालेज से अवकाश प्राप्त करती तो ताहिरा को साथ लेकर घर पहुच जाती। इसके पश्चात् वह तो घर के काम काज मे लग जाती और नाजिम तथा ताहिरा बैठे प्यार की बाते करते रहते। तीन चार दिन के भीतर ही भीतर वे एक दूसरे से इस प्रकार घुल मिल गए कि इन भेटो के अतिरिक्त इन्हे और जो समय काटना पड़ता वह उनके लिए अति कष्टकर सिद्ध होता। इन मे यह तै पाया कि वे समाज के बन्धनो का ध्यान रखते हुए परस्पर विवाह के बन्धन मे बध जाएगे ताकि उनके मेल मिलाप पर कोई अगुली उठाने वाला न रहे।

तीन चार दिन पश्चात् नाजिम ने कालेज जाना आरम्भ कर दिया और अथैलो के चरित्र चित्रण पर लैक्चर आरम्भ कर दिए। भाषणों की यह कडी कोई दस बारह दिन तक चलती रही और इस काल में उस ने अपने नपे तुले और विद्वत्ता पूर्ण भाषणो द्वारा उन पात्रो के चरित्रों पर खूब प्रकाश डाला। लड़को को अब मालूम हो गया कि उसका चित्त

ठीक हो गया है किन्तु किसी को यह पता न चल सका कि डाक्टर नाजिम ने अथैलो के एक पात्र पर प्रकाश डालते हुए जो ठोकरे खाई थीं उसका वास्तविक कारण क्या था। और अब उसके चित्त को ठिकाने लाने वाली वस्तु क्या है। न किसी ने यह जानने का यत्न ही किया। जब वह कालेज के काम से अवकाश पाता तो प्रवीन और ताहिरा के साथ घर आ जाता। तीन दिन तक तो उसने ताहिरा के चुटकलों से अपना मन बहलाने के लिए उसे अपने घर पर बुलाया था। अब जब कि उसके चुटकलों और मन बहलावो से नाजिम की बेचैनी दूर हो चुकी थी और वे चुटकले उसके लिए अचूक औषध सिद्ध हो चुके थे और वह बिल्कुल स्वस्थ था किन्तु उसके उपरान्त भी ताहिरा का आना जाना बना रहा। प्रवीन ने समझा कि बीते दिनों के बढ़े हुए मेल मिलाप ने दोनों सहेलियो के सम्बन्धो को और दृढ़ कर दिया है और ताहिरा के लगातार आने का एक कारण उत्पन्न कर दिया है किन्तु उसे यह प्रतीत न हो सका कि ताहिरा का प्रतिदिन उसके घर आना इन दिनो के परस्पर बढ़े हुए सम्बन्धो का परिणाम नही अपितु उस सम्बन्ध का परिणाम है जो ताहिरा और उसके भाई मे उत्पन्न हो चुका है।

प्रोफेसर नाजिम के पिता मियां मैराज-उद्दीन ने उसका रिश्ता छुटपन मे ही अपने एक मित्र खान बहादुर ख्वाजा अजीज उद्दीन की बेटी इशरत मे कर रखा था। ख्वाजा अजीज-उद्दीन का वश भी कुछ पुराने विचारो का था। और स्त्रियो के पर्दे आदि पर दृढता से विश्वास रखता था। क्योकि मिया मैराज-उद्दीन भी इन्ही विचारों के व्यक्ति थे इस लिए उन्होने किसी स्वतन्त्र और उन्नतिशील विचारो के परिवार मे नाजिम का रिश्ता पसन्द न किया और ख्वाजा अजीजउद्दीन की बेटी इशरत से रिश्ता तय कर दिया।

नाजिम को यह रिश्ता पसन्द नही था। वह पौर्वात्य सभ्यता का समर्थक तो था किन्तु पाश्चात्य सभ्यता की उन बातों को भी पसन्द

करता था जो उसके निकट अच्छी थी। इस रिश्ते के बारे में उसकी अरुचि इस कारण से नही थी अपितु वह समझता था कि देखे भाले बिना किसी लड़की को जीवन साथी बनाना एक गलत बात है। वह भारतीय समाज की इस रस्म के अति विरुद्ध था कि लडके अथवा लडकी का रिश्ता केवल मां बाप की सम्मति पर आधारित रहे और सन्तान को उस पर आपत्ति करने का कोई अधिकार नही। उसने प्रवीन के मुह से यह सुन रखा था कि इशरत अत्यन्त सुन्दरी और अच्छे स्वभाव की लडकी है किन्तु वह यह भी जानता था कि कभी २ इन दोनो विशेषताओं के होते हुए भी पति पत्नी मे विरोध हो जाता है जो अधिकतर मिजाजों के अन्तर का परिणाम होता है। अतः इस बात को वह उचित न समझता था कि केवल इशरत के सौन्दर्य और स्वभाव की छानबीन करने के उपरान्त ही वह इस सम्बन्ध की स्वीकृत दे दे। वह हृदय से तो इस सम्बन्ध को नापसन्द करता था और देखे भाले बिना किसी लड़की से विवाह करने को तैयार न था किन्तु अपने पिता से उसने इसका चर्चा न किया था। करता भी कैसे ? उसके पिता इसे उचित ही न समझते थे कि उनका लडका अपने रिश्ते के बारे से कोई सम्मत्ति प्रकट करे। वह तो अपने उस प्राचीन विश्वास के पावन्द थे कि बच्चों के रिश्ते निश्चित करना वृद्धो का काम है। बच्चो की पसन्द अथवा ना पसन्द का उससे कोई सम्बन्ध नही।

जब नाजिम और ताहिरा मे सम्बन्ध पैदा हुए और उन्होने एक दूसरे को विवाह का वचन दे दिया तो नाजिम ने इशरत से विवाह का विचार बिल्कुल त्याग दिया। पहले तो उसका विचार धा कि यदि उसे इशरत के स्वभाव को जाचने और उसकी तबीयत के झुकाव को जानने का अवसर मिल जाए तो वह उससे विवाह करने को तैयार हो जाएगा किन्तु जब इस प्रकार का कोई अवसर प्राप्त होने से पूर्व ही ताहिरा से उसे प्रेम हो गया तो उसने इशरत का विचार हृदय से निकाल दिया।

नाजिम का विचार अब यह था कि इस रिश्ते के बारे मे पिता

को सहमत कर ले किन्तु यह चर्चा करने की उसमे हिम्मत न थी। वह जानता था कि यदि हिम्मत करके उसने यह चर्चा छेड भी दी तो उसके पिता उसे असभ्य पद प्रदान करेगे और उन्हे अति क्लेश होगा। उसने इस बारे मे पर्याप्त सोच विचार किया किन्तु उसे सुलझाने का उसे कोई मार्ग सुझाई न दिया। यदि वह पिता की सम्मति लिए विना ताहिरा के सम्बन्ध के लिए सीधे यत्न करता तो वह कपटी और आवारा ठहराया जाता और यदि पिता की इच्छा का सम्मान कर इशरत से विवाह करना स्वीकार कर लेता तो उन वचनो को भुलाने का अपराधी बनता जो उसने ताहिरा को दिए थे।

पर्याप्त सोच विचार के पश्चात् उसने निर्णय किया कि प्रवीन को अपने विश्वास मे ले और उसके द्वारा पिता को सहमत करने का यत्न करे। प्रवीन का ऐसे कार्यों मे हाथ भी था। उसके पिता नाजिम के सम्बन्ध के बारे मे उसी से विचार विमर्श करते थे। प्रवीन को नाजिम से बहुत अधिक प्यार था और उसे यह पूर्ण विश्वास था कि वह इस की इस बारे मे पूरी २ सहायता करेगी। और रिश्ते के बारे मे पिता की सम्मति को बदलने का यत्न करेगी।

नाजिम अपनी छोटी बहिन को वास्तविकता से परिचित करते हुए कुछ झेपता भी था किन्तु जब उसे पिता को प्रभावित करने का और कोई उपाय न सूझा तो अन्त मे उसने प्रवीन से सब कुछ कह देने का निर्णय कर लिया।

नाजिम कालेज से वापिस आने के पश्चात् अपने कमरे मे बैठा इसी विषय पर सोच विचार कर रहा था कि प्रवीन कमरे मे आई और बोली—

'भाई जान ! आजकल आप अकेले बैठे क्या सोचते रहते है ? मै कुछ दिनो से यह देख रही हू कि आप ज्यादा फिकरमद नजर आते है और किसी गहरी सोच मे डूबे रहते है।'

नाजिम ने मुस्कराते हुए कहा—

'हां, प्रवीन ! एक ऐसा ही मामला आ पडा और मै चाहता हू कि तुम्हे भी सारा हाल बता दू । हो सकता है कि तुम्हारी मदद ही से मेरी मुश्किल आसान हो सके । अगर इस मसले का कोई हल मेरे मतलब का न निकल सका तो मेरी परेशानियाँ और बढ जाएगी और उसका असर मेरी सेहत पर यकीनन बुरा पडेगा ।'

प्रवीन नाजिम के निकट ही एक कुर्सी पर बैठ गई और घबराई हुई सी बोली—

'तो कहिए वह क्या बात है जिसका आपकी सेहत पर बुरा असर पड सकता है । अगर मेरे बस मे हुआ तो आपकी पूरी मदद करूगी और आपको उस उलझन से निकालने के लिये अपनी जान तक दे दूंगी ।'

नाजिम ने मुस्कराते हुए कहा—

'नही, कोई ऐसी बात तो नही जिसके लिए तुम्हे इस कदर कुर्बानी करनी पडे ।'

प्रवीन ने कुछ निश्चिन्त होते हुए कहा—

'मेरा कहने का मतलब यह था कि मै आपके लिये क्या कुछ कर सकती हू । खैर आप बताइये क्या बात है ?'

नाजिम कुछ देर मौन रहने के पश्चात् बोला—

'प्रवीन ! आज मै तुम्हे एक ऐसा भेद बताना चाहता हू जो मै किसी पर प्रकट करने के लिए तैयार नही था । तुम्हे भी इसलिये बता रहा हू कि शायद तुम मेरे किसी काम आ सको और मुझे तबाह होने से बचा सको ।'

प्रवीन बेचैन सी हो गई और बोली—

'तो बताइये न, देर क्यो कर रहे है आप । आखिर वह क्या भेद है ?'

नाजिम कुर्सी पर सभलकर बैठ गया और कहने लगा—

'प्रवीन ! तुम जानती हो मै इशरत से शादी करना नही चाहता ।'

प्रवीन ने कहा—

'हा, यह तो मै जानती हू लेकिन इसमे भेद की कौनसी बात है ? यही तो आपकी शर्त है न कि आप इशरत को देख ले और यह मालूम

कर ले कि आप दोनों की तबीयतो मे कोई फर्क तो नही ? अगर ठीक हुआ तो शादी कर ले वर्ना नही ।'

नाजिम ने कहा—

'यही भेद तो मै तुम्हे बताना चाहता हू कि अब मै इस शर्त पर भी उससे शादी करना नही चाहता ।'

'क्यों ?'

'इसलिये कि अब मै एक और लडकी को पसन्द कर चुका हू । बल्कि यो कहना चाहिए कि मैने उसे शादी का वचन भी दे दिया है ।'

प्रवीन यह सुनकर चकित रह गई और बोली—

'वह कौनसी लडकी है ?'

'वह तुम्हारी सहेली ताहिरा है ।'

प्रवीन और अधिक चकित हुई और कुछ देर तक मौन रहने के बाद बोली—

'अब समझी । मै भी हैरान थी कि आप दोनों की एक साथ तबीयत क्यो खराब हो गई और आपसी मेल-मिलाप से एक साथ दोनो की परेशानी कैसे दूर हो गई । खैर मै यह न समझ सकी । लेकिन भाई जान ! क्या अब्बाजान इशरत का रिश्ता छोडने के लिये तैयार हो जाएगे ?'

'यही तो तुमसे मदद लेनी है । अगर अब्बाजान इसके लिए तैयार हो जाते तो इसमे मुश्किल ही कौनसी थी ?'

'लेकिन अब्बाजान अपनी कही हुई बात से मुकर कैसे जाएगे ? वे तो एकबार जो कह देते है वह पत्थर की लकीर होती है । और फिर आप यह भी जानते है कि वे इशरत के अब्बा के दोस्त है और उनके सलाह-मशविरे के बिना कोई काम नही करते । वे अपने दोस्त की लडकी का रिश्ता कैसे छोड देगे ?'

नाजिम ने चिन्तित स्वर मे कहा—

'प्रवीन ! अगर अब्बाजान अपने दोस्त की खुशी को मेरी और ताहिरा की जिन्दगी से ज्यादा कीमती समझते है तो फिर कोशिश करना बेकार

है । बहर हाल यह बात तै है कि या तो वे दोस्ती निभाए या दो इनसानों को मौत के मुह मे जाने से रोके ।'

यह सुनकर प्रवीन तडप उठी । उसके नेत्रो से अश्रु बहने लगे और बोली—

'भाई जान ! यह आप किस किस्म की बाते करते है ? खुदा आप को जिन्दा व सलामत रखे । अब्बाजान को वाकई आपकी जिन्दगी प्यारी है । अगर उन्हे यह विश्वास हो जाए कि इशरत से शादी का आपकी सेहत पर बुरा असर पडेगा तो वे कभी ऐसा न करेगे । आपकी मर्जी के खिलाफ़ शादी सिर्फ़ आप दोनो की जानो के लिये ही खतरा नही बल्कि मै भी जिन्दा न रह सकूगी ।'

नाजिम ने कहा—

'तो फिर इसका कोई रास्ता निकालो ।'

'हा, हा, मै अब्बाजान को समझाने की कोशिश करूगी ।'

'लेकिन इस मामले मे जल्दी करने की जरूरत है क्योकि मुझे मालूम हुआ है कि इशरत के घर के लोग शादी पर जोर दे रहे है और कह रहे है कि अगले महीने शादी हो जानी चाहिए ।

'हा, हा, यह तो अब्बाजान ने भी मुझसे कहा था । और कहा था कि मै अगले महीने नाजिम की शादी कर देना चाहता हू ।'

'तभी तो मैने कहा कि इस काम मे जल्दी करने की जरूरत है । तुम जानती हो अब्बा बहुत ज्यादा पुराने ख्याल के आदमी है । अगर मैने इस बारे मे उनसे कुछ कहा तो वे बुरा मान जाएगे और मुझे बदतमीज करार देगे । मै यह भी जानता हू कि मेरी शादी के बारे मे वे तुमसे अक्सर मशवरा करते है इसलिये अगर इस शादी का विरोध तुम्हारी ही तरफ से शुरु हो तो ठीक होगा । हा, तुम यह कह सकती हो कि नाजिम इस शादी के हक मे नही । अगर उसकी मर्जी के बिना शादी हो गई तो उसका असर उसकी सेहत पर बहुत बुरा पड़ेगा ।'

प्रवीन ने उसे विश्वास दिलाने के स्वर मे कहा—

'हा, यह मै उनसे सब कुछ कह दूगी और उम्मीद है कि वे मान जाएगे। मै आज रात ही उनसे चर्चा करूगी। आप फिक्र न कीजिये।'

'बहुत अच्छा। अब यह काम तुम्हारे ही ऊपर है।'

प्रवीन ने रुकते हुए कहा—

'हा, हा, खुदा ने चाहा तो इस काम को सिरे चढाकर ही दम लूगी।'

रात को प्रवीन के पिता ने स्वय यह चर्चा छेड दी और बोले—

'बेटी! वे ख्वाजा अजीज-उद्दीन आज मिल गए थे। उन्होने फिर शादी पर जोर देना शुरु कर दिया और कहा कि अगले महीने की कोई तारीख शादी के लिये तै कर लीजिये। मैने उनसे इस बारे मे कोई आखिरी वायदा तो नही किया मगर मेरा ख्याल है कि अगले महीने शादी कर ही देनी चाहिये। नाजिम की उम्र अब तीस बरस के लगभग हो चुकी है। अब इस बारे मे और ज्यादा देर करना ठीक नही।'

प्रवीन ने बच्चो के से स्वर मे कहा—

'लेकिन आप भाईजान से भी तो पूछ लीजिये।'

मियाँ मैराज उद्दीन ने कहा—

'बेटी! शरीफ घरानो मे बच्चो से इस बारे मे सलाह लेना ऐब समझा जाता है। बडे-बूढो का यह काम है कि वे अपनी औलाद के रिश्तों और नातो मे पूरी २ एहतियात बर्ते। और औलाद का यह फर्ज है कि अपने बडो के हुक्म पर चले। मैने नाजिम का रिश्ता खूब सोच-समझ कर किया है। इशरत एक शरीफ घराने की नेक लडकी है और पर्दे मे रहती है। उसके बारे मे पूरे तौर से मुझे इतमीनान है।'

प्रवीन ने कहा—

'अब्बाजान! आपको तो इतमीनान है लेकिन भाई जान को इतमीनान नही।'

बूढे का मुखमण्डल क्रोध के मारे लाल हो गया और बोला—

'उसे क्यो इतमीनान नही? क्या वह मुझे नासमझ और बेवकूफ समझता है? हमने तो अपने बुजुर्गो के कामो मे कभी कोई मीन-मेख

नहीं निकाली थी ।'

प्रवीन ने धैर्य के स्वर में कहा—

'अब्बाजान ! आपका जमाना और था और आज का जमाना और है ।'

तो क्या इसका मतलब यह है कि आजकल के छोकरो ने बडे बूढो की इज्जत करना भी छोड दिया है ?'

'अब्बाजान ! यह बात नही । आजकल के नौजवान अपने बुजुर्गो की वैसी ही इज्जत करते है' जैसी पहले जमाने मे होती थी । लेकिन सीधी सी बात यह है कि जिससे इशरत की शादी होनी है उससे क्यो न पूछा जाए ? और यों पूछने से बुजुर्गो की इज्जत मे क्यो फर्क आ जाता है ? क्या यह बात शरीयत के खिलाफ नही है ?'

मिया मैराज-उद्दीन और बिगडे और बोले—

'तो क्या मै अपने एक मित्र को नाराज कर लू ?'

'लेकिन यह भी तो ठीक नही कि आप अपने एक दोस्त को खुश करने की धुन मे अपने लडके को तबाह कर दे ?'

'शादी मे तबाही कहा से आ गई ?'

'अब्बा जान ! मै आप को विश्वास दिलाती हू कि भाईजान इस शादी के सख्त खिलाफ है । और अगर उनकी मर्जी के खिलाफ यह शादी हो गई तो उनकी सेहत पर बहुत बुरा असर पडेगा ।'

मिया मैराज-उद्दीन ने जोश मे आ कर कहा—

'मै जो बात तै कर चुका हू वह हो कर रहेगी । मुझे नाजिम की सेहत की कोई फिक्र नही । मै नौ जवान बेटे की मौत को सहन कर सकता हू मगर वचन से टलना नही चाहता ।'

प्रवीन भी यह सुनकर बिगडी और बोली—

'अब्बाजान ! खुदा न करे अगर भाई जान को कोई हर्ज-मर्ज हो गया तो आप मुझे भी जिन्दा नही देखेगे और हम दोनो के साथ वह लड़की भी नही बचेगी जिस से भाई जान शादी करना चाहते है ।'

मियाँ मैराज-उद्दीन को और क्रोध हो आया और कहने लगा—

'तो यो कहो न कि साहब जादे ने इश्क बाजी के मैदान मे कदम रख दिया है और इस मतलब के लिए एक लड़की को भी चुन लिया है ? गोया वह इस तरह से अपनी मनमानी करके मुझे झूठा साबित करना चाहता है। लेकिन मुझे इस बात की कोई परवा नही। मै तो इसकी शादी वही करूगा जहा फैसला कर चुका हू। मै लोगो से कभी यह सुनना नही चाहता कि तुम्हारे बेटे ने अपनी मर्जी से शादी कर ली है और लाहौर के एक बहुत बडे खानदान की इज्जत कर धब्बा लगाया है।'

प्रवीन ने मिन्नत करते हुए कहा—

'लेकिन अब्बाजान ! यह तो सोचिए कि यह शादी शादी नही बर्बादी का कारण साबित होगी। मेरी जान भी खतरे मे होगी और भाई जान की भी।

मियाँ मैराज-उद्दीन ने अत्यन्त क्रोध से कहा—

'अगर तुम दोनो बहिन भाई मर भी जाओ तो मुझे अफसोस नही होगा। मै ऐसी औलाद से भर पाया। हा, यह अफसोस जरूर होगा कि बीवी के मरने के बाद जिन बच्चो को मैने इतने लाड प्यार से पाला था उन्होने मुझे ज़लील किया और मेरी सफेद दाढी की तौहीन की।'

प्रवीन ने खुशामद के स्वर मे कहा—

'अब्बा जान ! यह आप क्या कह रहे है ? भला यह हो सकता है कि हम आपको बेइज्जत होते देखे !'

'तो फिर मेरे फैसले को टालने का मतलब ?'

'अब्बा जान ! यह तो एक अलग चीज़ है। शादी होना लड़के लड़की की मर्जी पर है। उससे मा-बाप की तौहीन कैसे हो जाती है ?'

'बेटी ! शरीफ लोग इसी को तौहीन समझते है। शादी ब्याह के बारे मे बेटे-बेटी का दखल देना शरीफ घरानो मे बुरा माना जाता है। मै यह जानता हू कि कुछ पढे लिखे घराने ऐसे भी है जो इस बारे मे बेटी या बेटे की राय लेते है मगर ऐसे घराने मेरे नजदीक इज्जत के काबिल नही।'

प्रवीन ने बाप को सीधे मार्ग पर लाने के लिए एड़ी चोटी का जोर लगा दिया किन्तु उसकी एक न चली। उसने उसे प्रमाणों से सिद्ध करना चाहा किन्तु मियाँ मैराज-उद्दीन के दर्शन शास्त्र मे उन प्रमाणों का कोई स्थान न था। प्रवीन ने शरीयत की दुहाई दी। मिया मैराज-उद्दीन ने अपने घराने के प्राचीन रीति-रिवाज के सामने उसे बेकार सिद्ध कर दिया। उसने नाजिम के काल्पनिक भावी विनाश की आड़ ली। बाप ने कह दया मुझे ऐसी औलाद की जरूरत ही नहीं। प्रवीन ने अपनी ओर से पूरा प्रयत्न किया कि उसका पिता अपने निर्णय को त्याग दे किन्तु पिता ने एक न मानी और अपनी बात पर डटा रहा।

## ५

**

दूसरे दिन प्रातः उठ कर प्रवीन नाजिम के कमरे में गई। वह यही सुनने की प्रतीक्षा में था कि रात पिता पुत्री की बात-चीत का क्या परिणाम रहा। जब प्रवीन कमरे में घुसी तो उसने उत्सुकता से कहा—

'हां, तो प्रवीन ! कुछ सफलता हुई तुम्हें ?'

प्रवीन ने कुर्सी पर बैठते हुए निराश स्वर मे कहा—

'भाई जान ! मै अपने मकसद में बिल्कुल ना काम रही हू। मैने अब्बा जान को समझाने की बड़ी कोशिश की लेकिन उन्होंने मेरी एक न मानी और कहा कि नाजिम के रिश्ते के बारे मे जो फैसला मै कर चुका हूं वही होकर रहेगा। मै इस रिश्ते को तोड़ कर झूठा कहलाना नहीं चाहता।'

'तो फिर क्या किया जाए प्रवीन !'

रात की बात-चीत से मै इस नतीजे पर पहुची हूं कि अब्बा जान को मनाना मेरे बस की बात नही। अब मेरी राय तो यही है कि अब्बा जान की मर्जी हो जाने दीजिये। साफ है कि इस शादी का अन्त अच्छा नहीं होगा और उनकी जिद् से आखिर कार तलाक हो कर रहेगा।'

'लेकिन मै इसके लिए तैयार नही हू। मै शादी से पहले ही जहर खा लूगा। ऐसी शादी मे मौत भली।'

प्रवीन रोने लगी और बोली—

'अपने लिए नहीं तो कम से कम मेरे लिये यह शादी कर लीजिये। अगर आपने इस शादी से बचने के लिए कोई ऐसी-वैसी हरकत की तो फिर मैं भी जिन्दा न रह सकूगी और ताहिरा का जो हाल होगा उसका अन्दाजा खुद कर लीजिये।'

'तो क्या वह इस शादी के बाद जिन्दा रह सकेगी ?'

'मैं उसे खुश कर लूगी। यह काम आप मुझ पर छोडिये।'

'तो क्या उस से यह कहोगी कि नाजिम ने शादी करके झूठ बोला है ? तुम इसका ख्याल छोड दो। मैं यह बात भी बर्दाश्त नही कर सकता।'

'नही, मैं उसे कभी यह न कहूगी। मैं आपकी बेबसी उसे बता दूगी और उम्मीद है कि वह आप से नाराज न होगी।'

'तो क्या इसका मतलब यह है कि मैं ताहिरा का ख्याल छोड दू ?'

'नही, मेरा यह मतलब नही। मैंने तो यह पहले ही कहा है कि यह शादी सिर्फ कुछ दिनो के लिए होगी। उसके बाद इशरत से आप की निभ न सकेगी। जब अब्बा जान को इस झगडे का पता चलेगा तो वे मजबूर होकर अपने आप आपको तलाक देने के लिए कह देगे। फिर आप होगे और ताहिरा। मेरे ख्याल मे न आपको परेशान होने की जरूरत है और न ताहिरा को। ताहिरा को तो खैर मैं अच्छी तरह समझा दूगी और वह आप से कोई शिकायत नही करेगी। हां, आप प्रण कीजिये कि आप मेरी राय पर चलेगे। और अपनी जान के साथ अपनी छोटी बहिन की जान भी बचाएगे।'

नाजिम कुछ देर तक सोचता रहा। फिर बोला--

'यह बात जरा सोचने की है। मैं सोच कर बताऊगा।'

प्रवीन ने फिर रोना आरम्भ कर दिया और बोली --

'मेरे अच्छे भाई जान ! यह कोई ऐसी बात नही' जिस पर ज्यादा विचार की जरूरत हो। आप अभी मुझे वचन दीजिये कि आप यह शादी करने पर राजी है। अगर आपने देर की तो फिर हो सकता है कि

अपनी जिन्दगी को खत्म करने से पहिले मुझे मौत की नीद सोया हुआ देखे। मै वह दिन देखने के लिये जिन्दा रहना नही चाहती जब आप इस शादी से बचने के लिये कोई भयानक कदम उठाए।'

यह कहते हुए प्रवीन ने नाजिम के गले मे बाहे डाल दी और रोती हुई बोली—

'भाई जान ! वचन दीजिये। मै आपको ज्यादा वक्त देना नही चाहती क्योंकि हो सकता है आपका फैसला सुनने के लिए जिदा न रह सकू।'

नाजिम घबरा गया और उसे विश्वास हो गया कि यदि उसने इस बारे मे अधिक देर की अथवा आत्म हत्या की तो प्रवीन भी जीवित न बचेगी। वह बहिन को बहुत अधिक चाहता था और उसके लिए बडे से बडा बलिदान कर सकता था। वह स्वय मरने से नही डरता था किन्तु यह भी नही चाहता था कि प्रवीन कोई ऐसा कार्य करे। उसने इस विषय पर विचार विमर्श के उपरान्त कहा—

'अच्छा प्रवीन ! मै शादी कर लूगा।'

प्रवीन के रोते हुए नेत्र प्रसन्नता से चमक उठे। वह बोली—

'क्या भाई जान ! आप बचन दे रहे है ?'

'हा, वचन दे रहा हू।'

'आप अपने बचन पर डटे रहेगे ?'

'खुदा ने चाहा तो तुम्हारे लिये सब कुछ करने को तैयार हू।'

'अब आप फिक्र न कीजिये। ताहिरा को मै आप खुश कर लूगी।'

'हा, यह तुम्हारी मर्जी पर है अगर तुम मुझे दुखी देखना नही चाहती तो तुम्हे ऐसा करना ही होगा।'

यह कहकर नाजिम कमरे से निकल गया। और सामने घास पर टहलने लगा। वह किसी गहन विचार में डूबा हुआ था। प्रवीन उसे टहलते देख रही थी और मन ही मन सोच रही थी कि क्या वह अपने वचन पर दृढ रहेगा ? वह यह भी जानती थी कि वह पढा लिखा आदमी

है। जब उसने एक बार वचन दे दिया तो उसे पूरा भी करेगा।

नाजिम ने टहलते २ सहसा प्रवीन को सम्बोधन कर कहा—

'प्रवीन ! आज मैं कालेज नही जाऊगा। तुम अकेली चली जाओ'

प्रवीन ने चिन्तित स्वर में कहा—

'क्यों भाई जान !'

'प्रवीन ! मेरी तबीयत कुछ खराब सी हो रही है और उसकी वजह तुम जानती हो।'

लेकिन अभी २ जो वचन दिया था आपने ? उसे भूल गए क्या ?'

'नही, हर्गिज नही। खुदा ने चाहा तो मैं अपना वचन पूरा करूगा लेकिन तबीयत पर जो बोझ सा पड़ा है उसे दूर करना तो मेरे बस की बात नही। आहिस्ता २ यह बोझ भी जाता रहेगा। तुम इतमीनान से कालेज जाओ। मुझे अपनी जिन्दगी का नही तो तुम्हारी जिन्दगी का ख्याल जरूर है।'

'तो फिर मैं भी नही जाती।'

'मेरा ख्याल है तुम्हारा जाना जरूरी है।'

'क्यो ?'

'इसलिये कि तुम ताहिरा से मिलकर उसे असल बात बता सकोगी। और उसे विश्वास दिला सकोगी। अगर तुम भी कालेज न गई तो वह अपने आप यहा चली आएगी और उसके सामने मुझे जो शर्मिन्दगी होगी उसका अन्दाजा तुम नही कर सकती। मैं अपने सामने उसे परेशान देखना नही चाहता और मुझे यह विश्वास है कि वह यह खबर सुनकर बहुत ज्यादा परेशान होगी। ठीक यही है कि मेरे सामने होने से पहले तुम उसके सामने मेरी सफाई रख दो।'

प्रवीन ने निश्चिन्त होते हुए कहा—

'बहुत अच्छा। अगर यही बात है तो मैं जाती हूं।'

यह कह कर प्रवीन ने कालेज जाने की तैयारी कर दी और कोई आध घण्टे के भीतर वस्त्र आदि बदल कर बाहर आ गई। और कार में

बैठकर चल दी।

जब वह कालेज पहुची तो ताहिरा एक स्थान पर घास पर बैठी थी और उसी की प्रतीक्षा कर रही थी। वह उसे देखते ही बोली—

'तो क्या प्रोफेसर साहब तुम्हारे साथ नही आए ? तबीयत तो ठीक है ?'

प्रवीन उसकी बेचैनी भांप गई। वह बोली—

'हा, तबीयत तो उनकी ठीक है वैसे ही कालेज नही आए।'

प्रवीन ताहिरा के सामने घास पर बैठ गई और अपने होठो पर बलात् मुस्कान बखेरती हुई बोली।

'और हा, वह बात तुमने आजतक मुझ से छुपाए ही रखी।'

ताहिरा घबरा गई और कहने लगी—

'कौन सी ?'

'भाई जान ने मुझे सब कुछ बता दिया।'

'अगर उन्होने बता दिया तो अच्छा किया। मैंने तुम्हे इसलिये नहीं बताया कि शायद वे तुम्हे यह बताना न चाहते हो। लेकिन यह चर्चा कैसे चली ?'

'इस चर्चा की वजह बताऊगी तो शायद तुम्हें दु ख होगा।'

यह सुनकर ताहिरा बहुत अधिक घबरा गई और बोली—

'तो क्या नाजिम ने मेरा विचार छोड दिया है ?'

'यह बात भी नही बल्कि मै तो यह कहूगी कि तुम्हारा प्यार उनकी रग २ मे कुछ इस तरह घर कर गया है कि वे तुम्हारा दिल दुखाने तक का ख्याल नही कर सकते।'

ताहिरा को कुछ धैर्य हुआ और बोली—

'तो फिर दु.ख क्यो होने लगा ?'

प्रवीन ने धैर्य के साथ कहा—

'बात असल मे यह है कि कुछ हालात ऐसे सामने आए है जिन से निबटना मेरे या भाई जान की ताकत के बाहर है। वे उन ही के कारण

बहुत परेशान है । उनका ख्याल था कि मैं इस बारे मे उनकी कुछ मदद कर सकती हू । चुनाँचे उन्होने अपने और तुम्हारे प्यार का तमाम किस्सा मुझे कह सुनाया और यहा तक कह दिया कि मै ताहिरा के बिना जिन्दा नही रह सकता ।'

यह सुनकर ताहिरा के नेत्र गीले हो गए और अपने रूमाल से आसू पोछती हुई बोली—

'हा तो वे हालात क्या है ?'

'हालात ये है कि अब्बा जानने छुटपन मे ही भाई जान का रिश्ता एक जगह कर दिया था और वह अब तक वैसे का वैसा है । भाई जान उस जगह शादी करना नही चाहते मगर हमारे अब्बा क्योकि पुराने विचार के बुजुर्ग है और इस मामले में बेटे या बेटी की राय लेने या उनकी रजामंदी का ध्यान रखने के हक मे नही । इसलिए वे अपनी इस हठ पर अड़े है कि जहा नाजिम का रिश्ता हो चुका है वहीं शादी होगी । इसके अलावा जिन साहब की लड़की है वे मेरे अब्बा के पुराने दोस्त है । इसलिए वे इस रिश्ते को तोड़कर उन्हे नाराज करना नही चाहते । मैं यह जानती हूं कि मेरे अब्बा जो एक बार कह देते है उससे कभी नहीं फिरते । लेकिन इस पर भी भाई जान के कहने पर मैंने उनसे बातचीत की और उन्हे राजी करने की कोशिश की । मगर वे न माने । मैंने यहां तक कह दिया कि अगर आपने भाई जान की मर्जी के खिलाफ शादी कर दी तो शायद वे अपनी जान दे दे । और उनके बाद मै भी जिन्दा न रह सकू । लेकिन उन्होने साफ कह दिया कि मै ऐसी औलाद के बिना ही अच्छा हू जो अपनी मर्जी को अपने मा बाप की मर्जी से ऊचा समझते है । मैंने हर तरह से उनकी मिन्नत की मगर वे इसी बात पर डटे रहे कि नाजिम की शादी होगी तो वही होगी जहां मै फैसला कर चुका हू । वर्ना नही होगी । ताहिरा ! भाई जान को यह सुनकर चोट पहुची है और इस वजह से वे कालेज न आ सके ।'

ताहिरा ने अपने आंसू रोकते हुए कहा—

'प्रवीन ! मैंने तो कभी उनसे यह नही कहा कि हमारे प्रेम का अन्त शादी ही है। बल्कि मैं तो यह समझती हू कि शादी प्यार के लिए जहर का काम करती है। प्रेम की बढोतरी मिलन मे नही बल्कि वियोग मे है। मै तो प्यार का मतलब यही समझती हू कि अपने प्रेमी के लिए तडप-तडप कर जान दे दू। हो सकता है कुछ लोग प्यार को फूलो की सेज समझते हों। मगर मैं तो उसे कॉटों की सेज समझती हूं और मेरी तसल्ली इसी मे हो सकती है कि कॉटो की इस सेज पर लोट-लोटकर अपने आप को लहू लुहान कर लू। मुझे प्यार की कडवाहट प्यारी है। उसके आनन्द से मेरा कोई सम्बन्ध नही। तुम्हे यह आलूम है एक दिन मैंने तुम्हे बताया था कि मैं 'डस डी मोना' की मौत मरना चाहती हू। इससे तुम्हे अन्दाजाकर लेना चाहिए कि प्यार का मतलब मै क्या समझती हू। सिर्फ फूल को चाहना काटो से बचना प्यार नही, दिल बहलाव है। और मै इस दिल बहलावे के हक में नही। अगर लोगों की उठती अगुलियो और तानो से बचने के लिए या हालात की वजह से नाजिम से मेरी शादी हो जाती तो मुझे कोई खुशी न होती बल्कि दु ख होता कि मेरे प्यार की मौत हो गई है। हा, यह विचार जरूर मेरे लिए तसल्ली का कारण होता कि मुझे पाकर नाजिम को खुशी हुई है। लेकिन अब जब कि हमारी शादी नही हो सकती तो मै बहुत खुश हू कि कुदरत ने हमारे प्यार को जिन्दा रखने का प्रबन्ध कर दिया है। मगर जब मै सोचती हू कि नाजिम को मेरे कारण परेशानी हुई है तो मेरी यह खुशी दु ख मे दबकर रह जाती है।'

प्रवीन ताहिरा की बात सुनकर चकित रह गई। उसका विचार था कि वह नाजिम के विवाह का समाचार सुनकर अत्यन्त दुःखी होगी। किन्तु इसके विरुद्ध उसने प्रसन्नता प्रकट की। प्रवीन ने उससे कहा—

'तो फिर तुम्हारे ख्याल मे क्या होना चाहिए ?'

'होना यही चाहिए कि नाजिम उस जगह शादी कर ले जहाँ तै हो चुकी है। मेरी खुशी भी इसी बात मे है कि मै उन्हे खुश देखू। मै उनसे

प्यार जरूर करती हूं मगर शादी के बारे मे लालची नहीं हू । मै खुश हू कि कुदरत [illegible] न्ही है जो मेरे प्यार को और उजागर कर देगे । हां, जब से मैने सुना है कि उन्हे दु.ख हुआ है तो मै भी परेशान हो रही हू । ठीक तो यह है कि तुम मुझे अपने साथ ले चलो। मै उनकी तसल्ली कर दूगी ।'

प्रवीन ने कहा—

'तो क्या आज पढने का इरादा नही है ?'

ताहिरा ने कहा—

'प्रवीन ! मै तो मुद्दत हुई पढना-लिखना छोड़ चुकी हू । मैं तो सिर्फ इसलिए कालेज आ जाती हूँ कि इस बहाने से नाजिम को देख लेती हूँ और बाद मे भी आती रहूँगी जब तक डाक्टर नाजिम इस कालेज में प्रोफेसर है ।'

यह सुनकर प्रवीन की चीख निकल गई और रोने लगी । ताहिरा ने उसे धैर्य दिलाते हुए कहा—

'बस, रो दी इतनी-सी बात पर ? मुझे देखो किस इतमीनान से बैठी हूँ । कालेज के लडके सच कहते है मेरे सीने मे दिल की जगह पत्थर का टुकड़ा है । अच्छा चलो अब चले ।'

यह कहते हुए ताहिरा ने प्रवीन को पकडकर उठाया और घर की ओर चल दी । कोठी पर पहुच कर जब वे कमरे मे प्रविष्ट हुई तो डाक्टर नाजिम कमरे में इधर-उधर घूम रहा था । उसके बाल अस्त-व्यस्त से थे और कुछ उन्माद सा उस पर बरस रहा था । ताहिरा को देखकर वह और घबराया और कुछ लज्जित से स्वर में बोला—

'आओ ताहिरा ! सुन लिया तुमने सारा किस्सा प्रवीन से ?'

ताहिरा ने कुर्सी पर बैठते हुए धैर्य से कहा—

'हां, सुन लिया लेकिन आप क्यों परेशान है ?'

'मै क्यों परेशान हूं ? क्या यह खबर सुन कर तुम्हे परेशानी नही हुई ?'

'बिल्कुल नही । मै तो खुश हुई हूँ ।'

नाजिम ने सोचा कि ताहिरा ने व्यग्य किया है और बोला—

'मुझे और शर्मिन्दा कर रही हो ।'

ताहिरा ने मुस्कराते हुए कहा—

'मैने जो कुछ कहा है, सच कहा है । मै दरअसल खुश हुई हूँ कि खुदा ने मेरे प्यार को अमर करने का प्रबन्ध कर दिया है । मै शादी को प्यार का जरूरी नतीजा नही समझती । बल्कि मेरी राय यह है कि शादी के बाद प्यार की असलियत खत्म होकर रह जाती है । और अब जब कि मुझे यह यकीन हो गया है कि आपसे मेरी शादी नहीं होगी तो साफ है कि मुझे खुश होना चाहिए । लेकिन यह देखकर मुझे बडा दु ख हुआ कि आप परेशान हो रहे है ।'

'तो क्या तुम्हारा मतलब यह है कि मुझे शादी कर लेनी चाहिए ?'

'हाँ, जरूर कर लेनी चाहिए । अपनी खुशी से नही तो कम से कम मेरी खुशी का ख्याल रखते हुए आप को शादी के लिए तैयार हो जाना चाहिए ।'

'और तुम ?'

'मै ? मै आपको अपना प्रेमी समझती रहूगी और प्रेमी का दर्जा पति से बहुत ऊचा है । यही चीज क्या मेरे लिए कम है कि पति की जगह मुझे प्रेमी मिल गया ।'

'मिल कैसे गया ? मै तो फिर किसी और का हो जाऊगा ।'

'पति के रूप मे किसी और के हो जाएगे लेकिन प्रेमी तो मेरे ही रहेगे ।'

'लेकिन फिर हमारे मेल मिलाप का उपाय क्या रहेगा ? मेरी बीवी यह कैसे सहन करेगी कि हम उसके होते हुए आपस मे मिलते रहे ?'

'मिलना भी क्या जरूरी है ? मेरे नजदीक वियोग का मतलब वही है जो साधारण लोगो के नजदीक सयोग का है । अगर मेल-मिलाप की कोई सूरत न रहेगी तो प्रेम की आग और भड़केगी और उससे मेरे दिल

को शान्ति मिलेगी ।'

'लेकिन मेरा क्या होगा ?'

'वही जो मेरा होगा ।'

'मतलब ?'

'मतलब सीधा । आप भी मेरी तरह वियोग को सयोग समझे । बस इतना ही काफी है ।'

'लेकिन हो सकता है मै तुम्हारे इस मत को न मानता हू और उससे मेरे प्यार की तसल्ली न हो सके । मुझे तो तुम्हे देखे बिना चैन नही आता ।'

'फिर जो आप कहे । मै मानने के लिए तैयार हू ।'

'तो फिर मै यही कहूगा कि मेल-जोल की कोई न कोई सूरत जरूर निकालनी चाहिए । हो सकता है तुम प्यार के उस मुकाम पर पहुँच चुकी हो जहा वियोग ही का नाम सयोग है । मगर मुझे तो उस वक्त तक चैन नही आ सकता जब तक तुम्हे न देख लू ।'

'तो फिर आप सोचिए कि क्या करना चाहिए ।'

जब दोनों बातें कर रहे थे तो प्रवीन जान बूझकर कमरे से बाहर चली गई थी ताकि वे बिना किसी झिझक के बात-चीत कर ले । नाजिम ने जब यह देखा कि प्रवीन जा चुकी है तो उसने ताहिरा को अपने सोफे पर बैठा लिया और बोला—

'प्यारी ताहिरा ! प्यार ने मुझे एक कड़े इम्तिहान मे ला खडा किया है । मै अपने वचन पर अटल रहना चाहता हू पर तुम और प्रवीन मुझे यह राय दे रही हो कि मुझे जरूर शादी कर लेनी चाहिए । अगर मै शादी करता हू तो प्यार के कानून का मुजरिम ठहरता हू और अगर नही करता हू तो तुम दोनों को नाराज करता हू । मै इस वक्त एक ऐसे दोरा हे पर खड़ा हू कि जहां से मेरे लिए यह अन्दाजा लगाना मुश्किल है कि ठीक रास्ता कौन-सा है ।'

ताहिरा ने प्यार से उसके कपोलो पर हाथ फेरते और मुस्कराते हुए कहा—

'ठीक रास्ता यही है कि शादी कर लो।'

'यह तुम मुझे कही छोड़ तो नही रही ?'

ताहिरा ने अपने कोमल कपोलो को नाजिम के गालो पर रखते हुए कहा—

'सच मानिए, मैंने जो कुछ कहा है वह मेरी दिली भावनाओ का आइना है।'

'बहुत अच्छा। अगर तुम्हारी खुशी इसी मे है तो मै तैयार हू।'

ताहिरा ने अपनी आकर्षक दृष्टि उसकी दृष्टि पर गड़ाते हुए कहा—

'नाजिम ! वचन देते हो ?'

'हा, देता हू।'

ताहिरा के नेत्र प्रसन्नता से चमक उठे। और बरबस उससे लिपटती हुई बोली—

'प्यारे नाजिम !'

नाजिम ने कहा—

'प्यारी ताहिरा !'

दोनों के नेत्रो से आसू के फव्वारे उबल पड़े और देर तक रोते रहे।

## ६

**

दूसरे दिन जब नाजिम अपना पीरियड लेने के लिए क्लास के कमरे मे पहुचा तो प्रवीन और ताहिरा प्रतिदिन के समान अगले बेंचों पर बैठी थी। उसने लैक्चर आरम्भ किया। आज उसकी आवाज प्रतिदिन से कुछ ऊची थी और वह कुछ निश्चिन्त सा दिखाई दे रहा था। एक विद्यार्थी ने दूसरे विद्यार्थी के कान मे धीरे से कहा आज डाक्टर नाजिम कुछ 'मूड' मे प्रतीत होता है। आज वह शैक्सपीयर के एक पात्र पर अपने विशेष विद्वत्तापूर्ण ढंग से आलोचना कर रहा था और उसकी आवाज के उतार-चढाव से प्रतीत होता था कि एक तीव्रगामी नदी ठाठे मारती बही जा रही है। उसने भाषण करते हुए अनेक बार ताहिरा की ओर देखा। वह पूरे ध्यान से उसका भाषण सुन रही थी। उसका मुखमडल कुछ उतरा सा प्रतीत हो रहा था किन्तु नेत्र शुष्क थे। बीते दो तीन मास मे यह पहला अवसर था कि नाजिम ने उसके नयनों मे आसुओं की झलक न देखी किन्तु उसके चेहरे का पीलापन उसकी हार्दिक बेचैनी का पता दे रहा था। न जाने आज वह क्यों अपनी भावनाओं को वश मे किए थी और आसुओं को रोके हुए थी। जब पीरियड समाप्त हुआ तो नाजिम कमरे से बाहर निकला। इससे पूर्व ताहिरा का यह नियम था कि जैसे ही वह लैक्चर देकर कमरे से बाहर निकलता वह प्रवीन के साथ उससे आ मिलती और बाते करने लगती किन्तु आज

पीरियड समाप्त होते ही वह प्रवीन से यह कहती हुई एक ओर को चल दी—

'प्रवीन ! माफ करना आज मुझे एक बहुत जरूरी काम है और मैं घर जा रही हू ।'

प्रवीन ने रोकना चाहा किन्तु वह आवश्यक कार्य का बहाना बना कर चलती बनी। बात वास्तव मे यह थी कि वह वैसे तो नाजिम को अब पहले से भी अधिक चाहती थी और उसे यह भी ज्ञान था कि नाजिम को भी उस से अत्यन्त प्रेम है किन्तु अब वह इस भावना को कुछ कम करना चाहती थी ताकि वह उसे प्यार करते हुए भी अपनी होने वाली पत्नी को न भूल जाए। उस का उपाय उसने यह सोचा कि अपने हृदय पर पत्थर रखकर धीरे-धीरे नाजिम से मिलना कम करदे। और नाजिम उस के इस कृत्य को विवाह की असफलता के कारण समझकर उसकी परवा करना छोड़ दे। वह स्वय तो नाजिम के प्यार मे घुल-घुल कर प्राण दे देने का निश्चय कर चुकी थी किन्तु यह उसे सह्य न था कि नाजिम उस के लिये विनाश को प्राप्त हो और उस का प्रभाव उस के गृहस्थ पर पड़े। आज ताहिरा ने शैक्स्पीयर के पीरियड मे स्वय पर पूर्ण अकुश रखा और कोई ऐसा सकेत तक न होने दिया जिस से उस की भावना का स्पष्टीकरण हो। वह अपनी प्यासी दृष्टि की तृष्णा बुझाने के लिये उसकी ओर ताकती रही किन्तु जैसे ही नाजिम की दृष्टि कमरे का चक्कर काट कर उस कोने की ओर आती जहा वह प्रवीन के साथ बैठी थी तब या तो वह दूसरी ओर मुह फेर लेती अथवा आखे झुका लेती। कमरे से निकलकर नाजिम ने यह सोचना आरम्भ किया कि आज उसने ताहिरा के व्यवहार मे जो परिवर्तन देखा उस का क्या कारण है ? कही वह रुष्ट तो नही हो गई ? उसका विचार था कि स्वय ताहिरा से उस का कारण पूछे किन्तु जब प्रवीन अकेली उस के पास पहुची तो उसने कहा—

'ताहिरा कहां है ?'

'वह घर चली गई है। वह कहती थी घर पर उसे एक बहुत जरूरी काम है और जल्दी वहां पहुंचना है।'

नाजिम का हृदय धक् से रह गया और वह वही रुक गया। उसे विकल देखते हुए प्रवीन ने कहा—

'चलिये भाईजान ! रुक क्यों गए ?'

नाजिम ने अपनी विकलता को छुपाते हुए कहा—

'प्रवीन ! मालूम होता है ताहिरा नाराज हो गई है। हा, उसे नाराज होना भी चाहिये। मैं ने दिये हुए वचनो को भूल कर उस के दिल को ठेस पहुचाई है।'

प्रवीन ने उस के हृदय को बढावा देते हुए कहा—

'नही भाईजान ! यह बात नही। मैं ताहिरा को भली प्रकार जानती हू। वह मुह पर कहने वाली लड़की है। अगर वह नाराज होती तो कल आप के मुह पर ही कह देती। मेरा ख्याल है कि उसे घर पर कोई जरूरी काम ही होगा। नही तो वह न जाती।'

नाजिम कुछ देर तक खडा सोचता रहा फिर कुछ कहे बिना स्टाफ रूम मे चला गया और प्रवीन रीडिग रूम मे जा कर समाचार पत्र पढने लगी।

इस के बाद ताहिरा ने नाजिम से मिलना जुलना कम कर दिया। कभी मार्ग चलते भेट हो जाती तो साधारण कुशल क्षेम पूछ कर आगे बढ जाती और नाजिम देखता रह जाता। अब उसे विश्वास हो गया कि ताहिरा बहुत बदल गई है। वह प्रायः उस के पीरियड से भी अनुपस्थित रहती। नाजिम ने यही विचार किया कि उस ने उसे विवाह के लिये तैयार कर अपना पीछा छुडा लिया है। यदि उसे उस से प्यार होता यो वह इशरत से विवाह करने की सम्मति कदापि न देती। और यदि वह प्यार के उस स्थान पर पहुच गई है जहा विवाह एक निरर्थक और बेकार सी वस्तु बन कर रह जाता है और प्यार की सच्ची तड़प को कम करने का कारण बनता है तो वह यों मुह न मोड़ लेती। किन्तु

नाजिम की यह भूल थी। उस ने उस के परिवर्तन को गलत समझा। ताहिरा अब भी प्यार की अग्नि में जल रही थी। बल्कि पहिले से भी कही अधिक। किन्तु वह उसे अपनी ओर आकृष्ट कर एक दूसरी स्त्री को उसके उचित अधिकार से वंचित रखना न चाहती थी। इस के अतिरिक्त उसके प्यार का उद्देश्य यह भी नही था कि स्वय नाजिम भी उसके पीछे नष्ट हो और उस का गृहस्थ जीवन उसके लिये दु:ख का कारण हो जाए।

नाजिम के विवाह की तैयारिया आरम्भ हो गई। तिथि निश्चित हो गई और उसके पिता ने आभूषण और वस्त्रो की तैयारी पर रुपया पानी के समान बहाया। विवाह के अब केवल कुछ दिन शेष थे। उन्ही दिनों की बात है। एक दिन नाजिम कालेज से घर आया ही था कि उस का मित्र प्रोफेसर वहीद जो एक दूसरे कालेज मे पढाता था उसे मिलने के लिये आया। नाजिम ने कुशल समाचार के पश्चात् उस से पूछा—

'कहो, कैसे भूलकर आ गए ? अब तो हफ्तो शक्ल ही नही दिखाते।'

वहीद ने कहा—

'अरे भाई ! मै एक किताब का नोट लिख रहा था। पूरा एक महीना इसी बक-बक मे लग गया। अब खुदा-खुदा कर के वह खत्म हुआ है तो तुम से मिलने आ गया हू। तुम कौन से इन दिनों मे मुझे मिलने आ गए थे ?'

नाजिम ने हसते हुए कहा—

'मै भी एक नोट लिख रहा था।'

वहीद ने कहा—

'तो क्या वह पूरा हो गया ?'

नाजिम ने परिहास के स्वर मे कहा—

'पूरा कहां हुआ है। अधूरा ही रह गया है और शायद कभी न हो।'

वहीद ने कुर्सी से उठते हुए कहा—

'चलो ज़रा बाजार तक चले। वह जो तुम से दर्शन की किताब कही थी मुझे कही नही मिली। मेरे साथ चलो शायद तुम्हारी सहायता से मिल जाए। मैं एक नई किताब लिखने वाला हूं और उस किताब से मुझे काफी सहायता मिल सकसी है। लाइब्रेरी मे भी मैंने देखा है। वहा अभी आई नही। नई किताब है न, चलो उठो जल्दी करो।'

नाजिम ने कहा—

'जरा बैठ तो जाओ।'

वहीद ने चापलूसी के से स्वर में कहा—

'जरा बाजार से हो आएं फिर कहोगे तो शाम तक तुम्हारे पास बैठा रहूगा।'

यह सुन कर नाजिम खड़ा हो गया और दोनों बाजार की ओर चल दिये। पुस्तकों की एक दूकान पर पहुचे तो वहां दुकान मे एक नवीन जोडा घूम रहा था और शीशे की आलमारियो में लगी हुई पुस्तकों के टायटिल देख रहा था। पुरुष एक सुन्दर सूट पहिने हुए था और स्त्री धानी रग की साढ़ी धारण किये थी। काले रंग का बुर्का उस ने अपनी बांह पर डाला हुआ था। वहीद और नाजिम एक और अलमारी के सामने खडे हो गए और पुस्तकोके टायटिल पढने लगे। इतने में उस युवक ने एक पुस्तक की ओर सकेत करते हुए कहा—

'यह किताब तुम्हारे मतलब की मालूम होती है।'

उस पुस्तक के टायटिल पर एक अर्ध नग्न चित्र बना था। स्त्री ने पुस्तक का शीर्षक पढ़ने के पश्चात् एक अट्टहास किया और बोली—

'वाह, यह किताब तो आपके मतलब की है। मेरे मतलब की क्यों होने लगी ? यह तो सैक्स की किताब है।'

युवक ने मुस्कारते हुए कहा—

'तो क्या औरतें सैक्स पर लिखी हुई किताबें नही पढ़तीं ?'

'बदमाश औरतें पढ़ती होंगी।'

'यह तुम्हारा ख्याल गलत है। शादी से पहले हर औरत को ऐसी किताबे पढनी चाहिये।'

'अपनी होने वाली बीवी को इस किताब की एक कापी भेज दो न ?'

यह कह कर उस स्त्री ने एक बार फिर अट्टहास किया और वह युवक भी हसने लगा।

नाजिम की दृष्टि तो पुस्तको के शीर्षको पर थी किन्तु कान उन दोनों की बातचीत पर लगे थे। पहिले उस का विचार था कि वे दोनो पति पत्नी हैं किन्तु जब युवती ने कहा कि इस पुस्तक की एक प्रति अपनी होने वाली पत्नी को भेज दो तो वह समझ गया कि न ये पति-पत्नी है न बहिन भाई। यदि बहिन भाई होते तो काम शास्त्र की पुस्तको पर यो स्वतत्र सम्मति प्रकट न करते। प्रथम तो नाजिम को यही बात अनुचित लगी कि घर से तो स्त्री बुर्का पहिन कर निकले और बाजार मे पहुच कर यो उसे भुजा पर डाल ले। दूसरे पर पुरुष से स्त्री का खुला परिहास उस के निकट सबसे बडी असभ्यता थी। जब नाजिम ने उन दोनो की बाते सुनी तो वहीद से बोला—

'सुना कुछ तुम ने ?'

वहीद ने मुस्कराते हुए कहा—

'सब सुन रहा हू। कहो क्या राय है ?'

'राय क्या है ? बदतमीजी और बे हयाई की हद है।'

नाजिम ने वैसे तो ये शब्द धीरे से कहे किन्तु उस युवती ने सुन लिये। उसका चहरा क्रोध से आरक्त हो गया और बोली—

'क्या कहा तुमने ?'

यह कहते हुए उसने नाजिम के मुख पर एक चपत जड़ दी और बड़-बड़ाती हुई उस युवक के साथ दूकान से निकल गई।

वहीद ने मुस्कराते हुए कहा—

'वह बदतमीजी और बेहयाई की हद थी। यह हिम्मत की हद है।'

नाजिम चकित था कि एक क्षण में यह हो क्या गया ? उसने इधर उधर देखा। आस-पास कोई आदमी नही था। दूकानदार को भी इस घटना का पता न चल सका। हाँ, जब वह लड़की बड़बडाती हुई दुकान से बाहर निकली तो उसे सन्देह हुआ कि भीतर कोई बात हुई अवश्य है। वह उठकर उन दोनो के पास आया और बोला—

'क्यो साहब ! यह गालिया किसे बकती जा रही थी ?'

नाजिम ने बुद्धिमत्ता से काम लेते हुए कहा—

'यहा तो कोई बात नही हुई। हो सकता है वे दोनो आपस मे झगड रहे हो ?'

दुकानदार ने कहा—

'साहब ! यह लडकी भी बडी झगडालू और बद जुबान है। हर तीसरे चौथे किताबे देखने मेरी दुकान पर आ जाती है। दो-तीन बार ग्राहको से झगडा भी हो चुका है। किसी से कहती है तुम मुझे घूर-घूर कर क्यो देख रहे हो और किसी को यह कहते हुए आखे दिखाती है कि तुम्हारा कधा मुझ से क्यो छू गया है ? और वैसे उसकी शरम का यह हाल है कि जब भी आती है तो इसके साथ कोई न कोई नया ही मर्द होता है। साहब ! मै तो तंग आ चुका हू इस लड़की से। अब तो मैने फैसला कर लिया है कि आगे को जब आए तो कह दूं कि आप महरबानी करके मेरी दुकान पर न आया करे।'

नाजिम और वहीद ने दुकानदार की बातो का कोई उत्तर न दिया। और आवश्यक पुस्तक खोजते रहे। अन्त मे उन्होने वह पुस्तक खोज निकाली और उसका मूल्य दुकानदार को देकर दूकान से निकल आए। मार्ग मे नाजिम उस घटना पर विचार करता रहा। उसे खेद भी हुआ कि मैने एक ऐसी बात की ही क्यो जो स्त्री को बुरी लगी ? और उसने मेरा अपमान किया। न मै उसके बारे मे कुछ कहता और न वह मुझे थप्पड़ मारती।

घर लौटकर वहीद ने हंसते हुए कहा कि—

'किताब तो सिल गई लेकिन इस की कीमत हमे बहुत ज्यादा देनी पड़ी ।'

*नाजिम ने कहा—*

'वही कीमत तो दी है जो इसके टायटिल पर लिखी है ? ज्यादा कैसे हो गई ?'

बहीद ने अट्टहास करते हुए कहा—

'अरे भाई ! मै उस थप्पड को भी तो कीमत मे शामिल कर रहा हू ?'

नाजिम गे मिन्नत करते हुए कहा—

'खुदा के लिए चुप रहो । साथ ही प्रवीन का कमरा है । कही उसे न पता चल जाए' ।

वहीद ने परिहास के स्वर मे कहा—

'प्रवीन को पता न चले चाहे सारी दुनिया को पता चल जाए ? यह क्या बात हुई ?'

'अरे भाई ! खुदा के लिए चुप रहो । क्यो मेरी और बेइज्जती करवाते हो ?'

'अरेमियाँ ! औरत के थप्पड़ से बेइज्जती नही होती । यह सेवा तो भाग्य वालो को मिल पाती है ।'

'बस, यही तो बुरी आदत है तुम्हारी । एक बात तुम्हारे हाथ मे आ गई है अब तुम महीनो मेरा पीछा नही छोड़ोगे ।'

वहीद ने कहा—

'अरे मियाँ ! मै तो मजाक कर रहा था । सच पूछो तो उस दूकान पर उस लडकी के हाथो एक थप्पड मे भी खा चुका हूं । वह तो खैर हुई कि दुकानदार ने मुझे पहचाना नही । नही तो सारी पोल खुल जाती ।'

नाजिम ने हसते हुए कहा—

'अच्छा, यह बात है ! फिर मुझे थप्पड़ खाने का कोई दुःख नही ।'

वहीद ने भेदपूर्ण स्वर मे कहा—

'यह तो तुम जानते हो कि मैं तो हू फक्कड़ । कोई ऐसी बात हो और मैं फिकरा न कसू यह भला कैसे हो सकता है ? लेकिन मेरी चुप्पी की वजह सिर्फ यही थी कि मुझे अपनी फिकरेबाजी का इनाम पहिले मिल चुका था । तुमने बडी जल्दी से काम लिया और एक ऐसी बात कह दी जिससे साहबजादी आग भभूका हो गई । खैर, आइन्दा के लिए होशियार रहना ।'

नाजिम ने परिहास में अपने कपोल सहलाते हुए कहा—

'अजी हजरत ! होशियारी क्या चीज होती है मैं जिन्दगी भर उस दूकान की तरफ मुह नही करूगा ।'

दोनो मित्र देर तक हास-परिहास करते रहे । वहीद नाजिम का हार्दिक मित्र था । दोनों एक साथ पढे थे और एक साथ प्रोफेसर हुए । नाजिम के और भी कई मित्र थे किन्तु वहीद से उसे जो लगाव था वह किसी अन्य मित्र से नही था ।

देर तक बाते करने के पश्चात् वहीद उठ खडा हुआ और बोला—

'लो भई ! अब मैं चलता हू । शाम होने को है और मैंने अपना वचन पूरा कर दिया ।'

यह कह कर वह डग भरता द्वार की ओर बढ़ा किन्तु दो ही डग चलकर रुक गया और बोला—

'हा भई ! एक बात और याद आ गई । सुना है कि तुम्हारी शादी होने वाली है और निकाह की तारीख भी तै हो गई है ? क्या यह सच है ?'

नाजिम ने हसते हुए कहा—

'हां, सुना तो मैंने भी है ।''

'भई ! यह भी खूब रही । मलतब उन्होंने भी सुना ही है और तस्दीक अभी इस खबर की नही हुई ।'

'हा भई ! ठीक ही तो कहा है मैंने । दर असल मैंने सुना है कि मेरी शादी हो रही है । अगर रास आ गई तो शादी वर्ना बर्बादी । अभी

से मैं उसे शादी कैसे कह दू ?'

वहीद ने गम्भीरता से कहा—

'तसल्ली रखो, यह शादी-शादी ही साबित होगी । माना कि तुम्हारी राय के खिलाफ है मगर तुम्हारे पिता एक तजर्बाकार बूजुर्ग है। वे जान-बूझकर अपने बेटे के लिये बर्बादी का सामान क्यों करने लगे ?'

यह कहते हुए वहीद कमरे से निकल गया ।

## ७

**

वैसे तो वहीद ने पुस्तको की दूकान की घटना को हंसी में टाल दिया था और अपनी ढिटाई की चर्चा करके उसे धो डालने का यत्न किया था किन्तु नाजिम को इस घटना के कुछ दिन बाद तक विकलता रही। अपने जीवन मे आज तक उसे इस प्रकार की घटना से सामना न हुआ था। इसलिए यह व्याकुलता स्वाभाविक थी। कभी वह यह विचार करता कि वहीद ने केवल उसका मन रखने के लिये एक मन घडन्त घटना सुना दी और कभी वह सोचता, सम्भव है उसे भी ऐसी घटना का सामना करना पडा हो। यदि उसने केवल उसकी व्याकुलता को दूर करने के विचार से यह कथा घड़ी हो तो स्पष्ट है कि एक स्त्री से थप्पड़ खाना एक साधारण बात नही और यदि उसे वास्तव मे ऐसी घटना का सामना करना पडा है तो ऐसी घटनाओं की साधारणता पर ध्यान रखते हुए उसे विकल होने की आवश्यकता नही। तात्पर्य यह है कि इस दुर्घटना ने उसे कुछ दिन तक बहुत अधिक व्याकुल रखा। उसने इसके विभिन्न मनोवैज्ञानिक अगों पर विचार किया और इस परिणाम पर पहुचा कि यदि वह स्त्री वास्तव मे इतनी लज्जाशील होती जिसे उसने थप्पड़ मार कर प्रदर्शित किया तो वह उसकी बात सुनकर भी यही प्रकट करती जैसे उसने उसकी बात नही सुनी। किन्तु प्रकट मे तो उसने इसका अपमान कर यह सिद्ध करने का यत्न किया कि उसके कान इस प्रकार के अनर्गल

वाक्य सुनने के अभ्यस्त नही किन्तु अनजाने उसने यह सिद्ध कर दिया कि नाजिम ने उसके बारे मे जो सम्मति स्थिर की है वह बिल्कुल सत्य है।

नाजिम एक विचार शील व्यक्ति था और साधारण सी बातो पर भी विचार करने का अभ्यस्त था। यदि किसी साधारण व्यक्ति के साथ यह घटना घटती तो वह सम्भवतः इसे एक साधारण घटना समझ कर उस पर सोच विचार करने का कष्ट न करता किन्तु नाजिम ने इस घटना पर अपनी पूर्ण शक्ति केन्द्रित करली और कई दिन तक इस पर सोच-विचार करता रहा।

एक दिन वह इसी प्रकार की चिन्ता मे डूबा था कि प्रवीन कमरे मे प्रविष्ट हुई और बोली—

'भाई जान! परसो तो शादी है और आपने मोजे, बनियान और इस तरह की दूसरी चीजे' अब तक खरीदी ही नही। आप आज जाकर इस तरह की छोटी-मोटी चीजे खरीद लाइये। और हां, मेरे लिए सूट का कोई अच्छा सा कपडा भी लेते आना।'

नाजिम ने मुस्कराते हुए कहा—

'तो यो कहो न कि तुम सूट के कपडे के लिए मुझे बाजार भेजना चाहती हो। और मेरी जरूरत की छोटी-मोटी चीजों की आड ले रही हो।'

प्रवीन ने पूरे जोर से अट्टहास किया और बोली—

'बहुत अच्छा, यही समझ लीजिए। कुछ भी हो, आज बाजार जाकर ये चीजे खरीद लाइये। आखिर शादी मे दिन ही कितने रह गए है?'

नाजिम ने कुछ चिन्तित स्वर मे कहा—

'और हॉ प्रवीन! तुमने ताहिरा से भी इस शादी की चर्चा की या नहीं? अगर वह भी इस वक्त आए तो क्या बुरा है?

'भाई जान! सिर्फ उस दिन चर्चा हुई थी जिस दिन वह आप के

पास आई थी। उसके बाद मैंने उसे यह नही बताया कि शादी की तारीख कौन-सी तै हुई है। और फिर वह तो मिलती भी आज कल बहुत कम है। कभी-कभार कालेज आती है। हाँ, कल आई तो उसे कह दूगी।'

'प्रवीन ! मेरी खुशी इसमे है कि वह इस शादी मे शामिल हो। मै तो इसके लिए तैयार न था सिर्फ तुम्हारे और ताहिरा के कहने से यह मुसीबत झेलने के लिए तैयार हो गया। अब यह तो ठीक नहीं समझता कि मै तो ताहिरा के कहने पर शादी के लिए तैयार हो जाऊ और वह इसमे शामिल ही न हो। यह तो वही मसल हुई कि मुद्दई सुस्त, गवाह चुस्त।'

'भाई जान ! मै उसे कहूगी तो सही, मगर मुश्किल यह है कि एक तो वह कालेज कभी-कभार आती है और जब आती है तो कुछ खिची-खिची-सी रहती है। मालूम नही क्या बात है ?'

नाजिम ने कुछ रुक कर कहा—

'हा. यह हैरानी तो मुझे भी है कि अपने आप उसने इस शादी पर जोर दिया और अपने आप अलग हो गई। पहले तो यहा आना उसका रोज का काम था मगर अब जब कभी कालेज मे मिलती है तो गामूली साहब सलाम के सिवा और कोई बात ही नही करती। मेरा ख्याल है वह खुद इस फिक्र मे थी कि मुझ से अपना पीछा छुड़ाए। जब मेरी शादी का मामला बीच मे आया तो उसने मौका ठीक समझा और मुझे शादी के लिए तैयार करके खुद अलग हो गई।'

'हाँ भाई जान ! मेरा भी यही ख्याल है। उसने सिर्फ इस ख्याल से आप को शादी के लिए तैयार करने की कोशिश की है। आजकल की लडकिया ही ऐसी है। ताहिरा पर ही क्या ? सच्ची बात यह है आजादी और बेपर्दगी इनसान को हरजाई बना देती है।'

नाजिम ने एक ठण्डी आह भरी और बोला—

'यह हरजाई पन भी खूब है कि एक शख्स के दिल मे आग लगाकर

खुद अलग जा खड़े हुए और तमाशा देखने लगे। खैर, यह ताहिरा की मर्जी है। मैं क्या कह सकता हूँ ?'

प्रवीन ने विषय बदलते हुए कहा—

'तो फिर यो कीजिए कि आज बाजार से अपनी जरूरत की चीजें खरीद लाइये। और हा, मेरा सूट का कपडा न भूल जाना।'

प्रवीन यह कहती हुई कमरे से निकल गई। नाजिम ने उठकर वस्त्र बदले और बाजार की ओर चल दिया। जब वह पुस्तको की दूकान के सामने पहुचा तो दूकानदार की दृष्टि बचाकर शीघ्रता से आगे बढ गया। उसकी दृष्टि मे वही घटना घूम गई और उसने चाहा कि घर को वापस लौट जाए और भविष्य मे कभी किसी दूकान पर सौदा खरीदने के लिए न जाए। सम्भव है उसे वैसी ही कोई घटना फिर देखनी पडे किन्तु जब उसने सोचा कि प्रवीन ने अपने सूट के लिए कहा था तो वह हिम्मत करके फिर आगे चल दिया। उसे अपनी वस्तुओं की चिन्ता न थी किन्तु छोटी बहिन के अनुरोध को न टाल सकता था। सम्भवत: प्रवीन ने भी इसीलिए अपने सूट के कपडे की शर्त लगा दी थी कि इस प्रकार वह अपनी आवश्यकता की वस्तुए भी खरीद लाएगा।

जब वह चलता-चलता कलकत्ता हाउस के सामने पहुँचा तो रुक गया। यह लाहौर मे कपडे की एक बहुत बड़ी दूकान थी। उसने सोचा कि चलो सबसे पहिले प्रवीन के सूट का ही कपडा खरीद ले। दूसरी वस्तुए यदि न भी खरीदी जाए तो उनके बिना भी काम चल सकता है। यह सोच कर वह दूकान मे प्रविष्ट हो गया।

दूकान के मैनेजर से उसने पूछा कि 'स्त्रियो के सूटो के लिए कोई बढिया-सा कपड़ा है ?'

मैनेजर ने स्वागत के स्वर मे कहा—

'साहब ! आपकी दूकान है। देखकर कोई पसन्द कीजिए : वहा उस अलमारी मे लेडीज सूटिग के अच्छे-अच्छे कपड़े पड़े हैं। शायद उन मे से आपको कोई पसन्द आ जाए।'

नाजिम उस अल्मारी के सामने जा खडा हुआ और वस्त्रों को देखने लगा। इतने मे एक स्त्री और पुरुष भी उस अल्मारी के सामने आ खडे हुए और कपडा देखने लगे। वह बडे ध्यान से वस्त्रो को देख रहा था। इतने मे उस स्त्री ने बडी निर्लज्जता के साथ उस पुरुष से कहा—

'ये साहब मेरे पीछे ही लगे रहते है। मालूम होता है उस इनाम से इनकी तसल्ली नही हुई जो मैने इन्हे किताबो की दूकान पर दिया था।'

पुरुष ने अट्टहास करते हुए कहा—

'आप ही के कोई चाहने वाले होगे।'

यह सुनकर नाजिम चौका। उसने उन दोनो की ओर देखा तो वे वही दोनो थे जिनसे उसे पुस्तको की दूकान पर वास्ता पड चुका था। वह हक्का-बक्का रह गया और सोचने लगा कि ये दोनो कहा से टपक पडे है? उसने वस्त्रो का निरीक्षण छोड दिया और शीघ्रता से डग भरता हुआ बाहिर की ओर चल दिया।

मैनेजर उसे खाली जाते देख उसकी ओर लपका और बोला—

'तो क्या जनाब को कोई कपडा पसन्द नही आया? मुझे इस बात का दु ख है कि आपकी पसन्द का कपडा नही मिल सका। अगर आप कल आने का कष्ट करे तो शायद मै औरतो की सूटिग के लिए कोई अच्छा सा कपडा दिखा सकू। मेरा मतलब यह है कि आज शाम तक ही दूकान मे नया माल आने वाला है। उसमे अच्छे-अच्छे कपडे भी है। मुझे आशा है कि आप उन्हे पसन्द करेगे।'

नाजिम ने घबराते हुए कहा—

'बहुत अच्छा। मै कल आऊगा।'

यह कहकर वह दूकान से बाहर निकल गया। उसके कानो मे उस जोडे के अट्टहास की ध्वनि बराबर आती रही। अब उसे और किसी दूकान पर जाने की हिम्मत न हुई। घर को वापस लौट आया और अपने कमरे मे जाकर आराम कुर्सी पर लेट गया। वह बहुत अधिक

घबराया हुआ था। उसका श्वास फूला हुआ था और कुछ ऐसा अनुभव कर रहा था कि वह बहुत घबराया और थका हुआ है।

प्रवीन ने उसे कमरे मे प्रवेश करते हुए देख लिया था। वह दौडती हुई आई। आते ही उसने कहा—

'तो क्या भाई जान वे चीजे आप खरीद लाए ? बडी जल्दी आप लौट आए है ?'

नाजिम के नेत्र गीले हो गए। वह बोला—

'प्रवीन ! मै शरमिन्दा हू कि तुम्हारी एक मामूली सी फरमाइश भी पूरी न कर सका। मै अपनी चीजे खरीदने के लिए नही बल्कि तुम्हारे सूट के लिये कपडा लेने गया था। मगर क्या कहू मुझ पर क्या गुजरी ?'

प्रबीन ने घबराहट के साथ कहा—

'क्यो भाई जान ! क्या बात हुई ?'

'बात तो कुछ नही हुई। बस यो समझ लो कि मुझे खरीदारी आती ही नही।'

'मगर इससे पहले तो आप खुद जाकर बाजार से जरूरत की चीजे खरीद लाया करते थे ?'

'हा, खरीद लाया करता था मगर अब इस काबिल नही रहा।'

नाजिम के नेत्रो से आसू बह रहे थे। अपने भाई को रोते देख प्रवीन की भी चीख निकल गई और उससे लिपटती हुई बोली—

'भाई जान ! यह क्या हो गया है आपको ? मालूम होता है ताहिरा का ख्याल आपको बेचैन कर रहा है। खुदा के लिए अपने आप पर नही तो कम से कम मुझ पर तरस खाइये। नही तो मै मर जाऊगी। मै आप को बेचैन देखना कभी सहन नही कर सकती। मैने उस दिन भी आप से यह अर्ज किया था कि इस शादी को कुछ दिनो के लिए समझिये और घबराइये नही। मालूम नही आप पढे लिखे होकर असल मामले को क्यों नही समझते ? या तो ताहिरा के प्यार ने आपकी

समझने सोचने की शक्ति को खत्म कर दिया है या मेरी बात पर आपको विश्वास नही ।'

नाजिम ने अपने अश्रु पोछ लिए और प्रवीन को दिलासा देते हुए बोला—

'प्रवीन ! यह बात नही । मुझे बाजार जाते हुए कुछ भय सा लगता है । मालूम नही क्यो ? मै तुम्हारे लिए अपनी जान तक दे सकता हू मगर बाजार से तुम्हारी फर्माइश का कपडा लाने मे न जाने मुझे क्यो झिझक-सी महसूस होती है । तुम देखती हो, मै तुम्हारे कहने से बाजार गया भी लेकिन खाली हाथ लौट आया । रही बात ताहिरा की । सो उसके बारे मे मेरी राय यही है कि वह बेवफा है, बद अहद है, और न जाने क्या-क्या है । उसने मेरे दिल में प्यार की आग सुलगा कर मुझे अकेला छोड़ दिया है और मुझे एक ऐसी औरत से लौ लगाने की राय दी है जिससे मुझे कोई लगाव नही है । मैंने सिर्फ उसकी खुशी के लिए ऐसा करना मान लिया है मगर अब वह मुझ से बात तक नही करती । तुम्हारा यह कहना गलत है कि मै उसके ख्याल मे खोया रहता हू और सोचने समझने की ताकत खो बैठा हू ।'

प्रवीन ने कहा—

'फिर आप खाली हाथ क्यो लौट आए ? आखिर बाजार जाने और जरूरी चीजे खरीदने से आप को क्यों भय लगता है ?'

नाजिम ने बात को टालते हुए कहा—

'प्रवीन ! छोड़ो इस किस्से को । यह एक भेद है जो मै अभी तुम्हे बताना नही चाहता । जब मेरी तबीयत ठीक होगी तो बता दूगा । कोई ऐसा भेद भी नही जिसका मुझपर कोई असर पडता हो अगर ठीक समझो तो अभी मुझ से न पूछो । अगर पूछोगी तो तुम्हे भी परेशानी होगी और मुझे भी ।'

'इस भेद का ताहिरा से तो कोई सम्बन्ध नही ?'

'बिल्कुल नही । बल्कि जब तुम सुनोगी तो मेरी हसी उड़ाओगी ।

लेकिन इस वक्त नही, फिर किसी वक्त। और हा, यह कहो, चाय तैयार हो गई ?'

प्रवीन ने कहा—

'हा, तैयार है। अभी भिजवाए देती हू।'

यह कहकर वह वहा से चली गई। उसके थोडी देर पश्चात् नौकर चाय लेकर आ गया। नाजिम ने चाय पीना आरम्भ कर किया। और फिर दार्शनिक ढग से आज की घटना पर विचार करने लगा। वह चकित था कि 'चार दरवेश' 'हातम ताई' या 'तलिस्मात होशरुबा' मे तो ऐसी घटनाओ की चर्चा कोई आश्चर्यजनक नही किन्तु साधारण जीवन मे ऐसी घटनाओ का क्रम एक आश्चर्यजनक बात अवश्य है। पहिली घटना की स्थिति भी तो औपन्यासिक है किन्तु वह सम्भव थी। किन्तु दूसरी बार इस प्रकार की घटना का दोहराया जाना आश्चर्यजनक अवश्य है। वही स्त्री जो पुस्तको की दूकान पर मेरा अपमान कर चुकी थी दूसरी बार फिर एक और दूकान पर उससे सामना होना कहानी नही तो और क्या है ? या तो इस दूसरी घटना को आकस्मिक समझना चाहिए या इसका अर्थ यह है कि वह स्त्री मेरे पीछे पडी है। और यह निश्चय कर चुकी है कि नाजिम जिस दूकान पर जाएगा। वह वहा पहुचकर उसका अपमान करेगी।

नाजिम चाय पी रहा था और इस पर विचार भी कर रहा था। प्रवीन दो तीन बार कमरे के द्वार के सामने आई और उसे चाय पीते देखकर चली गई। वह अपने भाई की विकलता से बहुत अधिक व्याकुल हो रही थी। उसे यह सन्देह था कि ताहिरा के प्यार की खरोच अभी बराबर उसके हृदय पर बनी है। और उसकी व्याकुलता इसी कारण से है किन्तु यह बात गलत थी। वास्तव मे बात यह थी कि नाजिम बहुत भावुक व्यक्ति था और जीवन की साधारण से साधारण घटना पर भी अनेक प्रकार से विचार करने का अभ्यस्त था। उस ने पहली घटना को तो कोई विशेषता न दी और स्वय को बिल्कुल एक ऐसा मानव समझा

जो अकारण किसी बाजारी आदमी से पिट जाता है किन्तु दूसरी बार इस प्रकार की घटना सामने आ जाने से वह बहुत अधिक उलझन मे पड़ गया। चाहे इस बार उसका गाल उस स्त्री के थप्पड़ से सुरक्षित रहा किन्तु उस स्त्री के शब्द उसके हृदय मे वाण बन कर उतर गए और उसे बहुत अधिक कष्ट हुआ। उसे यह विदित था कि प्रत्येक नगर मे ऐसे आवारा मनुष्य रहते हैं जो किसी के कहने से अथवा स्वय सभ्य लोगो का अपमान करने के लिए तैयार हो जाते हैं किन्तु यह ज्ञान नही था कि ऐसी स्त्रिया भी होती है जो ऐसा कर सकती है। लाहौर ही की एक घटना उसे मालूम थी कि किस प्रकार एक व्यक्ति ने अपने एक शत्रु की एक स्त्री से हत्या करवा दी। स्पष्ट है कि उसने स्त्री को लोभ दिया होगा। अथवा उस मे उसका कोई व्यक्तिगत स्वार्थ होगा। नाजिम चकित था कि यह स्त्री जो लगातार उसका अपमान कर रही है क्या अपना कोई व्यक्तिगत बदला लेने के लिए अथवा किसी के सकेत पर। यदि वह किसी के सकेत पर ऐसा कर रही है तो स्पष्ट है कि उसके साथी पुरुष ने उसे ऐसा करने के लिए कहा होगा। किन्तु नाजिम न उस पुरुष से परिचित था और न उस स्त्री से। अत. यह बात कुछ मन लगती प्रतीत न होती थी कि उस स्त्री ने उसका अपमान करके कोई बदला लिया हो। या किसी के कहने सुनने मे आकर लगातार दो बार यह काम किया हो। नाजिम ने इस घटना पर हर प्रकार विचार किया किन्तु किसी परिणाम पर न पहुच सका।

चाय पी कर उस ने तिपायी एक ओर सरका दी और सिग्रेट सुलगाने लगा। इतने मे प्रवीन अन्दर आ गई। उसके पीछे २ एक नौकर वस्त्र और आभूषण के डिब्बे उठाए आ रहा था। वह उसके सामने आ कर बैठ गई। नौकर ने सब समान एक मेज पर रख दिया और चला गया।

नाजिम ने मुस्कराते हुए कहा—

'प्रवीन ! यह क्या माल है ?'

प्रवीन ने अट्टहास करते हुए कहा—

'भाई जान ! यह सब सामान आपकी दुल्हिन का है। देखो अब्बाजान ने आपके लिए कितना रुपया खर्च किया है। सिर्फ आपको दिखाने के लिए लाई हू ।'

प्रवीन की हसी प्रदर्शन मात्र थी और उस मे वास्तविकता की कोई झलक प्रतीत न होती थी । नाजिम समझ गया कि वह उसे व्याकुल देखकर बहलाना चाहती है। उसने वस्त्र और आभूषणो की ओर देखा और मुस्करा कर कहने लगा—

'यह अब्बा जान ने सब कुछ मेरे लिए किया है या अपने दोस्त का दिल खुश करने के लिए ?

प्रवीन बच्चो के से स्वरों मे बोली—

'भाई जान ! आप तो ऐसी ही बातें निकालते रहते है। भला अब्बा जान को अपने दोस्त के खुश करने की क्या पड़ी ? वे आप की खुशी का ख्याल करेगे या अपने दोस्त की खुशी का ?'

नाजिम ने एक ठण्डी आह भरी और कहा—

'प्रवीन ! मेरी खुशी तो कुछ और ही थी। मरे हुए आदमी के लिए कीमती कफन ला कर यह कहना कि यह सब कुछ मरने वाले की खुशी के लिए किया गया है एक बे तुकी सी बात है। बल्कि उसका साफ और सीधा मतलब यह होगा कि मरने वाले की मौत दूसरो की खुशी का कारण हुई है। यह सब सामान मेरी मरहूम मुहब्बत का कफन है। अब्बा जान का इस पर हजारो रुपए खर्च करना इस बात का सबूत है कि उन्हे मेरी रूहानी मौत पर बड़ी खुशी हुई है। खैर, दिखाओ यह सारा सामान। मुझे कम से कम यह तो मालूम हो कि मेरी तबाही और बरबादी पर अब्बा जान को कितनी खुशी हुई है ?'

प्रवीन ने आखों मे आसू भर कर कहा—

'भाई जान ! आपने फिर वैसी ही बाते करनी शुरू कर दी है। आज ही आप ताहिरा के भुलावे पर अफसोस कर रहे थे और अब आप

फिर अपने प्यार की कहानी ले कर बैठ गए हैं। खुदा के लिए इन बातों को जाने दीजिए। और अपनी किस्मत पर भरोसा रखिए। खुदा जो भी करता है उसमें इनसान के लिए कुछ न कुछ बेहतरी ही होती है।'

नाजिम ने मुस्कराते हुए कहा—

'तो अब तुम ने मुझे रूहानियत का सबक देना शुरू कर दिया।'

'आप तो पढे लिखे इनसान हैं। मैं भला आप को ऐसा पाठ कैसे दे सकती हू ?'

'अच्छा तो फिर यों करो कि ये कपडे और जेवर मुझे दिखाओ।'

'लेकिन क्या यह आप दिल से कह रहे है ?'

नाजिम ने हसते हुए कहा—

'दिल ही से तो कह रहा हू। तुम्हे यह क्यों शक हुआ कि मेरी यह मर्जी सिर्फ ऊपरी है ?'

प्रवीन ने बिगड़ते हुए कहा—

'आप बाते जो ऐसी करते है ? शक क्यो न हो ?'

'अच्छा तो फिर दिखाओ यह सारा सामान।'

प्रवीन ने उठ कर वस्त्र और आभूषण एक २ करके दिखाने आरम्भ किए और उसके साथ २ परिचयात्मक भाषण भी आरम्भ कर दिया। यह वस्त्र अमुक स्थान से खरीदा, अमुक टेलरिग फर्म से इसकी सिलाई हुई। और इसका इतना बिल देना पडा। यह जेवर अमुक सुनार ने बनाया। इस का तोल इतने तोले है और इस पर इतना व्यय हुआ। नाजिम चुप चाप वस्त्र और आभूषण देखता रहा और सिग्रेट के कश लगाता रहा। जब प्रवीन सारे वस्त्र कौर आभूषण उसे दिखा चुकी तो बोली—

'कहिए आप को ये पसन्द आए ?'

'मेरी पसन्द या ना पसन्द को तो छोड़ो। सवाल यह है कि दुल्हिन और उसके अब्बा को ये पसन्द आएगे या नही।'

'आएगे क्यो नही? पूरे पैंतीस हजार रुपये खर्च हुए है इन पर।'

'हा, फिर तो पसन्द आ जाएंगे। क्यों कि बड़े आदमी दूसरों के प्यार को नकदी के पैमाने से नापने के आदी होते है लेकिन पैमाना सब का अलग २ है। कोई उसकी कीमत दस हजार लगाता है, कोई बीस हजार। कोई पैंतीस हजार और कोई उससे भी ज्यादा। कुछ भी हो ख्वाजा अजीज उद्दीन का प्यार मापने का पैमाना इससे लम्बा नही। पैंतीस हजार रुपये बड़ी रकम है।'

प्रवीन वस्त्र और आभूषण वही पटक कर उठ खड़ी हुई और चीख कर बोली—

'भाई जान !'

नाजिम ने अपनी बात विना काटे आगे कहा—

'लेकिन हैरानी है कि बहिन भी अपने भाई के प्यार को उसी पैमाने से नाप रही है।'

प्रवीन के नेत्रों से टप २ आसू गिरने लगे और वह सब सामान वही छोड़ कर शीघ्रता से बाहर निकल गई।

## ८

**

विवाह के एक दिन पूर्व जब डाक्टर नाजिम लैक्चर देने के पश्चात् क्लास रूम से निकला तो ताहिरा ने पीछे से धीरे से कहा—

'नाजिम ! जरा ठहरो ।'

नाजिम वही रुक गया । उसने पीछे मुडकर देखा तो ताहिरा आ रही थी । उसने जिस प्यार से नाजिम का नाम लिया था उसने उसके कानो मे जैसे अमृत टपका दिया था और उसके हृदय मे इच्छा बलवती हुई कि काश ! ताहिरा एक बार फिर उसे नाजिम कह कर पुकारे । गत पन्द्रह सोलह दिनो मे यह प्रथम अवसर था कि उसे ताहिरा से बात चीत करने का अवसर प्राप्त हुआ । उसने ताहिरा की ओर देखते हुए कहा—

'कहो ताहिरा ! क्या बात है ?'

इतने मे कुछ लडके समीप से निकले और ताहिरा ने उसकी ओर कनखियो से तकते हुए कहा—

'प्रोफेसर साहब ! कल प्रवीन ने मुझे आपकी शादी मे शामिल होने के लिए कहा था । उस वक्त तो मैने वचन दे दिया था । मगर बाद मे मुझे मालूम हुआ कि एक बहुत जरूरी काम के कारण शायद मै शादी मे शामिल न हो सकू ।'

नाजिम उसकी बात का उत्तर दिए बिना समीप के एक घास के

टुकड़े पर जा खडा हुआ। ताहिरा भी उसके पीछे-पीछे गई और बोली—

'तो क्या आपने मेरी बात सुनी ?'

नाजिम ने कहा—

'हा, सुनी। लेकिन तुमने आज मुझे प्रोफेसर साहब कह कर मेरी भावना मे एक कुहराम सा मचा दिया है। प्रोफेसर साहब लफ्ज से परायापन टपकता है जिसकी मुझे तुमसे आशा न थी। जब तुमने मुझे सिर्फ नाजिम कह कर पुकारा तो मैंने एक खुशी सी महसूस की लेकिन उसके बाद ही तुमने प्रोफेसर साहब कह कर मेरी भावना को ठेस पहुचाई है। मुझे कुछ यो महसूस हुआ कि कोई शख्स मुझे एक बहुत बडी इज्जत देकर तुरत यह कहता है कि तुम इस इज्जत के काबिल नही हो। यही बात है न ताहिरा ! शायद तुम अब मुझे अपने प्रेम के काबिल ख्याल नही करती ? माना कि मै मर्द होकर भी कुछ समाज की मजबूरियो का पाबन्द हूं और तुम औरत होकर भी उनसे आजाद हो। लेकिन मेरी यह पाबन्दी भी तो सिर्फ तुम्हारी ही खुशी का नतीजा है। तुम ही ने मुझे शादी के लिए तैयार किया। क्या इस शादी का मतलब यह है कि मै तुम्हारे प्रेम से भी वचित हो जाऊ ? अगर यही है तो मै आज ही समाज की तमाम मजबूरियों को ताक पर रखकर इस शादी से इनकार कर सकता हू। अगर तुम्हारी यही मर्जी है तो मै इसे पूरा करने को तैयार हू।'

नाजिम की आवाज भर्रा गई और उसके नेत्रों मे [illegible]।
यह देख कर ताहिरा के नेत्र भी गीले हो गए। वह अपनी चेतना को वश मे करते हुए बोली—

'प्यारे नाजिम ! यह आपको कैसे शक हो गया कि मै दिए गए वचन भुला चुकी हू ? मुझे आप पर कोई अफसोस नही। बल्कि मै यह समझती हू कि आपने यह सब कुछ मेरी खुशी का ख्याल करके किया है। मेरा दिल अब भी आपके प्यार से भरपूर है। मै अब भी आपकी पुजारिन हू। मै आपसे मिलने से क्यो घबराती हू ? यह किसी घृणा

का नतीजा नही बल्कि उस प्यार को प्रकट करता है जो आपके लिए मेरे दिल मे पल रहा है। देखने में मेरे अल्फाज आप को बेमतलब मालूम होगे लेकिन जब आप इन पर ध्यान देगे तो इनका मतलब आप की समझ मे आ जाएगा। हा, तो मै यह कहना चाहती थी कि एक बहुत जरूरी काम की वजह से मै आप की शादी में शामिल न हो सकूगी। आप कोई ख्याल न करे।'

ताहिरा नाजिम से बाते कर रही थी कि उसकी पुस्तक से एक चित्र निकल कर भूमि पर गिर पडा। नाजिम ने शीघ्रता से उसे उचक लिया। ताहिर ने उसे छीनने का यत्न किया तो नाजिम ने कहा—

'क्या कोई ऐसी तस्वीर है जो मै नही देख सकता ? अगर ऐसी ही है तो ले लो।'

ताहिरा ने कुछ सोच कर कहा—

'तो फिर देख लीजिए।'

नाजिम ने देखा तो वह उसका अपना चित्र था। उसके हृदय में एक टीस सी उठी। उसने अपना हृदय थाम लिया। ताहिरा की ओर कनखियों से देखते हुए बोला—

'ताहिरा !...'

'हा, नाजिम !' ताहिरा ने उत्तर दिया।

'यह चित्र तुमने कहा से लिया ?'

'आपको मालूम होगा, एक दिन मै आपसे मिलने के लिए आपके यहा गई थी तो प्रवीन यह कहती हुई मुझे उठा कर ले गई थी कि चलो तुम्हे भाई जान की ताजा तस्वीर दिखाऊं। उसके पास फोटो की तीन कापिया थी। उनमे से एक मैने ले ली। यह वही कापी है।'

'तो क्या यह तस्वीर मै अपने पास रख लू ?'

'असल पर तो मेरा कोई अधिकार नही। अब आप नकल भी मेरे पास रहने देना नही चाहते ?'

नाजिम ने चित्र उसकी पुस्तक में रखते हुए कहा—

'यह लो। लेकिन यह कहकर तुमने फिर मुझे दुख पहुचाया है। ताहिरा ! मे तुम्हे कैसे विश्वास दिलाऊ कि तुम मेरे दिल की गहराइयों मे समाई हुई हो। मेरी दुनिया तुम्हारे ही दम से आबाद है। मेरी मजिल तुम्हारे सिवा और काई नही।'

ताहिरा कुछ देर तक मौन खडी रही। फिर बोली—

'हा, मुझे यह विश्वास है। अच्छा खुदा हाफिज।'

यह कहकर ताहिरा चल दी और नाजिम की दृष्टि दूर तक उसका पीछा करता रही।

पिछले पहर जब नाजिम कालेज से अवकाश प्राप्त कर घर पहुचा तो उसके पीछे २ वहीद भी आ गया और आते ही ऊची आवाज मे बोला—

'तो गोया तुम्हारी शादी हो रही है ?'

नाजिम ने मुस्कराते हुए कहा—

'हा, हो रही है। तुम बडे खुश हो गए ?'

'खुश होने की तो बात है। आखिर शहबाला तो मै ही बनूगा। और तुम्हारे अब्बाजान से मैने इसकी मजूरी भी ले ली है।'

'यह बडा अच्छा किया है तुमने। शायद मै तुम्हे इसकी मजूरी न दे सकता।'

'क्यो ?'

'इसलिए कि ऐसे कामो की मजूरी बुजुर्ग ही दे सकते है। औलाद को उसमे बोलने का कोई हक नही है।'

'अरे मिया ! तुम तो फिर वही पुराना किस्सा लेकर बैठ गए। मैने उस दिन भी तुमसे कहा था कि मा बाप अपनी औलाद के लिए जो भी करते है बेहतर करते है। आज्ञाकारी औलाद का यही फर्ज है कि मा बाप के हुक्म पर चले। अपने बडों को बदनाम करने वाली औलाद का नमूना तुमने उस दिन देख लिया होगा।'

'कौन सा नमूना ?'

'भई ! वही साहबजादी जिनके महंदी रचे हाथ ने तुम्हारे गाल की सेवा की थी।'

'अरे भई ? वह परसों अतरसों फिर मिल गई।'

'बच गए या फिर कोई थप्पड़ पडा ?'

'भई ? बाल बाल बच गए। उसने एक दो कड़वी कसैली मुझे सुनाई लेकिन मैंने यही दिखावा किया कि जैसे कुछ सुना ही नही। अजीब बदतमीज़ लड़की है। उसके साथ फिर वही नौजवान था जिसे तुमने किताबों की दूकान मे देखा था।'

वहीद ने परिहास के स्वर मे कहा—

'उस साहबजादी का अता पता तो मुझे अब तक मालूम नही हो सका। पता नही किस खानदान को रौशन करती है जिसने उनकी रस्सी को ढीला कर रखा है और वह मेरे तुम्हारे जैसे बेगुनाह आदमियों के गालो पर हाथ साफ करती फिरती है। खैर साहब ! मै तो अगर उसे फिर देख लू तो लाहौर छोडकर भाग जाऊ। अच्छा तो यह बताओ कि कल बारात किस वक्त जाएगी ?'

नाजिम ने मुस्कराते हुए कहा—

'सुना है सुबह दस बजे जाएगी।'

'गोया तुमने सुना है। इस बारे में कोई छान बीन नहीं की।'

'तुम सुबह सवेरे आ जाना। अगर यह बात गलत निकली तो मैं 'दरोग बर गर्दन रावी' कहकर अपना पीछा छुड़ा लूगा।'

'अरे भाई ! ठीक ठीक कहो। क्यो खामखा परेशान करते हो ?'

'कह तो दिया है कि सवेरे दस बजे जाएगी। और शाम तक शायद वापस भी आ जाए।'

'बहुत अच्छा, तो फिर मै सुबह सवेरे आ जाऊगा। लेकिन देखो, शहबाला कोई और न बनने पाए। नही तो लड़ाई हो जाएगी।'

वहीद यह कहता हुआ उठा और खुदा हाफिज कहकर चल दिया।

दूसरे दिन सुबह सवेरे महमान आने आरम्भ हुए। कोठी के सामने

एक लम्बा चौडा शामियाना लगा था और उसके नीचे कुर्सिया बिछी थीं। अतिथि उस शामियाने के नीचे एकत्र होते गए। नाजिम के अब्बा मिया मैराज उद्दीन अतिथियों की आवभगत में लगे हुए थे और बडे प्रसन्न प्रतीत होते थे। ऐसा प्रतीत होता था कि उन्हे कोई दबा खजाना मिल गया है। प्रवीन भी बहुमूल्य परिधान में सज्जित अपनी सहेलियों मे बैठी हास-परिहास कर रही थी। नाजिम में कोई परिवर्तन दिखाई नही देता था। बल्कि उसके चहरे का पीलापन बता रहा था कि वह विवाह के लिए विवश किया गया है अन्यथा वह इसके विरुद्ध है।

जब अतिथि चाय आदि पी चुके तो बारात कारो में चली और कोई पन्द्रह मिनट मे ख्वाजा अजीज उद्दीन की कोठी मे पहुच गई। खान बहादुर अजीज-उद्दीन ने अपने इष्ट-मित्रो सहित बारात का स्वागत किया और उसे बिठाया। इतने मे काजी जी आ पहुचे और विवाह की रस्म पूरी होने लगी। नाजिम एक ओर दूल्हा बना बैठा था और वहीद शहबाला के रूप मे उसके निकट बैठा कुछ बारातियो से हास परिहास कर रहा था। काजी जी दूल्हा के सामने आकर बैठ गए और उसके पिता तथा श्वसुर की उपस्थिति मे उससे बोले—

'क्या तुम्हे खान बहादुर ख्वाजा अजीज-उद्दीन की साहबजादी इशरत मुलताना एवज पचास हजार रुपए हक महर अपने निकाह मे मजूर है ?'

नाजिम ने उस पक्षी के समान जो पिजरे से निकलने के यत्न मे लहू लुहान हो जाता है और अन्त मे अपने पख ढीले छोड देता है और उस कैद खाने के जीवन पर सन्तोष करता है, और कोई उपाय न देख धीरे से कहा—

'हा, मजूर है।'

काजी जी ने तीन बार यही प्रश्न दोहराया और तीनों बार नाजिम ने अपने हृदय पर बलात्कार कर इसका उत्तर 'हा' मे दिया। निकाह होते ही 'मुबारिक सलामत' की ध्वनिया आने लगी और दोनों समधी उठकर गले मिलने लगे जैसे विजयी पहलवान अखाड़े से निकल कर अपने मित्रो के

गले मिलते हैं। उसके थोड़ी देर पश्चात् नाजिम को घर के भीतर बुलाया गया। सास और दूसरी बडी बूढ़ियो ने उसकी बलाएं ली और सलामियां दी।

सायंकाल बारात दुल्हिन और दहेज के सामान के साथ वापस लौट आई। नाजिम के मित्र और समवयस्क सम्बन्धी कोई नौ बजे तक उसके पास बैठे इधर उधर-की हांकते रहे फिर धीरे धीरे सब विदा हुए। जब कमरे मे नाजिम के सिवा और कोई न रहा तो प्रवीन भीतर आई और मुस्कराती हुई बोली—

'भाई जान! आइए। आज आपकी एक नए आदमी से भेट कराए।'

नाजिम ने बे परवाही से कहा—

'क्या जरूरत है? हो जाएगी आहिस्ता २ मुलाकात।'

प्रवीन ने बिगड़ते हुए कहा—

'तो क्या फिर वही जिद्द शुरू कर दी? आप अपना वचन भल गए? खुदा के लिए उठिए।'

नाजिम उठते हुए बोला—

'चलो बाबा! मेरी नकेल तो अब तुम्हारे हाथ में है। जहा जी चाहे ले चलो।'

प्रवीन ने उसके कान के निकट मुंह ले जाकर कहा—

'भाई जान! भाभी दुल्हिन माशा अल्लाह चाद का टुकडा है। देखोगे तो खुश हो जाओगे।'

नाजिम ने उसकी इस बात का कोई उत्तर न दिया और उसके साथ २ हो लिया। प्रवीन उसे एक सुसज्जित कमरे मे ले गई। उसमे एक ओर एक सुन्दर छपर खट रखा हुआ था और फर्श पर अति सुन्दर और मूल्यवान् वस्त्र की चांदनी बिछी हुई थी। दीवार के साथ २ तीन चार गाव तकिए लगे हुए थे।

प्रवीन ने उसे एक गाव तकिये के सामने बिठा दिया और यह कहती हुई बाहर निकल गई—

'अब आप इनसे मुलाकात कीजिए और मुझे इजाजत दीजिए। शब बखैर।'

प्रवीन ने एक ऊंचा अट्टहास किया और कमरे का द्वार बन्द कर के चल दी।

दुल्हिन नाजिम के निकट ही एक दूसरे गाव तकिये के सामने सिमटी बैठी थी। उस ने अपना मुख कमल अपने रेशमी दोपट्टे मे छुपा रखा था। हा, गोरे-गोरे महदी रचे हाथ अवश्य दोपट्टे के बाहर थे।

दोनो कितनी ही देर तक मौन बैठे रहे। न नाजिम ने कुछ कहा और न उस की दुल्हिन ने। अन्त मे बैठे-बैठे नाजिम को कुछ ध्यान आया और दुल्हिन से सम्बोधन कर बोला—

'तो साहब ! उठाइये घूघट को।'

उसकी दुल्हिन को यह ख्याल था कि उस का पति एक बहुत बडी भूमिका के पश्चात् पर्दा हटाने का अनुरोध करेगा और अपनी हार्दिक बेचैनी के प्रमाण मे भारत के बड़े-बडे कवियों की प्रेम रस भीनी कविताए सुनाएगा किन्तु जब नाजिम ने लम्बे मौन के पश्चात् पूरी कविता की केवल एक पक्ति ही सुना कर बस कर दी तो उसे अति निराशा हुई। उसने अपनी ब्याही सखियो से सुन रखा था कि दुल्हिन के पर्दा उलटने मे दूल्हे को कितनी कठिनाइयों का सामना करना होता है और उसे भावनाओ में डूबे हुए कितने ही पद्य सुनाने पडते है किन्तु यहा दुल्हिन ने केवल इतने मात्र से सन्मोष कर लिया—

'तो साहब ! उठाइये घूघट को।'

दुल्हिन को यह आशा रही कि सभवतः दूल्हा मिया कम से कम इसी पद्य को पूर्ण करने के लिये दूसरा चरण सुनाने की कृपा करेगे किन्तु उस के उपरान्त पूरे पन्द्रह मिनट तक मौन रहा और वह बेचारी और भी निराश हुई। उस ने अब यही ख्याल किया कि यह पद्य भी मिया ने शायद सुना-सुनाया कह दिया। अन्यथा कविता से उस का दूर का भी सम्बन्ध नही है। वह इस लम्बे मौन से उकता कर स्वय ही पर्दा पलटने

का विचार कर रही थी कि नाजिम न यह कहते हुए उस की लाज रख ली—

'सरकार ! उठा दीजिए अब इस पर्दे को ।'

विषय वही पुराना था किन्तु उसे नए ढग से निवेदन कर नाजिम ने अपने कविताप्रिय होने का प्रमाण दिया था। और दुल्हिन को विश्वास हो गया कि मिया कवि अवश्य है। अत उसने अधिक प्रतीक्षा न की क्यों कि उसे ख्याल था कि शायद अगला अनुरोध रात बीत जाने के पश्चात् ही हो और नकाब उलट दी। जैसे ही दोनों की दृष्टि मिली वे आश्चर्य चकित रह गए। यह वही लडकी थी जिसे नाजिम ने पहिले पुस्तको की दुकान और तत्पश्चात् कपडे की दुकान पर देखा था। पहिले उस से चाटा खाया था और फिर कोसने सुने थे।

इशरत ने उसे देखते ही दृष्टि झुका ली और बोली—

'मै मुआफी चाहती हू।'

नाजिम ने बडे धैर्य के साथ कहा—

'नही, कोई बात नहीं। अगर कहो तो अपना दूसरा गाल आगे कर दू।'

इशरत कुछ लज्जित सी होती हुई बोली—

'मुझे यह मालूम न था कि आप है।'

नाजिम ने मुस्कराते हुए कहा—

'तो इस का मतलब यह हुआ कि मेरे सिवा और सब पर हाथ उठाने की तुम्हे पूरी-पूरी आजादी है।---और हा, तुम गालिया बडे मजे की देती हो। आज तक मेरे कान तुम्हारी गालियो के संगीत से गूज रहे है।'

इशरत ने नेत्र झुकाते हुए कहा—

'मुझ से गलती हुई है।'

'हा, ऐसी गलतिया तो आम तौर पर हो ही जाती है और इनसान करता है गलतिया। यह हमारी शादी भी तो एक गलती ही है।'

इशरत घबरा गई और बोली—

'यह शादी क्यो गलती है ?'

'मेरा मतलब यह है कि मुझे तो तुम से जूते खाने और गालियां सुननी चाहिये थी। मगर कुदरत का सितम देखो कि मुझे मिया बना कर तुम पर ला जमाया। यह गलती नही तो क्या है ?'

'मैं पहिले भी कह चुकी हूं। मैं मुआफी चाहती हूं।'

'मुआफी मुझे मागनी चाहिये या तुम्हे ?'

'वह कैसे ?'

'वह यो कि उस दिन मैंने किताबों की दुकान पर तुम्हारे खिलाफ कुछ बेहूदा अल्फाज कहे और तुम ने मेरे मुह पर थप्पड मार कर मुझे मेरी बदतमीजी की सजा दी। फिर मैंने लुच्चो और शोहदों की तरह तुम्हारा पीछा करना शुरू कर दिया और छाया की तरह तुम्हारे पीछे लगा रहा। आखिर तुम ने तग आकर मेरे बारे मे ऐसे शरीफाना अल्फाज कहे जो तारीफ के काबिल है।

'अल्लाह करे जोरे जुबा और ज्यादा।'

अब तुम ही कहो कि मुआफी मुझे मागनी चाहिये या तुम्हे ? और हा, बुर्का पहिन कर घर से निकलना और बाजार मे जाकर उसे उतार कर बाह पर डाल लेना मैं ने पहिली बार ही देखा है। अच्छा फैशन है।'

इशरत लाज के मारे धरती में गड़ी जा रही थी। उसके पास नाजिम की बातों का कोई उत्तर न था। नाजिम ने कुछ देर मौन रहने के बाद फिर कहा—

'और हा वे जो साहबजादे आपके साथ थे वे कौन थे ?'

'वे मेरे रिश्ते के भाई होते है।'

'तब कोई हर्ज की बात नही। जमाना बड़ा नाजुक है। हमेशा अपने शरीफ भाइयों के साथ बाजार जाना चाहिये। लेकिन उन्होने अब तक तुम्हे सैक्स की कोई किताब पेश की है या नहीं ? पहिले जमाने मे तो

भाई अपनी बहिनों को कुरान भेट किया करते थे मगर आज कल सैक्स की किताबे पेश करने का रिवाज हो गया है। खैर, यह तो वक्त-वक्त की बात है।'

यह सुन कर इशरत और अधिक लज्जित हुई और उस ने अपना मुख दोनों हाथो से ढाप लिया। नाजिम ने मुस्करापे हुए कहा—

'जिस चन्द्रमा की चादनी सब लोगों तक पहुच सकती है उस की दो चार किरणे अगर मुझ तक भी पहुच जाएं तो क्या बुराई है ? इशरत ! उठाओ हाथ अपने चेहरे से।'

इशरत ने गिडगडा कर कहा—

'मेरे सिर ताज ! मै मुआफी चाहती हू। मै अपना कुसूर मानती हू। खुदा के लिये मुझे मुआफ कर दो। मुझे और ज्यादा शर्मिन्दा न करो।'

यह सुन कर नाजिम चुप हो गया। इशरत ने फिर मिन्नत करते हुए कहा—

'क्या आपने मुझे मुआफ कर दिया ?'

नाजिम ने फिर ठण्डी सांस लेते हुए कहा—

'हा, मुआफ करना ही पडेगा। यह शादी लाहौर के दो खानदानी के आपसी प्यार का नतीजा है। इस मे दो बुजुर्गों की कोशिशे शामिल है। उन दो बुजुर्गों की कोशिशें जो शादी ब्याह के मामले मे बेटे या बेटों से सलाह करना अपनी खानदानी परम्परा के खिलाफ समझते है। अगर मै तुम्हे मुआफ न करूं तो वे मुझे मुआफ नहीं करेगे।'

'तो क्या आपने मुझे मुआफ कर दिया है ?'

'हा, हा, कह तो दिया है कि मुआफ नहीं किया बल्कि मुआफ करना पडा है और क्या तस्दीक चाहती हो ? हां, अगर तुम भी मुआफ कर दो तो महरबानी होगी।'

'लेकिन कुसूरवार तो मै हूं न कि आप।'

'नही, मै भी हू।'

'आप भी है ? वह क्यो ?'

'वह यो कि पहले दर्जे का नालायक होते हुए भी तुम जैसो सुन्दर और सलीके वाली लड़की का जबरदस्ती मिया बन गया हू । यह मेरा कसूर नही तो क्या है ?'

इशरत ने उत्तर मे कुछ न कहा । वह फर्श की ओर तकती रही । नाजिम ने ध्यान से देखा तो उसके नेत्रो से आसू बह रहे थे । ये आसू देखलावामात्र थे अथवा लज्जा के वह इस बारे मे कुछ निर्णय न कर सका ।

## ६

**

इशरत ने कुछ दिन तो इस घर मे बडे आराम से बिताए किन्तु जब दुल्हिनापे की लज्जा कुछ कम हुई तो उसने पख निकालने आरम्भ किये। सबसे पूर्व उसकी क्रूरदृष्टि नौकरों पर पडी। कभी किसी को बुरा-भला कहती और कभी किसी को कोसती। दो-तीन नौकरों को तो उस ने पीट भी दिया। नौकरो मे हाहाकार-सा मच गया। बिल्कुल इस प्रकार जैसे बिल्ली के दडबे मे घुस आने पर मुर्गों का हाहाकार मचता है। अन्त मे परिणाम यह हुआ कि कई नौकर काम छोड़ गए। ये नौकर वर्षों से इस घराने मे थे और अब अपने आपको इस घर का एक सदस्य समझने लगे थे। नाजिम, प्रवीन और इनके पिता मे से किसी ने उनके साथ दूसरो का-सा व्यवहार कभी नही किया था और न नौकरों ने ही स्वय को नौकर समझा था किन्तु इशरत के आने के कुछ दिन पश्चात् ही उन पर जो बला आई उसका परिणाम यह हुआ कि उनमे से कई नौकरी छोडकर चलते बने।

प्रवीन और नाजिम तो इन नौकरो के बारे मे कभी सोचते तक न थे। वे समझते थे कि यह काम उनके पिता के ही अधीन रहना चाहिये। जिसे चाहे नौकर रखे और जिसे चाहे नौकरी से हटा दे। किन्तु इशरत ने इस घर मे आने के कुछ दिन पश्चात् ही नौकरो के काम मे टोकना आरम्भ कर दिया। और उन्हे कुछ इस बुरी तरह लताड़ना आरम्भ

किया कि सबमे एक खलबली-सी मच गई, और उन्होने नौकरिया छोड-छोडकर भागना आरम्भ कर दिया। मियां मैराज उद्दीन को उसका यह स्वभाव बुरा तो लगा किन्तु रक्त के घूट पीकर मौन रहा। वह जानता था कि यह रिश्ता उसके अपने अनुरोध और जिद्द का परिणाम है। यदि उसने अपनी बहू से कुछ कहा तो उसकी अपनी मूंछ नीची हो जाएगी। उसका यह विचार था कि कुछ समय पश्चात् इशरत स्वय ही समझ जाएगी और नौकरो से बुरा बर्ताव करना छोड़ देगी किन्तु हुआ इसके विरुद्ध। घरवालों के आखे मूदे रहने के कारण वह और ढीठ बन गई। और उसने होते २ अपनी ननद से उलझना आरम्भ कर दिया। प्रवीन पढी-लिखी और स्थिर स्वभाव की लड़की थी और किसी से लड़ना-झगड़ना उसके स्वभाव के विरुद्ध था इसलिए इस बात की कोई सम्भावना न थी कि वह अपनी भावज से ननदो का सा कोई झगडा करेगी किन्तु जब नौकरों चाकरो से झगडा करके इशरत का मन न भरा तो उसने नया मोर्चा ताका और अपनी ननद को 'आ बैल मुझे मार' जैसा निमंत्रण देना आरम्भ कर दिया। पहिले तो उसका यह विचार था कि प्रवीन स्वय ही उससे उलझेगी। आखिर ननद ही तो है किन्तु उसकी यह इच्छा पूर्ण न हो सकी और विवश होकर उसने स्वय ही झगड़ा करने का कारण खोजना आरम्भ कर दिया और उसने उसके व्यवहार पर मीन मेख निकालना आरम्भ कर दिया। कभी उसके वस्त्रों पर और कभी देर से पहुचने पर। प्रवीन यही समझी कि वह उसकी बड़ी भावज है और जो भी कहती है उसके भले के लिए कहती है। जब भी इशरत झगड़े की कोई बात निकालती प्रवीन पहले हथियार डालकर उसकी इच्छा का वध कर देती। इशरत चकित थी यह किस प्रकार की लड़की है। झगड़ा करने को तैयार ही नही होती ?

एक दिन जब प्रवीन कालेज से लौटी तो इशरत ने लाल-लाल आंखें निकालते हुए कहा—

'मैंने तुम्हे अपना सूट सन्दूक में रखने के लिये कहा था और तुमने

वही एक कौने मे फेंक दिया और उसकी इस्तरी का सत्यानाश कर दिया। क्या यही सभ्यता सीखी है तुमने ?'

प्रवीन ने लज्जित स्वर में कहा—

'भाभी जान मै क्षमा चाहती हूं। मुझे कालेज जाने की जल्दी थी और आपके कपड़े बक्स में रखना भूल गई। खैर कोई बात नही, मै अभी उसे दोबारा इस्तरी करके बक्स मे रखे देती हू।'

इशरत ने झगडा बढ़ाते हुए कहा—

'तुम्हारे लिये कोई बात ही नही है। अजब फूहड लड़की हो तुम भी। कुसूर करती हो और फिर कहती हो कि कोई बात नही ?'

'भाभी जान ! कहा तो है कि मै सूट को दोबारा इस्तरी किये देती हू। आप तो खामखा झगडा कर रही है।'

'अच्छा तो मै झगड़ालू हु तुम्हारे ख्याल में ?'

'यह मैने कब कहा ?'

'जब मै खामखा झगड़ा करती हू तो झगड़ालू तो हुई। कोसने का यह एक नया ढग है ?'

'भाभी जान ! मै भला आपको कोस सकती हूं ? मै तो आपकी दिल से इज्जत करती हू।'

'अगर इज्जत न करोगी तो कौन सा आसमान गिर पड़ेगा या जमीन फट जाएगी ?'

'आप भी खूब है। बिना वजह झगड़ा कर रही है ?'

'मै कब खूब हू ? खूब तो तुम हो जो बन सवर कर और टेढी मांग निकालकर कालेज जाती हो और मालूम नही कहा २ के चक्कर काटकर शाम को घर आ जाती हो। बाप और भाई यह समझते है कि लाडली कालेज गई हुई है। उन्हे क्या पता कि वह कालेज की आड़ लेकर मटर-गश्त करती रहती है ?'

यह सुनकर प्रवीन का धैर्य समाप्त हो गया। और जलकर बोली—

'भाभी ! आइने में अपना ही चहरा दिखाई पड़ता है।'

'अब इशरत को झगड़ा बढाने का उचित कारण हाथ आ गया। वह प्रवीन के एक होहत्थड़ मारती हुई बोली—

'तो क्या मैं तुम्हारे ख्याल मे बदमाश हूं और लुच्चो और शोहदों के साथ घूमती हूं ? यही मतलब है न तुम्हारा ?'

प्रवीन ने फिर धैर्य सभाला और मिन्नत करती हुई बोली—

'भाभी ! यह आज तुम क्या कह रही हो ? मैंने कब कहा है कि तुम लुच्चों और लफगो के साथ फिरती रहती हो ? हा, यह तुमने मेरे बारे मे जरूर कहा है। अब तुम ही इन्साफ करो तुम्हे यह कहना चाहिये था ?'

'अच्छा तो मैं झूठ बोल रही हू ? यह आइना देखने का मतलब क्या है ?'

'वह तो तुम्हारी बात का जवाब था। जैसा तुमने कहा वैसा सुना।'

इशरत ने और अधिक चीखते हुए कहा—

'अरी ! तू अपने आपको क्या समझती है ? मैं भी तो कालेज में पढ़ती रही हूं। कालेज ने तुम्हारे कोई सुरखाब के पर नही लगा दिए। एक तो बकवास करती है और फिर गजभर की जुबान चलाती है।

प्रवीन को क्रोध आ गया और बोली—

'भाभी ! अपनी हैसियत को समझो। बढ़ चढ़ कर बाते बनाना ठीक नही।'

इशरत को और अधिक ताव आ गया और उसके मुह पर एक थप्पड़ मारती हुई बोली —

'हैसियत से तुम्हारा मतलब क्या है ? मैं इस घर में नौकरानी बन कर नही आई। मालिका बन कर आई हूं। मेरी हैसियत यह है अगर चाहूं तो चोटी से पकड़ कर तुम्हे घर से बाहर निकाल दू और फिर न घुसने दू।'

नाजिम अपने कमरे में बैठा यह सब बाते सुन रहा था। उसने इशरत के दोहत्थड़ और तमांचे की ध्वनि सुनी थी किन्तु उसने ननद भावज

के झगड़े में हाथ डालना उचित न समझा और आनन्द से बैठा सिगरेट के कश लगाता रहा।

तमाचा खा कर प्रवीन धाड़ मार २ कर रोने लगी। इशरत ने और अधिक क्रोध से कहा—

'तो क्या तुम समझती हो कि मैं तुम्हारे रोने से डर जाऊगी और तुम्हारे कदमो मे गिर कर मुआफी मागूगी ?'

प्रवीन ने उसकी बात का कोई उत्तर न दिया और रोती रही। समीप ही उसके पिता का कमरा था और वे वहा बैठे समाचार पत्र पढ़ रहे थे। जब उन्होने कोलाहल सुना तो जनानखाने मे गए और प्रवीन को रोते देख कर बोले—

'क्यो बेटी ! क्या बात हुई ? भाभी से कोई झगडा हो गया है ? हा, तो इशरत ! यह क्यों रो रही है ?'

इशरत ने कडक कर कहा—

'मै क्या जानू कि क्यो रो रही है ? अपनी लाडली ही से पूछ लीजिए। मुझे बदमाश, बेआबरू और न जाने क्या कुछ बताती है। मै तो इसकी ऐसी बाते सुनने से रही !

मिया मैराज उद्दीन उसकी निर्लज्जता को देखकर आश्चर्य चकित रह गए और कुछ देर तक मौन रहने के पश्चात् बोले—

'इशरत ! बुजुर्गो से यो कड़क कर बात नही करनी चाहिए। शरीफ घरों की बहू बेटियो का यह काम नहीं होता।'

इशरत ने और ऊची आवाज से कहा—

'तो क्या मै जलील होती रहू ? और दुनिया भर के इल्जाम सुनती रहूं ? लेकिन बोलू नही ?

मियां मैराज उद्दीन ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा और अधिक कुछ कहे बिना बाहर निकल गए।

प्रवीन इशरत की इस निर्लज्जता को देखकर और अधिक ठिठकी सी रह गई और रोना बन्द कर दिया। उसका विचार था कि वह उसके

पिता से झिझक कर बात करेगी किन्तु उसकी निर्लज्जता ने उसे चकित कर दिया और वह मन ही मन सोचने लगी कि जो स्त्री बडे-बूढों का सम्मान नहीं करती उस से किसी अच्छे व्यवहार की आशा करना एक व्यर्थ सी बात है। इस लिए रूमाल से अपने आसू पोछ लिए और कुछ कहे विना अपने कमरे की ओर चल दी। इशरत ने उसे जाते हुए देख कर कहा—

'बस हो गया कलेजा ठण्डा तुम्हारा ? अपने बाबा से भी बे इज्जती करवा दी तुमने मेरी। तोबा २, यह वक्त भी आने वाला था कि सुसर अपनी बहुओ से झगडा करे। यही तो कलजुग है।'

प्रवीन ने धीरे से कहा—

'और बहुओ को अपने सुसर की बेइज्जती करने की पूरी आजादी है। सतजुग मे यही तो हुआ करता है।'

इशरत ने शोर मचाते हुए कहा--

'बस, तुम्हारे अब्बा और तुम ही नेक पाक हो। इस दुनिया में और तो सब बदमाश हे।'

प्रवीन ने उसकी इस अप्राकरणिक बात का कोई उत्तर न दिया और चुपके से अपने कमरे मे जा कर बैठ गई।

नाजिम ने यह सब नाटक अपने कानो सुना किन्तु मौन रहा। उसे अपने पिता के अपमान को देखकर खेद हुआ किन्तु उसके साथ ही उसे यह ध्यान आया कि उस की निर्लज्ज और मुह फट पत्नी को यहा लाने मे यदि किसी का हाथ है तो वे पिता जी ही हे। अब वे जाने और उन का काम। मुझे इस झमेले में पड़ने की क्या आवश्यकता ? आश्चर्य की एक बड़ी बात यह थी कि इशरत अपने पति का बहुत अधिक ख्याल रखती थी और उस की इच्छा के विरुद्ध कुछ नही करती थी। नौकरों चाकरो और ननद तथा श्वसुर से उसका नित्य झगड़ा रहता था किन्तु अपने पति से वह कभी निर्लज्ज और मुह फट की सी बातें न करती थी। उसका कारण सभवत: यह था कि नाजिम उसकी निर्बलताओ से

परिचित था और उन्हे जानते हुए मौन था। इशरत को भय था कि यदि उसने कोई ऐसी वैसी बात अपने पति से की तो उसकी बीती घटनाओं से पर्दा उठ जाएगा। और उस घर मे रहने का कोई उपाय नही रहेगा। इसके अतिरिक्त यह भी हो सकता है कि उसने एक समय सब के विरुद्ध युद्ध छेडना उचित न समझा हो और पति के साथ बनाकर रखने मे ही कल्याण समझा हो ताकि वह आवश्यक होने पर उसकी सहायता कर सके। अस्तु, कारण कुछ भी हो, इशरत की घर के सब लोगों से लडाई थी किन्तु नाजिम से पटती थी।

नाजिम के पिता का कमरा बिल्कुल जनानखाने से मिला हुआ था। और घर मे क्या हो रहा है उन्हे सब पता चलता रहता था। जब भी कोई झगडा होता वे शीघ्रता से आकर उसकी रोक थाम कर देते और वापस चले जाते। इस बीच बचाव मे कई बार उन्हे भी अपनी निर्लज्ज और बढबोली बहू की कडवी कसैली सुननी पड़ती। उन्होने इन बातो का कभी कोई उत्तर न दिया। वे स्वभाव के बहुत सख्त थे और अपने बेटे अथवा बेटी से कभी कोई ऐसी वैसी बात नही सुन सकते थे और साधारण २ बातो पर उन्हे झाड देते थे किन्तु बहू के सामने वे भी मौन रहते थे। और उसकी बातों का उत्तर दिये बिना चुपके से खिसक जाते। संभवतः वह इस लिए भी उसे कुछ कहना सुनना उचित न समझते थे कि सारे घर का विरोध होते हुए भी उन्होंने इस सम्बन्ध पर जोर दिया और अपने बेटे बेटी को नाराज करके उसे ब्याह लाए। अब यदि वे इस के विरुद्ध कुछ कहते तो उनकी अपनी हेठी होती।

इशरत को अपने श्वसुर पर सब से बडा आरोप यह था कि वे घर की नीति मे हाथ क्यों डालते है? और हर झगड़े में मध्यस्थ बन कर क्यों आ जाते है? एक दिन जब वह किसी नौकर से झगड़ा कर रही थी तो मिया मैराज-उद्दीन स्वभाव के अनुसार आ उपस्थित हुए और बोले—

'बेटी! ये तुम्हारे झगड़े कभी खत्म भी होंगे या नही?'

इशरत के एड़ी से चोटी तक आग लग गई और पेच ताव खाती हुई बोली—

'आप खामखा ऐसे झगडों में क्यों दखल देते है ? मै नौकरों से घर का काम लेती हूं और अगर वे कोई काम खराब करें तो उन्हे झाड़ भी सकती हूं। आप क्यों इन झगड़ों में पड़ कर अपना वक्त खराब करते है ?

मिया मैराज-उद्दीन अपनी बहू की कडवी कसैली सुनने के अभ्यस्त हो चुके थे किन्तु आज न जाने उन्हे क्यो ताव आ गया और गरज कर बोले—

'मै घर का मालिक हूं और मुझे घर की देख भाल का हक हासिल है।'

इशरत ने बिगड़ते हुए कहा—

'तो फिर मेरा इस घर में क्या काम है ? मै किसी की नौकर तो नहीं हूं। आप घर के मालिक थे कभी मगर अब मै हू। घर की बातों से आपको कोई लगाव नहीं होना चाहिए। मै आप के बाहर के कामों में दखल देती हू ? आप मेरे अधिकारों मे क्यो दखल देते है ?'

मिया मैराज-उद्दीन ने और क्रुद्ध होते हुए कहा—

'जब तक मै जिन्दा हू घर का कोई काम मेरी मर्जी के खिलाफ नही हो सकता।'

'जब तक मै इस घर में मौजूद हूं आपकी बात नही चलने दूगी।'

'इशरत ! बदतमीज मत बनो।'

'अपनी जुबान संभालिये वर्ना'....'

'वर्ना क्या होगा ?'

'वर्ना यह होगा कि मै आपको जनानखाने की चारदीवारी में कभी घुसने नही दूंगी।'

'अच्छा, यह हिम्मत है तुम्हारी ?'

'अब नही हुई, शुरु से है। किसी गरीब घर की लड़की नहीं हूं।'

'क्या बड़े घर की लड़कियों का वही काम है कि वे अपने सुसर की बेइज्जती करें ?'

'क्या सुसर के लिए ठीक है कि बहुओं के मुह लगें ?'

'मैंने तुम्हे कोई बुरी बात कही है ?'

'आप बुरी बात कहने वाले होते कौन हैं ? अगर आप कहे तो मैं आपको छोड दूगी ?'

यह सुनकर मिया मैराज-उद्दीन चकित रह गए और उन्होने कुछ और कहना उचित न समझा क्योकि यह विश्वास था कि यदि उन्होंने इशरत के इन अशिष्ट शब्दो के उत्तर में उसे झाड़ा पुछाड़ा तो उनकी सफेद दाढी इस निर्लज्ज और ढीठ के हाथों सुरक्षित न रहेगी। वे चुपके से बाहर की ओर चल दिए।

इशरत ने उन्हें जाते हुए देख कहा—

'आप महरबानी करके अब जनानखाने में न आए।'

'मैं क्यों न आऊ ? मेरा बेटा और बेटी यहां रहते हैं ?'

'लेकिन मैं तो पराई औरत हूं। मेरे सामने आने से तो आपको शरम आनी चाहिए।'

'बेटी ! बड़ों का अदब लिहाज चाहिए।'

'बडों को छोटों के कामों मे हाथ नही डालना चाहिए।'

'अगर छोटों में कोई भेद पड़ जाय तो उसे दूर करना बड़ों का काम है।'

'आप अपने बेटे बेटी के लिए तो बड़े है मगर मेरे लिए नहीं। मेरे झगड़ों में मत आइए।

यह सुन कर मियां मैराज उद्दीन चुप हो गए। इशरत ने उन्हें मौन देखकर कहा—

'और हां, आपको जनान खाने के नजदीक के कमरे में नहीं रहना चाहिए। आप बाहर के किसी कमरे में रहें। आप को जनान खाने से क्या दिलचस्पी है ? मैं यहां अक्सर दुपट्टे के बिना चलती फिरती हूं

और आप खांसे विना आ धमकते हैं। यह आप के लिए मुनासिब नहीं। और अगर अभी हड्डियों के इस पुराने ढाचे मे कुछ बलबला है तो शादी कर लीजिए। कोई न कोई किस्मत का मारा आपको लड़की देने के लिए तैयार हो ही जाएगा।'

मिया मैराज उद्दीन को बहुत क्रोध आया और बोला—

'यह तुम क्या बकवास कर रही हो ?'

'बकवास नही कर रही हू ठीक कह रही हू। इस बुढापे मे भी आप को ताक झाक की आदत है इसे मै अच्छी तरह से समझती हू। आप आंखे सेकने के लिए ही तो झट से जनान खाने मे आ जाते है। मैं आपको बताए देती हू कि मै कोई ऐसी वैसी औरत नही। अपनी सफेद दाढ़ी का कुछ ख्याल कीजिए और आज ही जनान खाने के साथ का कमरा छोड कर किसी दूर के कमरे मे चले जाइये।'

मियां मैराज उद्दीन के हाथों के तोते उड़ गए और जनान खाने से निकल गए। बाहर निकलते ही उन्हों ने एक नौकर से कहा कि मेरा सामान इस कमरे से निकालकर बाहर के किसी कमरे मे रख दो। नौकर ने एक दो घण्टे के अन्दर २ उनका पूरा सामान उस कमरे मे पहुंचा दिया जिसे उन्होंने अपने रहन सहन के लिए पसन्द किया था।

## १०

**

मिया मैराज उद्दीन के बारे मे प्राय: यह प्रसिद्ध था कि वे घर के बड़े अच्छे प्रबन्धक हैं। यह बात ठीक भी थी। पत्नी की मृत्यु के पश्चात् उन्होंने अपने बाहर के काम काज के अतिरिक्त घर का प्रबन्ध भी अपने हाथों में ले लिया था और उस काम को अति सुघड़ता पूर्वक पूर्ण किया था। प्रवीन और नाजिम उस समय छोटे-छोटे थे। मियां मैराज उद्दीन ने उनकी देख भाल भी की और अपना धधा भी चलाते रहे। उनके घर मे कभी कोई झगड़ा नही हुआ था। सब लोग मिलजुल कर रहते थे किन्तु इशरत के घर में पांव रखते ही उसका समस्त प्रबध बिखर कर रह गया और वर्षो की शान्ति दो चार दिन में ही समाप्त होकर बीती कहानी बनकर रह गई। मिया मैराज उद्दीन ने पहले तो अपनी बहू को शिष्ट बनाने का यत्न किया किन्तु जब उसने उनके भी लत्ते लेने आरम्भ कर दिए तो वे चुपके से घर के प्रबन्ध से पृथक् हो गए और अपनी बहू की आज्ञानुसार जनान खाने के साथ का कमरा छोड़कर दूर के एक कमरे में जा रहे।

प्रवीन की स्थिति बहुत अधिक खराब थी। पहले कुछ दिन तो उस ने जैसे तैसे करके काटे किन्तु जब इशरत ने घर की धरती उसके लिए तंग कर दी तो वह घर छोड कर चल दी और अपनी बूआ के घर जाकर रहने लगी। इस के अतिरिक्त और वह कर भी क्या सकती थी।

अपने पिता की तरह जनान खाना छोड़ कर बाहर के किसी कमरे में तो जाकर रह नहीं सकती थी। वह एक पर्दे वाली लड़की थी और अपने प्राचीन रीति रिवाज के अनुसार अपना स्थान घर की चार दीवारी में ही समझती थी। जब उसे घर की धरती तग होती हुई प्रतीत हुई तो वह अपनी बुआ के घर चली गई। वही रहती सहती और वही से प्रति दिन कालेज चली जाती। नाजिम से उसे बहुत अधिक प्रेम था। वह उसे नित्य कालेज में ही मिल लेती और वहीं से वापस बूआ के यहां चली जाती।

इशरत ने इस घर में आते ही प्रलय सी मचा दी। नाजिम को यह सब ज्ञात था वह यह भी जानता था कि इशरत ने उसके पिता और बहिन का अपमान बुरी तरह किया है और उनसे ऐसी बातें की है जो एक बहू और भावज को नहीं करनी चाहिए। उसे अपने पिता और बहिन का अपमान होते देख कर हार्दिक दुःख हुआ था किन्तु जान बूझ कर मौन था। वह इन झगडों मे पडना नहीं चाहता था। उसे इस बात का बहुत अधिक दु ख था कि उसके पिता ने केवल मित्रता और वंश की परम्पराओं का ध्यान रखते हुए उसे एक ऐसी लड़की के पल्ले बाध दिया जिस से वह घृणा करता था। इस लिए वह यह चाहता था कि वे थोड़ा अपनी भूल का फल चख लें।

मियां मैराजउद्दीन को भी अपनी भूल का अनुभव हो चुका था और यह समझने लगे थे कि उन्होंने युवा पुत्र की इच्छा के विरुद्ध उस का विवाह कर के अच्छा नही किया। वे मन ही मन लज्जित थे कि उन्होने एक बेजोड विवाह पर बल दे कर न केवल अपने पुत्र की परेशानी बढ़ा दी है अपितु सारे घर की शान्ति को समाप्त कर दिया है। उन्होंने केवल अपनी नाक और झूठे मान का विचार रखते हुए यह सब कुछ किया। अब वे हृदय से चाहते थे कि इस संकट से छुटकारा मिले किन्तु स्वयं किये का निदान नहीं।

मिया मैराजउद्दीन ने एक दो बार मनमें विचार किया कि नाजिम

से इस बात की चर्चा करें किन्तु इस विचार से ऐसा न कर सके कि यह विवाह उन की अपनी इच्छा से हुआ था नाजिम की इच्छा से नहीं। यदि वे ही स्वयं इस का विरोध आरम्भ कर दें तो यह कोई अच्छी बात नहीं। हां, यदि नाजिम स्वय इस बारे में उन से सम्मति ले तो फिर वे उसे कहेगे कि इशरत को तुरन्त तलाक दे दे। उन का निश्चय था कि नाजिम अवश्य उन से इस बारे मे कुछ न कुछ कहेगा किन्तु उनकी यह सभावना पूर्ण न हो सकी। विवाह को कई मास बीत गए किन्तु अपने पिता के सामने नाजिम ने इशरत की कोई शिकायत न की।

नाजिम इस लिये भी सन्तुष्ट था कि इशरत उस की इच्छा के विरुद्ध कुछ नही करती थी। अनेक बार वह उस के मुख से कठोर वाक्य भी सुनती किन्तु मौन रहती। ननद और श्वसुर के वह बहुत विरुद्ध थी और उनका अपमान करने के लिये हर समय तैयार रहती थो किन्तु अपने पति के विरुद्ध एक शब्द भी न कहती थी और उस की सुख सुविधा का पूरा ध्यान रखती थी।

जब मिया मैराजउद्दीन की सभावना गलत सिद्ध हुई और नाजिम ने उनसे इशरत के बारे मे कुछ न कहा तो वे बहुत परेशान हुए। वे संभवतः कुछ दिन और सन्तोष रखते और इस बारे मे पहल न करते किन्तु एक तो उन के घर मे प्रवेश पर रोक लगा दी गई दूसरे कुछ समय से उन्हे घर से मन पसन्द भोजन भी नहीं मिल रहा था और उन्हों ने विवश हो कर होटल से भोजन मगवाना आरम्भ कर दिया था। अब उन्हों ने निर्णय किया कि चाहे उन के सम्मान को बट्टा लगे अथवा वंश की परम्परा का विरोध हो वे नाजिम से अबश्य चर्चा करेंगे कि वह इशरत को पिता के घर भेज दे और फिर उसे वापस न लाए।

एक दिन नाजिम अभी कालेज से आकर अपने कमरे में बैठा ही था कि एक नौकर आया और बोला—

'मियां साहब आपको अपने कमरे में बुला रहे है।'

नाजिम अपने पिता के पास पहुंचा और आदाब कह कर एक कुर्सी

पर उन के सामने बैठ गया। मियां मैराजउद्दीन समाचारपत्र पढ़ रहे थे। उन्होने अपनी ऐनक के शीशों मे से नाजिम को देखते हुए कहा—

'बेटा ! तुम से मिले कई दिन हो गए है। यह तो तुम जानते हो घर मे मेरा दाखला बन्द है। इस लिये कभी कभार तुम ही आकर मिल जाया करो।'

मिया मैनाजउद्दीन का विचार था कि उन्होंने दाखिलेकी मनाही की चर्चा कर के नाजिम को वास्तविक विषय पर बात करने का अवसर प्रदान कर दिया है और वह स्वय ही चर्चा छेड़ देगा किन्तु उन की संभावना के विरुद्ध नाजिम ने केवल इतना कहा—

'बहुत अच्छा अब्बाजान ! मै हाजिर हो जाया करूगा।'

मियां मैराजउद्दीन को अति निराशा हुई और तरह देते हुए बोले—

'हां तो तुम्हे घर में कोई तकलीफ तो नही ? मेरी तकलीफ को तो खैर छोडो।'

नाजिम ने पूरे सन्तोष के साथ कहा—

'नही अब्बा जान ! मुझे तो कोई तकलीफ नही है।'

मिया मैराजउद्दीन कुछ देर मौन रहे। उनकी दृष्टि समाचारपत्र के पृष्ठों पर गड़ी हुई थी और ध्यान कहीं और था। अन्त में उन्होंने कहा—

'मेरा मतलब यह है कि इशरत का सलूक तुम से तो अच्छा है ?'

नाजिम ने कहा—

'हां, अब्बाजान ! मेरी तो वह बहुत इज्जत करती है और भी तो किसी से उस का कोई झगडा नही।'

मियां मैराजउद्दीन जल भुनकर राख हो गए और बोले—

'तुम इस घर में सोते रहते हो ?'

नाजिम ने पूरे सम्मान से कहा—

'अब्बा जान ! मै आपका मतलब नही समझ सका।'

'मियां मैराजुद्दीन ने क्रोध के स्वर मे कहा—

'इशरत ने मुझे घर में दाखिल होने से मना कर दिया और मेरी सख्त बेइज्जती की। प्रवीन को लड-झगड कर उसने घर से निकाल दिया और अब वह बेचारी अपनी बूआ के यहा रहती है और तुम कहते हो इशरत का किसी से झगडा ही नही हुआ ?'

'मुझे इसका पता नही लेकिन इशरत मे मुझे तो कोई खराबी दिखाई नही दी।'

'हो सकता है तुम्हें दिखाई न दी हो लेकिन मुझे दिखाई दी है। मैं अब इसकी बे राह रवियो को ज्यादा देर तक नही सह सकता।'

'तो फिर क्या किया जाए ?'

'बस यही किया जाए कि उसे उसके मैके पहुचा दिया जाए। अगर वह वहा रह कर अपनी आदते ठीक कर ले और इस बात का विश्वास हो जाए कि आगे को वह किसी से झगड़ा नही करेगी और अमन चैन से इस घर में रहेगी तो फिर उसे इस घर मे वापस आने की इजाजत होगी। नही तो उसे तलाक देनी होगी।'

'लेकिन अब्बा जान ! तलाक की तो तब नौबत आती है जब मियां बीवी में कोई ऐसा झगडा हो जाय जो निपटाए से न निपट सके। इशरत से मेरा कभी कोई साधारण सा झगड़ा भी नही हुआ। मै, किस जुर्म में उसे मैके भिजवा दू ? और आखिर मे उसे तलाक दे दू ?'

मिया मैराजउद्दीन ने गरजते हुए कहा—

'तुम से झगडा नही हुआ तो क्या हुआ ? मुझसे और प्रवीन से तो हुआ है ?'

'मगर उससे इशरत को मैके भिजवाने या तलाक देने की वजह तो पैदा नही होती। वह तो उस सूरत में हो सकता है अगर उसका मुझ से कोई झगड़ा हुआ हो।'

'बेटा ! छोटों को बड़ों का कहना मानना चाहिए ?'

'मैंने आज तक आपका हुक्म कभी नहीं टाला और न टालूंगा

लेकिन ऐसी बाते जिनका सम्बन्ध मेरी जात से है और जिनके बारे में मै शरअन आजाद हू उनके बारे में अगर आप कोई न मानने वाली राय देगे तो उसके न मानने से आपकी इज्जत मे कोई कमी नही आती ।'

मिया मैराजउद्दीन के पास नाजिम की इस बात का कोई उत्तर न था। आखिर उन्होने हार कर कहा—

'क्या तुम अपने बाप और बहिन को अपनी बीवी के हाथो बे इज्जत होते देख सकते हो ? क्या तुम्हारी गैरत इस बात की इजाजत देती है कि बाप और बहिन की बेइज्जती होते देखो और खामोश रहो ?'

'मै कभी आपकी बेइज्जती होते नही देख सकता । अगर आपने यह शादी मेरी राय से की होती तो शायद मै इशरत से वही व्यवहार करता जिसकी राय आपने मुझे अभी-अभी दी है । लेकिन आपने इस बारे मे मेरी राय तक लेना या मेरे विरोध को ध्यान में रखना उचित नही समझा । उसे अपनी खानदानी इज्जत और परम्परा के विरुद्ध समझा और मेरी मर्जी के खिलाफ शादी कर दी । शिकायत तो मुझे करनी चाहिए थी मगर हैरानी है कि मै तो इशरत से खुश हूं और आप परेशान ।'

मिया मैराजउद्दीन ने पूरे धैर्य के साथ कहा—

'बेटा ! बच्चों को बुजुर्गों का कहना मानना चाहिए । मैने जो कुछ कहा है वही करो । मै अब अपनी ज्यादा बेइज्जती नही सह सकता ।'

नाजिम ने कहा—

'अब्बा जान ! मेरी मर्जी के खिलाफ शादी करते वक्त भी आपका यही कहना था कि मै बुजुर्गों का हुक्म मानू और अपनी पसन्द ना पसन्द का कोई ख्याल न करूं । जब मैने आपके हुक्म के मुताबिक शादी कर ली तो अब आप यह कह रहे है कि मै इशरत को मैके पहुंचा दू । और अगर जरूरत महसूस हो तो उसे तलाक दे दू । हालाकि मुझे इशरत के खिलाफ कोई शिकायत नही । अब भी आप यही कह रहे है कि छोटों को

बुजुर्गों का कहना मानना चाहिए। क्या मैं आदर के साथ यह पूछ सकता हूं कि छोटों को अपनी जिन्दगी के बारे मे कोई अधिकार भी है या नही ? क्या ये सब अधिकार बुजुर्गों को ही मिल चुके है ?'

यह सुनकर मियां मैराज उद्दीन को बहुत क्रोध आया। और लाल पीले होकर कहने लगे--

'नाजिम ! तुम्हे वही करना पड़ेगा जो मैं कहता हू।'

नाजिम ने आदुर और नम्रतापूर्वक कहा—

'मैं आपका हुक्म मानना अपना फर्ज समझता हू। मगर अपनी ब्याहता के बारे मे आप की राय को ठीक नही समझता। इशरत का मुझसे कोई झगड़ा नही। सिर्फ आपके कहने से उसका हक मारना इखलाक और शरअ दोनों तरह से ठीक नही।'

मियां मैराज उद्दीन ने क्रोध से उफनते हुए कहा—

'अगर तुमने दो दिन के अन्दर २ इशरत को मैके न भेजा तो तुम्हे मेरा मकान खाली करना पड़ेगा। मैं ऐसी गुस्ताख औलाद से ऐसे ही अच्छा हू।'

नाजिम ने उठते हुए कहा—

'अब्बा जान ! मैं इस बारे में सोचूगा और देखूगा कि आपका हुक्म मान सकता हू या नहीं।'

'बहुत अच्छा।'

नाजिम वापस अपने कमरे मे आकर बैठ गया। और इन नई समस्याओ पर विचार करने लगा।

जब मियां मैराज उद्दीन ने नाजिम को बुला भेजा था तो इशरत को भी पता चल गया था। उसने अपनी एक नौकरानी को जो मैके से ही उसके साथ आई थी वास्तविकता जानने के लिए भेजा। यह नौकरानी कमरे के बाहर खड़ी थी और पिता-पुत्र की बातचीत सुन रही थी उसने जाकर इशरत को पूरा वृत्तान्त कह सुनाया। इशरत यह सुनकर घबराई और उसने उसी समय अपनी नौकरानी को पिता के घर भेज

दिया ताकि उसके माता-पिता को यहां की घटनाओं जी सूचना दे दे। नौकरानी को भेजकर इशरत ने नाजिम के कमरे में प्रवेश करते हुए कहा—

'क्या अब्बा जान ने बुलाया था आपको ?'

'हा, उन्होने ही बुलाया था।'

'क्या बात थी ?'

'कोई खास बात नही थी।'

'फिर भी कुछ तो होगी ?'

'सिर्फ यही कहा है उन्होने कि या तो इशरत को उसके मैके पहुंचा दो या मेरा मकान खाली कर दो। और उसे लेकर किसी और जगह जा रहो। बस इतनी सी बात थी।'

'तो क्या आपके लिए यह कोई खास बात ही नही ?'

'ऐसी बाते अक्सर होती ही रहती है।'

'मेरे नजदीक तो यह बात बहुत बडी है।'

'होगी।'

'तो फिर आपने सोचा कुछ ?'

'हा, सोच लिया है।'

'क्या सोचा है ?'

'यही कि कल शाम तक इस मकान को खाली कर दे और किसी दूसरी जगह जा रहे।'

'तो मतलब यह हुआ कि बना बनाया घर तो छोड़ दे और नया घर बसाएं ?'

'हां, मेरा भी यही ख्याल है।'

'लेकिन मै तो ऐसा नही कर सकती।'

'न करो। तुम यहां रहो। मै खुद यहा से किसी और जगह जा रहूंगा।'

'मै अकेली यहां रहकर क्या करूंगी ?'

'यह तुम खुद साच ला ।

'अगर आप इस घर में रहना चाहते हों तो किसी की हिम्मत नहीं कि हमें यहां से निकाल सके । मैं देखूगी कि कौन हमें इस मकान से निकालता है ?'

'तुम यह कर सकती हो लेकिन मै नही कर सकता ।'

'क्यों ?'

'मै अपने अब्बा की बेइज्जती नही कर सकता । अगर उन्होंने मुझे इस घर से निकल जाने को कह दिया तो मै उनका हुक्म पूरा करूगा । और यहा कभी नही रहूगा ।'

इशरत कितनी ही देर तक नाजिम से बातें करती रही और उसे इस बात के लिए तैयार करती रही कि वह अपने पिता की आज्ञा मानने से इनकार कर दे और इस मकान को न छोड़े । लेकिन नाजिम ने ऐसा करने से इनकार कर दिया ।

इधर नौकरानी ने इशरत के पिता के घर पहुंचकर पूरी घटना उसके माता-पिता को कह सुनाई । यह सुनकर तो इशरत की मां अपने केश नोचने लगी और रोने लगी । किन्तु ख्वाजा अजीज उद्दीन ने उसे धैर्य दिलाते हुए कहा—

'तुम ने खामखा रोना-धोना शुरु कर दिया है । लडकीवालों के लिए यह कोई नई बात नही । तुम विश्वास रखो मै उस बूढे बदमाश को ऐसा ठीक करूंगा कि आगे को फिर कभी ऐसी बात न करेगा । और अपने नौजवान बेटे को अपनी बीवी छोड़ने की राय न देगा । पिछली बार जब इशरत यहां आई थी तो उसने मुझे बताया था कि यह मैराज उद्दीन बहुत बदतमीज है और बात २ पर जनानखाने में घुसा आता है । मै यह चाहता था कि कोई मौका मिले तो उसकी दाढ़ी नोचू । तुम धैर्य रखो । मै अभी जाकर उसका मिजाज ठीक करता हू । उसने हमे समझा क्या है ?'

पत्नी ने रोते हुए कहा—

'हाय, हाय, मेरी बेटी की शादी को अभी दिन ही कितने हुए है ?

वह बेचारा लड़का तो कुछ कहता नहीं, इस बूढ़े ने उसका नाक में दम कर रखा है। कैसा बुरा वक्त आ गया है। क्या किसी ससुर ने अपने बेटे को यह राय दी है कि वह अपनी बीवी को तलाक दे दे ? तभी तो लोग कहते हैं कि प्रलय पास आ गई है। हाय, हाय, मेरी बेटी क्या करती होगी ? वह तो निगोड़ी बड़ी सीधी-सादी है। उसने ऐसी बातें काहे को सुनी थी। अगर मेरी बेटी को कुछ हो गया तो मैं जिन्दा नहीं रहूंगी।'

यह कहकर इशरत की मा ने चीखना आरम्भ कर दिया और जोर-जोर से रोने लगी। ख्वाजा अजीज-उद्दीन ने कहा—

'यह तुम क्या कर रही हो ? खामखा रोना शुरु कर दिया है तुमने। अभी तेल देखो तेल की धार देखो।'

बुढिया ने रोते हुए कहा—

'ये ही छोटी २ बातें बढ जाया करती हैं। अगर अभी उस बूढे बदमाश के मुह मे लगाम न लगा दी गई तो मामला ज्यादा नाजुक हो जाएगा।'

ख्वाजा अजीज उद्दीन ने उसे दिलासा देते हुए कहा—

'क्या तुमने मुझे बुजदिल समझ रखा है ? मैं उस पाजी की ऐसी दुर्गत बनाऊगा कि सारी उमर याद रखेगा। उसे भी याद रहेगा कि किसी शरीफ आदमी से पाला पड़ा था। इशरत और नाजिम उसी मकान में रहेगे। दुनिया की कोई ताकत उन्हे वहा से नही निकाल सकती। हां, उस बूढे को यह मकान जरूर छोड़ना पड़ेगा।'

'तो क्या आप बाते ही बनाते रहेगे या कुछ करेगे भी ? खुदा के लिए अभी वहां जाइए और मेरी बेटी को दिलासा दीजए। वह निगोडी तो बडी नरम दिल है। उसने ऐसी कडवी-कसैली कब सुनी थी ? मुझे तो डर है कि अगर आपने वहा पहुंचने में देर कर दी तो कही वह छत पर से कूदकर अपनी जान न दे दे।'

'बहुत अच्छा, मैं अभी जाता हू। लेकिन देखो, तुम तसल्ली रखो। ज्यादा घबराने की जरूरत नही। खुदा ने चाहा तो मैं सारा मामला ठीक ठाक करके आऊगा।'

'फर जल्दा जाइय । दर करना ठाक नहा ।

यह सुनकर ख्वाजा अजीज उद्दीन ने शीघ्रता से वस्त्र बदले और कार मे बैठकर चल दिया । मिया मैराज उद्दीन के कमरे मे पहुचा तो वे समाचार-पत्र सामने रखे बैठे थे । उसे आते देखकर बोले—

'आइये, कैसे तशरीफ लाए ?'

उनके स्वर मे वह पहले सा माधुर्य न था । अजीज उद्दीन समझ गया कि वास्तव मे दशा शोचनीय है । उसने बैठते हुए कहा—

'हा साहब ! एक काम से ही आ गया हू । बात यह है कि बेटियां ब्याहकर मा बाप के सिर के बाल दूसरो के पाव के तले आ जाते है और न चाहते हुए भी ऐसी २ सख्त बाते सुननी पडती है जिन्हे कोई शरमदार सहन नही कर सकता । आपका कोई दोष नही । सारा कसूर हमारा है । आखिर बेटी वाले जो हुए ।'

मिया मैराज उद्दीन को मालूम हो गया कि सारी बात उनके समधियाने मे पहुच चुकी है । उन्होने थोड़ी देर मौन रहने के पश्चात् कहा—

'ख्वाजा साहब ! बात असल मे यह है कि मै इशरत को अपनी बेटी समझता हू । मेरे ही जोर देने पर यह शादी हुई । हालाकि मेरा बेटा और बेटी दोनों इसके खिलाफ थे लेकिन उसका बदला इशरत ने मुझे यह दिया कि कितनी ही बार मेरी बेइज्जती की ।'

ख्वाजा अजीजउद्दीन ने बात काटते हुए कहा—

'यह एक नई बात सुनी है आपकी जुबानी कि आप का लड़का और लडकी इस शादी के खिलाफ थे और आपने इस शादी पर जोर दे कर हम पर बहुत बडा अहसान किया । जैसे हमें और कोई रिश्ता मिलता ही नही था । खैर, अब आप यह बताइये कि अब आप का लड़का इशरत के खिलाफ है या आप ।'

मिया मैराजउद्दीन ने कुछ रुक कर कहा—

'मेरे लड़के पर तो उसने मालूम नही क्या जादू कर रखा है कि वह उस का कलमा पढ़ता है ।'

'तो मतलब यह है कि मियां बीवी तो आपस में खुश हैं लेकिन आपको उन का यही बर्ताव अच्छा मालूम नहीं देता। यही बात है न ?

'यह गलत है। मैं उन दोनों के मेल से खुश हू मगर चाहता हू कि इशरत मुझे भी खुश रखे।'

'मुआफ कीजिये। मैं आप की इस राय के खिलाफ हू। मेरी लड़की आप के लडके को तो खुश रख सकती है मगर आपको खुश रखना उस के फर्ज में शामिल नही। और हा, क्या आप को यह कहते कुछ शरम नही आई कि तुम्हारी लडकी मुझे भी खुश रखे ? आप कौन है ?'

मिया मैराजउद्दीन कुछ घबरा कर बोले—

'आपने मेरा मतलब गलत समझा है। मै पहले ही कह चुका हूं कि इशरत मेरी बेटी है। खुश रखने से मेरा मतलब यह है कि वह मेरी बेइज्जती न करे। वह कई बार मेरी बेइज्जती कर चुकी है और मुझे जनानखाना से निकाल कर यहां भेज चुकी है। अब मै गैरों की तरह यहां रहता हूं।'

'तो मतलब यह कि अगर आप जनानखाने के पास ही जमे रहते तो खुश होते ? लेकिन क्या आपको जवान बेटे और बहू के पास रहते हुए शरम न आती ? बड़े बूढों को तो खुद ही यह चाहिये कि जनानखाने से दूर रहे मगर एक आप है कि इस में अपनी बेइज्जती समझते है।'

'तो क्या आप मुझे बदमाश समझते है ?'

'कुछ हैरानी नही कि आप हों। क्यो कि इशरत मुझे यह बता चुकी है कि आप चुपके से जनानखाने में घुस आते है और आखिर उस ने मजबूर होकर आप को जनानखाने मे आने से रोक दिया।'

मियां मैराजउद्दीन ने धैर्य से कहा—

'ख्वाजा साहब ! आप बहुत बढ रहे है। यह बात बिल्कुल गलत है। पहले आप कह रहे थे कि बेटियां देने के बाद सिर के बाल दूसरों के पांव तले चले जाते है और अब इसी सांस में आप मुझे बदमाश कह रहे है। यह आप के लिये ठीक नहीं।'

ख्वाजा अज़ीजउद्दीन ने बड़ी लापरवाही से कहा—

'मैं ने जो कुछ कहा है उस का आपकी बातों से भी समर्थन होता है। जैसे यह कि इशरत अपने मियां को खुश रखती है मगर मुझे खुश नही रखती। अब आप ही किसी से यह पूछ लीजिये कि इस का मतलब क्या है ?'

'तो आप साफ कहिये न कि मैं बदमाश हू ?'

'आप न होते तो सिर्फ आपसी मतभेद की वजह से अपने लडके को यह राय न देते कि अपनी बीवी को तलाक दे दो। आप मेरी बेटी को तलाक दिलवाने और घर से निकलवाने वाले कौन होते है ? क्या तुम ने मुझे कमीना ख्याल किया है ?'

यह सुन कर मियामैराजउद्दीन को भी क्रोध आ गया और बोले—

'ख्वाजा साहब ! जुबान को लगाम लगाइये। जैसे आप बदतमीज है वैसी आप की लड़की है। जब तक आप दोनों सुधार न करे इशरत के लिये इस घर में जगह नही हो सकती।'

ख्वाजा अजीजउद्दीन ने कड़क कर कहा—

'तो यों कहो न कि तुम इन कमीनी हरकतों से मेरी लडकी को तंग करना चाहते हो। लेकिन मै भी इज्जत रखता हूं और तुम्हे तुम्हारी कमीनी हरकतों का मजा चखा सकता हू।'

मियां मैराजउद्दीन ने क्रोध से गरजते हुए कहा—

'अब तुम्हारी लडकी को मै तलाक दिलवा कर रहूगा।'

'मै तुम्हे अपनी लड़की से जूते लगवा कर रहूगा। अगर तुमने फिर कभी जनानखाने की तरफ मुह किया तो खोपडी सलामत ले कर नही आओगे। मै देखता हूं तुम मेरी लड़की को कैसे घर से निकलवाते हो और उसे तलाक दिलवाते हो।'

मियां मैराजउद्दीन और ख्वाजा अजीजउद्दीन ने परस्पर एक दूसरे का खूब मान सम्मान किया। यदि एक दो आदमी समय पर वहां पहुंच न जाते तो दोनों में हाथा पाई तक हो जाती

## ११

**

जब नाजिम को पता चला कि इशरत के पिता ने आकर उस के पिता का अपमान किया है तो उसे बहुत दुःख हुआ। उसे यह भी सह्य न था कि इशरत उस के पिता का अपमान करे। वह केवल इस लिए मौन था और इस झगडे मे हाथ डालना नही चाहता था कि उस घर की शान्ति को भग करने मे स्वय उस के पिता का हाथ था। वह और प्रवीन इस विवाह के सख्त विरुद्ध थे किन्तु उन के पिता ने अपनी हठ पर दृढ रह कर यह बेजोड विवाह करवा दिया और घर की तबाही को निमत्रण दिया। नाजिम यह भी न चाहता था कि उस भूल का फल उस के पिता को इतना भुगतना पडे जिस से उन के सम्मान मे किसी प्रकार का अन्तर आए। जब उस ने सुना कि इशरत के बाद ख्वाजा अजीजउद्दीन ने भी उस के पिता के सम्मान तर आक्रमण किया तो उसने यही उचित समझा कि मकान छोड दे और किसी दूसरे स्थान पर जा रहे। क्योंकि उसे यह विश्वास था कि यदि वह वही रहा तो झगडे की यह आग और अधिक भड़केगी और उसके पिता की रही सही इज्जत भी जाती रहेगी।

दूसरे दिन ही उसने शहर के किसी मुहल्ले में एक मकान किराये पर ले लिया। इशरत ने वहां जाने से उसे रोकना चाहा किन्तु उसने इस की बात मानने से इनकार कर दिया। इस बारे में इन दोनों में

झगड़ा भी हुआ और इशरत का यह भ्रम भी खुल गया कि वह अपने पति की आज्ञा कारिणी पत्नी है। उस ने अपने स्वभाव के अनुसार नाजिम के भी खूब लत्ते लिये किन्तु नाजिम ने उस की बातो का कोई उत्तर न दिया और साधारण सा सामान और वस्त्र आदि ले कर किराए के मकान मे जा रहा। उस के जाने के उपरान्त इशरत अपने पिता के घर चली गई। अब मिया मैराजउद्दीन वापस अपने पहले कमरे मे आ गए। यहां आते ही उन्होंने प्रवीन को उस की बूआ के घर से बुलवा लिया और घर मे पुनः पहले की सी शान्ति छा गई। अन्तर केवल इतना था कि इशरत के साथ नाजिम भी उस मकान को छोड चुका था। मिया मैराजउद्दीन को अपने बेटे के घर से चले जाने का दुःख हुआ परन्तु इशरत से छुटकारा प्राप्त करके उन्हे प्रसन्नता भी प्राप्त हुई।

नए मकान मे केवल नाजिम था या उसका एक नौकर। उस का चित्त बहुत व्याकुल रहने लगा। वह दो-दो तीन-तीन दिन तक कालिज न जाता और घर मे पडा रहता। ताहिरा का प्यार सतत उसके हृदय मे सुलग रहा था। उसने केवल पिता और प्रवीन के कहने सुनने से इशरत से विवाह कर लिया था अन्यथा वह इस के लिये तैयार न था। अब जब विवाह के पश्चात् विपरीत स्थितियो का सामना हुआ तो उस का प्रभाव उस के स्वास्थ्य पर बहुत बुरा पड़ा। वह पहले ही ताहिरा के प्रेम मे घुल रहा था और व्याकुल रहता था किन्तु इन घटनाओ के कारण उस का चित्त और अधिक खिन्न हो गया था।

कालेज मे कभी कभार ताहिरा से उसकी भेट हो जाती किन्तु भेटों में वह पहले का सा माधुर्य न था। केवल कुछ रसमी बाते होती, और बस। नाजिम यह चाहता था कि ताहिरा को वास्तविक स्थिति से परिचित कराए किन्तु उसका कोई अवसर ही नही मिलता था। अब तो ताहिरा ने उसके मकान पर भी आना बन्द कर दिया था। आती भी तो इशरत की उपस्थिति में। वह नाजिम से क्या बात चीत कर सकती थी? एक दिन नाजिम क्लास रूम में लैक्चर दे रहा था। प्रवीन और

ताहिरा उसी बेंच पर बैठी थीं। नाजिम के पीले पड़े चेहरे और बिखरे बालों से प्रतीत होता था कि वह आजकल कुछ दु:खी है। ताहिरा ने धीरे से प्रवीन से पूछा—

'क्या बात है नाजिम फिर दु:खी दिखाई पड़ते हैं।'

प्रवीन ने धीरे से कहा—

'अपने दिल से पूछो।'

ताहिरा ने बात-चीत को आगे बढाना चाहा किन्तु प्रवीन ने यह कहते हुए मौन कर दिया—

'पीरियड खत्म होने पर आप से बात करूगी।'

पीरियड समाप्त होने के पश्चात् नाजिम तो प्रतिदिन के समान स्टाफ रूम मे जा बैठा। प्रवीन और ताहिरा बाहर घास के मैदान में जा बैठी। ताहिरा ने बैठते हुए कहा।—

'अच्छा, बताओ, क्या बात है। नाजिम क्यों परेशान दिखाई पड़ते हैं?

प्रवीन के नेत्रों से अश्रुधारा बहने लगी। उसने रोते हुए घर की पूर्ण स्थिति सामने रख दी। ताहिरा मौन सुनती रही। उसके नेत्र भी डबडबा आए और पूरी कथा सुनने के पश्चात् बोली—

'मेरा विचार था कि शादी के बाद नाजिम खुश रह सकेगा। मुझे ये बाते सुनकर बहुत दु:ख हुआ है। मै अब भी उनको वैसा ही चाहती हूं जैसा पहले। मुझसे उनकी परेशानी देखी नही जाती।'

प्रवीन ने व्यग्य पूर्ण स्वर में कहा—

'अगर तुम्हें उनसे वैसा ही प्यार है तो फिर यह दूर-दूर रहने का मतलब क्या है? वे तो तुमसे बात करने के लिए तरसते हैं और तुम उन से दौड़ती हो।'

ताहिरा ने एक ठण्डी आह भर कर कहा—

'प्रवीन! तुम मेरे दिल की हालत को क्या जानो? मै अब तक प्यार की उस आग में जल रही हूं जो मेरे नाजिम ने मेरे दिल में सुल-

गाई थी। मैं उन से दौड़ती हूं इसलिए नहीं कि मेरे प्यार में कुछ कमी हो गई बल्कि इसलिए कि कही हम दोनों के बढते सम्बन्धों से नाजिम की जिदन्गी पर कोई बुरा असर न पड़े। और वे मेरे प्यार मे पडकर अपनी बीवी को न भूल जाए और वह बेचारी उस हक से वचित रह जाए जो उसे शरअ ने दिया है। मैं नाजिम को प्यार करती हूं लेकिन उन पर यही प्रकट करती हू कि मेरा प्यार कम हो चुका है या सिरे से ही नही है ताकि वे मुझे भूल जाएं और अपनी बीवी के साथ खुश-खुश रहे।'

प्रवीन ने कहा—

'हां, यह तो उन्हों ने भी अक्सर कहा है कि ताहिरा मुझे भुला चुकी है और अपने सारे वचनों पर पानी फेर चुकी है। अगर उन्हे बीवी अच्छी मिल पाती तो शायद वे इसी भूल में पडकर तुम्हे भूल जाते मगर इशरत ने हमारे घर आकर जो गुल खिलाए है वे मै तुम्हे बता चुकी हू। नतीजा यह हुआ है कि भाई जान पहले से भी ज्यादा परेशान रहने लगे है। ताहिरा ! क्या ही अच्छा होता। अगर तुम्हारी शादी भाईजान से हो जाती। वे भी खुश रहते और मुझे भी एक ऐसी भाभी मिल जाती जिसके मै नखरे सह सकती।'

ताहिरा थोड़ी देर तक मौन बैठी कुछ सोचती रही। फिर बोली—

'प्रवीन ! मैं तुम्हें पहले बता चुकी हू कि मेरे प्यार का मतलब शादी नही। मै तो प्यार मे जल जलकर जान दे देना चाहती हू। यही मेरी मर्जी है और यह मेरी मर्जी सयोग से नही वियोग से ही पूरी हो सकती है। लेकिन अगर नाजिम की खुशी इसी मे होती तो मैं उनकी खुशी को अपनी इच्छा पर पहला स्थान देती और उन से शादी कर लेती। चुनाँचे जब उन्होने पहली बार मुझ से शादी की बात चलाई तो मैंने सिर्फ उनकी खुशी का ध्यान रखते हुए कोई इनकार न किया। चाहे शादी हो जाने पर मेरे प्यार की मौत हो जाती क्योंकि उसके बाद वही प्यार रह जाता जो मियां बीवी में होता है। लेकिन मेरा प्यार इस से अलग है। उसका मतलब मिलाप नहीं जुदाई है। ताकि प्यार की आग

और ज्यादा भड़के और मुझे जलाकर भस्म कर दे। मेरी यह मर्जी तुम्हें बड़ी विचित्र मालूम होगी मगर है यही।'

प्रवीन ने चिन्ताजनक स्वर में कहा—

'तो क्या तुम प्यार भाई जान से करती रहोगी और शादी किसी और से ?'

ताहिरा ने तड़प कर कहा—

'कभी नहीं। मैं सारी उमर अपने प्यारे नाजिम की याद में गुजार देना चाहती हू।'

'तो फिर भाई जान को भी ऐसा ही करना चाहिए।'

'हा, ऐसी हालत में कुदरती तौर पर होता यही है मगर मेरा यह हक नहीं है कि नाजिम को इस तरह की राय दू, क्योंकि यह एक तरह की खुद गर्जी है और प्रेम के विधान में इसकी इजाजत नहीं। मैं नाजिम से प्यार करती हू और अपने प्यार को बनाए रखने के लिए मिलाप से कहीं ज्यादा जुदाई चाहती हू। लेकिन अगर मैं नाजिम को भी अपनी तरह परेशान और दुःखी देखने की इच्छा करू तो यह प्यार नहीं दुश्मनी होगी। मुझे अपने प्यार से मतलब है। मेरा सिर्फ अपने देवता की पूजा करने से सम्बन्ध है। मेरा प्यार बेगरज है। मैं उसका बदला शादी नहीं समझती।'

प्रवीन ने व्याकुल होते हुए कहा—

'अगर तुम्हारे प्यार की तारीफ यही है जो तुमने बताई है तो साफ है कि भाईजान की परेशानियां और बढेगी। वे पहले ही बहुत ज्यादा फिक्रमन्द रहते हैं और सिर्फ यह सोचकर उनका मन बहल जाता है कि तुम्हें असल में उन से कोई प्यार नहीं। लेकिन अगर उन्हे यह पता चल गया कि तुम उनके प्यार में इतनी आगे जा चुकी हो तो उनके पागल होने में कोई कसर न रहेगी।'

ताहिरा कुछ सोच में पड़ गई और फिर बोली—

'उन्हे पता नहीं चलना चाहिए और न मैं उन पर यह प्रकट होने दूंगी।'

'लेकिन तुम जानती हो इश्क और मुश्क छुपाए नहीं छुप सकते। एक

न एक दिन उन्हे जरूर तुम्हारे दिल की हालत का पता चल जाएगा।'

'मै उन के पास जा कर उन्हे तसल्ली दे आऊगी और उनसे प्रार्थना करूंगी कि मुझे भूल जाए। और हा, तुम्हे उनके मकान का कुछ पता है ? मै आज ही उनके पास जाऊगी।'

'उन का मकान भाटी दरवाजा के अन्दर थोड़ी ही दूर पर है।'

'बहुत अच्छा। मै उनसे मिलूगी। लेकिन देखो, जो बाते मैने तुम्हे बताई है उनकी चर्चा उन से न करना।'

'बहुत अच्छा। अगर तुम्हारी मर्जी यही है तो मै उनसे चर्चा नही करूंगी।'

प्रवीन यह कहते हुए उठ खडी हुई और बोली—

'अच्छा मै तो अब जा रही हू लेकिन मेरा ख्याल है तुम आज ही भाईजान से मिल लो और किसी न किसी तरह से उन्हे तसल्ली देने की कोशिश करो। क्योकि तुम्हारे प्यार का दर्शन अजीब सा है इस लिए मै भी इस बात पर जोर नही देती कि तुम जरूर शादी ही करो। मुझे तो सिर्फ अपने भाई को खुश देखने से मतलब है। उसकी कोई सी सूरत हो मुझे इस पर कोई आपत्ति नही।'

यह कह कर प्रवीन शीघ्रता से डग भरती चली गई। ताहिरा वही बैठी रही और गहरी चिन्ता मे डूबी रही। वह स्वय तो प्यार की कड़-वाहट से नही घबराती थी। उसे तो उससे एक माधुर्य का सा अनुभव होता था किन्तु यह बात उसकी आत्मा को कष्ट पहुचा रही थी कि नाजिम दुःखी था। वह कितनी ही देर तक घास के मैदान में बैठी रही और यह सोचती रही कि नाजिम को सन्तुष्ट करने का क्या उपाय हो सकता है ? वही बैठे २ उसने चार बजा दिए। कालेज बन्द हो गया और सभी लड़के लड़कियां कालेज से चल दिए। जब वह अपने विचारों से जाग्रत हुई तो कालेज मे सन्नाटा था। उसने अपनी घड़ी की ओर देखा तो पांच बज चुके थे। वह वहां से उठी और उतावली से डग भरती कालेज के मुख्य द्वार की ओर चल दी।

## १२

**

नाजिम का मकान बहुत संक्षिप्त था। केवल दो कमरे थे और उन के आगे एक छोटा सा आंगन। एक ओर एक छोटी-सी रसोई थी और उसके सामने स्नानगृह। एक कमरा छोटा था और दूसरा बड़ा। छोटे कमरे में घरका छोटा मोटा सामान रखा हुआ था और बड़े में दो तीन कुर्सियां पड़ी थी। एक ओर एक चारपाई बिछी थी। यही कमरा नाजिम के बैठने और सोने का था। सायंकाल नौकर कुर्सी निकाल कर आंगन में बिछा देता और नाजिम रात गए तक यहा बैठा रहता और जीवन की बीती घटनाओं पर विचार करता रहता। उसने जन्म से अब तक का समय एक सुन्दर कोठी में बिताया था जो हर प्रकार के आवश्यक सामान से सुसज्जित थी। उसके सामने यह छोटा सा मकान अकिंचन सी वस्तु था किन्तु इस मकान में उसे जो शान्ति और सुख प्राप्त हुआ वह उस बड़ी कोठी में भी न प्राप्त हुआ था। इस मे सुविधा का कोई सामान न था किन्तु यहां इशरत के फैलाए झगड़े और प्राचीनतावादी पिता की मान्यताएं और बन्धन न थे। यही कारण था कि वह इस मकान को उस कोठी से कहीं अधिक समझता था। उस संक्षिप्त से मकान में केवल दो व्यक्ति थे। एक वह स्वयं और दूसरा उसका नौकर।

एक दिन नाजिम कालेज से छुट्टी पा कर घर आया और कमरे से निकल आंगन में आ कर बैठ गया। इतने में नौकर ने आकर कहा—

'सरकार ! एक लड़की आप से मिलना चाहती है। शायद कालेज की लडकी है वह।'

नाजिम ने कहा—

'उसे अन्दर ले आओ।'

यह सुनकर नौकर बाहर गया और ताहिरा को अपने साथ लेकर अन्दर आ गया। नाजिम ने उसे देखते हुए कहा—

'अख्खाह, ताहिरा ! तुम ? इस मकान का रास्ता कैसे मालूम हो गया तुम्हे ?'

'प्रवीन ने बताया था।'

ताहिरा ने बैठते हुए कहा। नाजिम कुछ देर तक मौन उसकी ओर देखता रहा फिर बोला—

'हा, तो कैसे आई हो ?'

ताहिरा ने मुस्कराते हुए कहा—

'वैसे ही मिलने के लिए आ गई। पहले भी तो कई बार आ चुकी हू।'

नाजिम ने एक ठण्डी आह भरी और बोला—

'हा, यह तो मुझे भी मालूम है कि तुम पहले भी कई बार आ चुकी हो। मगर इस वक्त और उस वक्त के आने में बड़ा फर्क है।'

'क्या फर्क है ?'

'यही कि पहले तुम सिर्फ नाजिम से मिलने आया करती थी और अब डाक्टर या प्रोफेसर नाजिम से मिलने आई हो। पहले मेरे दिल के घावों पर प्यार के मरहम का फाहा रखने आया करती थी आज यह देखने आई हो कि पिंजरे में बन्द पंछी खत्म हो चुका है या अभी उसमें जिन्दा रहने के कुछ निशान बाकी है।'

'पिजरा कौन सा ?'

'वही पिजरा जिसमें तुमने मुझे शादी के लिए तैयार करके बन्द कर दिया।'

'प्रोफेसर साहब ! ये आज आप किस तरह की बाते कर रहे है ?'

'तभी तो मैंने कहा था कि तुम प्रोफेसर नाजिम से मिलने आई हो।'

'तो क्या मै न आया करू ?'

'अगर तुम नाजिम से मिलने आती तो मै यह समझता कि प्यार की वे पुरानी मधुर मुलकाते अभी तक तुम्हारी निगाह मे नाच रही है। लेकिन प्रोफेसर नाजिम से मिलकर तुमने सिद्ध कर दिया कि तुम्हारी याद-दाश्त कमजोर है। हा, तो मैंने तुम्हे आने से नही रोका। शौक से आओ।'

'आप अपना घर छोड कर यहा क्यो आ गए है ?'

तुम्हे मेरे घर छोडने का दु ख हो रहा है ? में इस दुनिया को छोडने की चिन्ता मे हू।'

यह सुन कर ताहिरा के हृदय मे एक तीर सा लगा किन्तु स्वय पर अकुश रखती हुई बोली—

'आप पिछली बातों को भूल जाइए। जिन्दगी में ऐसी छोटी मोटी घटनाए कम ज्यादा सभी के सामने आती है मगर उनसे असर लेकर कोई आदमी इस जिन्दगी से नफरत नही करने लगता।'

'यह तुम अपने बारे मे तो कह सकती हो मेरे बारे मे नही कह सकती। मैंने सिर्फ तुम्हे खुश करने के लिए शादी कर ली मगर तुम्हे खुश करने का नतीजा उलटा निकला। तुमने मिलना-जुलना तक छोड दिया।'

ताहिरा का मन विवश रोने को हुआ किन्तु उसने अपनी भावनाओं को पूरे धैर्य के साथ वश मे कर लिया। नाजिम कुछ देर तक मौन रहा। फिर बोला—

'हा, तो क्या कुसूर हुआ है मुझसे ?'

'कुसूर आप से नही हुआ मुझसे हुआ है।'

'मै तुम्हारा मतलब नही समझ सका।'

'मेरा मतलब यह है कि औरत बहुत ज्यादा भावुक होती है। वह मामूली सी बात का असर ले लेती है लेकिन बाद मे उसे शर्मिन्दा होना पड़ता है।'

'मतलब यह है कि तुम मुझ पर प्यार जिता कर शर्मिन्दा हुई हो।'

'शायद ऐसा ही हो।'

नाजिम के नेत्रो से आसू गिरने लगे और बोला—

'ताहिरा! तुम्हे अपने काम पर शरम भी आई तो उस वक्त जब मेरे लिए ऐसी शरम महसूस करने का कोई साधन न रहा। तुमने एक मकान को आग लगा दी। जब वह जल कर राख हो गया तो तुम्हे अपने उस काम पर दु.ख हुआ। क्या [illegible] दुख।'

'मेरा ख्याल था कि शादी के बाद आप इन बातो को खुद-ब-खुद भूल जाएगे।'

'अच्छा ख्याल था और शायद यही होता अगर मेरी उस जगह शादी होती जहा मै करना चाहता था।'

'किस से करना चाहते थे आप?'

'तुमसे।'

'मै यह चाहती हूं कि आप घर वापस चले जाएं। यहां आप अकेले है।'

'तुम्हारी याद भी तो है।'

'सिर्फ याद से क्या होता है?'

'यही याद तो अब मेरी जिन्दगी की पूजी है। 'हां, अगर तुम उसे छोड़ बैठी हो तो ठीक है। लेकिन तुमने मेरे बारे में क्यों यह मान लिया है कि मै ऐसा कर सकता हू?'

'इसलिए कि ये सिर्फ कहने की बातें होती है। व्यवहार में उनकी कोई हैसियत नही होती।'

'हो सकता है ऐसा ही हो। लेकिन अभी तक मेरी करनी और कथनी मे कोई फर्क नही आया।'

ताहिरा ने गम्भीरता से कहा—

'लोग तो ग्रामतौर पर यही कहते हैं कि प्यार कहने की चीज है, व्यवहार की नही ।'

'हा, मुझे भी मालूम है कि लोग यही कहते हैं । प्यार करना एक तरह का फैशन हो चुका है और लोग उसे अपनी जिन्दगी का एक जरूरी हिस्सा ख्याल करने लगे हैं । लेकिन जिस प्यार की मैं चर्चा करता हूं वह कुछ अलग सी चीज है । वह कही नही जाती की जाती है ।'

'लेकिन शादी के बाद अपनी ब्याहता को छोडकर किसी और से प्यार करना कहां की बुद्धिमानी है ?'

जब तक दुनिया मे मेरे जैसे बेवकूफ और आप जैसे बुद्धिमान लोग बसते है यह होता रहेगा । बुद्धिमान अपना पीछा छुडाने के लिए बेवकूफों को शादियो के लिए उकसाते रहेगे और बेव[illegible] की खुशी का ख्याल करके शादियां करते रहेगे । इसके बाद बुद्धिमान् तो उनकी शादियों को सनद के रूप में दिखाकर उन्हे सभ्यता का पाठ पढ़ाते रहेगे और ये बेवकूफ अपनी पहली हठ पर ही डटे रहकर और ज्यादा बेवकूफ बनते रहेगे । ताहिरा ! यह चक्कर तो चलता ही रहेगा। उसकी रोक-थाम की यही एक सूरत है कि या तो सब बुद्धिमान् हो जाए और या सब बेवकूफ बन जाएं ।'

'मेरी बात का आपने कोई उत्तर नही दिया । मेरा मतलब यह था कि मर्द के प्यार की हकदार उसकी बीवी है और अगर वह उसमे से किसी और औरत को हकदार बनाता है तो इखलाक के लिहाज से मुजरिम है ।'

'क्या मैंने तुम्हे अपनी बीवी बनाने से इन्कार किया था ?'

'सवाल था का नही है का है ।'

'तब अब भी तो मेरी तरफ से इकार नही ।'

'और आप की पहली बीवी ?'

'वह भी तो तुम्हारी ही लाई हुई है ? या यो कहो कि तुम्हारी राय से लाई हुई है ।'

'लेकिन एक बीवी के होते दूसरी को ब्याहकर लाना भी तो ऐब में शामिल है ?'

'हा, यह तो सही है।'

'फिर इस मामले पर बातचीत करना ही बेकार है।'

'हां, बिल्कुल बेकार है।'

'यह सुनकर ताहिरा कुछ सटपटा सी गई और बोली—

'यह आप क्या कह रहे है ? कोई ढग की बात ही नहीं करते। दूसरी शादी भी आप ऐब समझते है और इस बारे में किसी तरह की बातचीत करना भी बेकार समझते है आखिर आप चाहते क्या है मुझसे ?'

'बस यही चाहता हूं कि तुम अपनी करती जाओ। मै अपनी करता जा रहा हूं। तुम दीपक की तरह जलाना ही अपनी जिन्दगी का मतलब समझो मै पतगे की तरह जलने पर ही सब्र करता रहूंगा।'

ताहिरा चकित थी कि नाजिम आज किस प्रकार की बाते कर रहा है। उसने इससे पूर्व उससे कभी ऐसी बातें न की थी। वह उसके प्रेम में व्याकुल था किन्तु ताहिरा से बातचीत करते समय गम्भीर बना रहता था। उसके हृदय में प्यार की जलन थी किन्तु उसे शाब्दिक रूप देना वह प्रदर्शन मात्र समझता था। आज उसकी हरकतो और बातचीत के ढंग से एक विचित्र से उन्माद की झलक दिखाई पड़ती थी। ताहिरा ने बातों-बातो में उसे संतुष्ट करने और प्यार को केवल मधुर बातों का नाम देकर टालने का यत्न किया किन्तु नाजिम पर उसकी बातों का कोई प्रभाव न हुआ। वह यही कहता रहा कि यदि तुम्हें मुझसे प्यार करके लाज का अनुभव हुआ तो तुम छोड़ दो उसे किन्तु मै जिस आग में जल रहा हूं वह जीवन भर बुझ न सकेगी।

जब ताहिरा के समस्त बहाने निरर्थक सिद्ध हुए तो वह यह कहती हुई उठी—

'अच्छा, अब मुझे इजाजत दीजिए। मैं तो अब जा रही हूं।'

नाजिम ने कहा—

'बहुत अच्छा—खुदा हाफ़िज ।'

ताहिरा अपने गीले नेत्रों को छुपाती हुई वहां से निकली । वह वहां कुछ देर और बैठना चाहती थी किन्तु उस पर कुछ ऐसी कपकपी छाती आ रही थी कि उस पर अंकुश रखना उसके लिए कठिन हो रहा था । अन्त में उसने उचित यही समझा कि उठकर चल दे ।

नाजिम से आज्ञा लेकर वह घर से निकली । बाहर निकलते ही उसकी भावना में कुछ ऐसा ज्वार-सा उत्पन्न हुआ कि उसके मुख से हल्की-सी चीख निकल गई । उसका मन चाहता था कि धाड़े मारकर रोए किन्तु बाजार में लोगों को आते जाते देखकर मौन हो गई । एक राही ने उसकी चीख सुनी । उसने आश्चर्य से ताहिरा की ओर देखा और आगे बढ गया । ताहिरा का हृदय प्यार की अग्नि में फुका जा रहा था । नाजिम की दशा देखकर इसे और भी क्लेश हुआ और उसके हृदय की गति तीव्र हो गई । वह शीघ्रता से डग भरती बाजार से चली जा रही थी और किसी टांगे की खोज में इधर-उधर देख रही थी । जब भाटी दरवाजे के बाहर पहुची तो एक टांगे पर सवार होकर घर की ओर चल दी ।।

मार्ग में उसने सोचा कि नाजिम की बात मान ले और उसे अपने प्यार का विश्वास दिलाए । इसके साथ ही उसे यह विचार आया कि यदि उसने ऐसा किया तो वह अपने लक्ष्य पर न पहुंच सकेगी और उसके प्यार का सफर पूर्ण न हो सकेगा । उसने नाजिम के प्यार मे डूब कर अपने लिए एक मार्ग निश्चित कर रखा था जिसे वह अकेली ही तै करना चाहती थी और नाजिम को उसमें सम्मिलित करके उसे जीवन की कड़वाहट से दो चार करना नहीं चाहती थी । उसके प्यार का लक्ष्य केवल इतना था कि वह तो नाजिम के प्यार में अपमानित हो और दर २ की ठोकरें खाए किन्तु नाजिम को उन कष्टों में फंसा न देखे । और उसका निदान यही था कि नाजिम को अपनी भावनाओं से परिचित न होने दे । आरम्भ में उसने उससे प्यार जितला कर जो भूल की थी

उसने नाजिम के हृदय में प्रेम की एक ऐसी तड़प उत्पन्न कर दी थी जो कम होने के स्थान पर दिन प्रतिदिन अधिक हो रही थी। अब उस अग्नि ने एक ऐसे स्फुलिग का रूप धारण कर लिया था जो पानी डालने से और भी अधिक भड़कता है। ताहिरा ने अपने बीते प्यार को सामयिक और प्रदर्शन मात्र कह कर नाजिम की तूफानी भावनाओ को शान्त करने का यत्न किया था किन्तु उसका प्रभाव उलटा हुआ, और उसका निश्चय और भी अधिक सबल हो गया। वह उसे जीवन की कठिनाइयों से बचाने के लिए उसके निकट गई किन्तु यह विचार लेकर लौटी कि उसका निश्चय पर्वत के समान अटल है।

प्रवीन और उसके पिता की सम्मति अब यह थी कि जब इशरत उस घर से जा चुकी है तो नाजिम अपने घर लौट आए। मियां मैराज उद्दीन स्वय अपने पुत्र के पास जाकर उसे मनाना अपने अह के विरुद्ध समझते थे। अपनी मनमानी करने का उन्हे जो पारितोषिक मिला था और कुछ समय के लिए इस घर पर जो प्रलय आई थी उसका उन पर रत्ती भर प्रभाव न हुआ था और वे अभी तक अपने वंश की परम्परागत रीतियो का बोझ उठाए फिरते थे। वे इस बात के पाबन्द थे कि छोटों को बडो के आगे अवश्य हथियार डाल देने चाहिएं। छोटों को अपने जीवन के बारे मे निर्णय करने का कोई अधिकार नहीं। यह काम वृद्धो के ही कधों पर रहना चाहिए। इशरत के घर से चले जाने से तो उन्हे प्रसन्नता हुई थी किन्तु युवा पुत्र का घर से बाहर रहना उन्हें सह्य न था। वे यह भी उचित न समझते थे कि स्वयं पुत्र के पास जाएं और उसे कह सुनकर घर में लौटा लाएं क्योंकि उन्होंने प्रवीन से यह कहा कि—

'बेटी ! किसी न किसी तरह से अपने भाई को घर वापस ले आओ।'

प्रवीन ने दो चार बार कालेज में नाजिम से इस बात की चर्चा की और उसे घर वापस चलने की सम्मति दी किन्तु उसने इसका कहना

मानने से इनकार कर दिया। अन्त में वह एक दिन उसके मकान पर पहुंची और बोली—

'भाई जान ! अब तो मैं चलकर आपके मकान पर आई हू। मुझे उम्मीद है कि अब आप मेरी प्रार्थना रद नही करेगे। और मेरे साथ वापस घर चले चलेगे। आपका इस तरह अलग-अलग रहना मुझे पसन्द नहीं और फिर यह छोटा सा मकान है। कहा हमारी बढ़िया कोठी और कहां यह छोटा सा पुराना और टूटा सा मकान।'

नाजिम ने कहा—

'लेकिन मैं इस पुराने और टूटे फूटे मकान को उस कोठी से बेहतर समझता हूं।'

'क्यों ?'

'इसलिए कि उस शानदार कोठी मे वह सुख शान्ति नही जो इस छोटे से मकान में है। वहां परिवार की परम्पराओं की पाबन्दिया है। यह मकान उन पाबन्दियों से आजाद है। वहा बड़े बूढों के अहकार और छोटों की विचारगी के सिवा और कुछ नही। यहा इस छोटे से मकान में मेरा सिक्का चलता है और मेरे कामों पर किसी की निगरानी नही। मैं यही रहना चाहता हू और उस शानदार कोठी के बदले मे अपनी जिन्दगी की शान्ति और आराम बेचना नही चाहता।'

प्रवीन ने मिन्नत करते हुए कहा—

भाई जान ! आप क्या जानें कि आप की वजह से मेरे और अब्बाजान के दिल पर क्या गुजरती है ?'

'ज्यादा से ज्यादा वही गुजरती होगी जो किसी अज़ीज़ के दुनिया से उठ जाने के बाद उसके रिश्तेदारो पर गुजराती है। मगर यह दुःख कोई ज्यादा देर टिकने वाला नहीं होता। आखिर कार सबके दिलों को सब्र आ जाता है। अब्बाजान को और तुम्हें यह कुछ दिनों का दुःख है। उम्मीद है कुछ दिनों के बाद यह दुःख भी जाता रहेगा और तुम्हे कुछ यों महसूस होगा कि नाजिम शायद इस कोठी में कभी रहा ही नही।'

'भाई जान ! आप यह क्या कह रहे हैं ? हम आपके वियोग में मर रहे हैं और आप इसे थोड़े दिन का दुःख मान रहे हैं ?'

"हां, मैंने यह गलत नहीं कहा। यह दुःख सिर्फ कुछ दिन की बात है।'

'खुदा के लिए मेरे साथ चलिए। आप के बिना सारा घर मुझे उजाड़-सा दिखाई पड़ता है। ऐसा मालूम होता है जैसे उस घर में कोई रहता ही नही।'

'इशरत ने उस घर में आकर खासी गहमा-गहमी सी कर दी थी और हर तरफ रौनक ही रौनक दिखाई पड़ने लगी थी मगर तुम्हें और अब्बाजान को यह घर की आबादी भी पसन्द न आई। इसके बाद जब इशरत अपने तमाम हगामों को साथ लेकर अपने मैके चली गई और मैंने इस छोटे से मकान मे आ पनाह ली तो तुम्हे उस शानदार कोठी के उजाड़ होने का पता चला। अजीब बात है।'

प्रवीन ने धैर्य के स्वर में कहा—

'आखिर आप इतने परेशान क्यों है ? अगर आपकी परेशानी सिर्फ इशरत के हगामों की वजह से है तो इसमे मैं और अब्बाजान भी बराबर के शरीक है। आपको ज्यादा परेशान होने की क्या जरूरत है। और अगर इसकी वजह कोई और है तो वह भी बता दीजिए।'

नाजिम ने प्रवीन की ओर इस प्रकार देखा जैसे कह रहा हो कि वह सब जानते हुए भी किस बुद्धिमत्ता से काम ले रही है। प्रवीन उसका अर्थ समझ गई और बोली—

'और वह ताहिरा का मामला तो आप जानते ही है। उससे कुछ आशा रखना फजूल है। उसने तो अपना पीछा छुड़ाने के लिए एक वजह पैदा करली और उसके बाद वह सीधे मुह बात नही करती। लेकिन मै यह पूछती हूं कि आप उसके पीछे क्यों परेशान हो रहे है ?'

नाजिम ने इसका कोई उत्तर न दिया। वह मौन बैठा सोचता रहा। प्रवीन ने उसे चुप देखकर कहा—

'हां, तो क्या चलते है आप मेरे साथ ?'

'नहीं ।'

नाजिम फिर मौन हो गया और प्रवीन तड़प कर बोली—

'आप अपने आप पर नहीं तो मुझ पर और बूढ़े बाप पर रहम कीजिये ।'

'यही मै कहूंगा कि मुझ पर रहम करो और आप मुझे उस घर के हंगामों से बचाओ ।'

'लेकिन अब तो वे हंगामे खत्म हो गए है । इशरत वहा से जा चुकी है ।'

'यह सही है मगर न जाने मुझे क्यों उस घर में दोबारा जाते हुए भय सा लगता है ।'

प्रवीन ने नाजिम को घर चलने के लिए बहुत विवश किया किन्तु वह इसके लिए तैयार न हुआ । अन्त मे प्रवीन वहां से उठकर चल दी । नाजिम कितनी ही देर तक कुर्सी पर बैठा रहा और बीती हुई और आने वाली घटनाओं पर विचार करता रहा । इतने में नौकर ने कहा—

'सरकार ! खाना तैयार है ।'

वह अपने विचारों से चौका । उसने आकाश की ओर देखा तो रात्रि का अंधकार धीरे-धीरे आकाश के विस्तार पर छा रहा था और पंछी बसेरा लेने के लिए अपने-अपने घोंसलो की ओर उड़े जा रहे थे । नाजिम ने मन ही मन कहा कि पंछियो को भी यदि किसी स्थान पर पनाह मिलती है तो वे उनके घर है किन्तु एक मै हू कि यहां पड़ा हूं और घर से मुझे कुछ भय सा लगता है । मालूम नही यह क्या है ?'

## १३

**

पीरियड का समय आरम्भ हो चुका था किन्तु डाक्टर नाजिम अभी क्लास रूम में नहीं पहुचा था। विद्यार्थी अपने बेंचों पर बैठे उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। कालेज के विद्यार्थियो का साधारणतया यह नियम होता है कि यदि प्रोफेसर को पहुंचने में दो चार मिनट की देर हो जाए तो वे क्लास रूम से चल देते हैं और उसकी प्रतीक्षा करने का कष्ट नहीं करते किन्तु नाजिम के लैक्चर कुछ ऐसे मनोरंजक होते थे कि विद्यार्थी देर तक उनकी प्रतीक्षा करते। वह कुछ दिनों से प्रतिदिन कुछ देर से पहुंचता था। आज भी वह पांच छः मिनट देर से पहुंचा। आते ही उसने शैक्स्पीयर के नाटक 'ऐज़ यू लाइक इट' पर लैक्चर देना आरम्भ कर दिया। यह शैक्स्पीयर का सुखान्त नाटक है किन्तु नाजिम इस नाटक को कुछ इस ढग से पढ़ा रहा था। जैसे वह दुःखान्त नाटक हो। नाटक के एक प्रसिद्ध पात्र की उक्ति प्रत्युक्तियों को वह करुण स्वर में पढ रहा था और हास परिहास को दुःख और क्लेश की भावना से ओत प्रोत कर रहा था। विद्यार्थी चकित थे कि डाक्टर नाजिम को हो क्या गया है? वह अच्छे खासे नाटक को क्यों करुणा में बदल रहा है। अन्त में एक विद्यार्थी से न रहा गया। और बोला—

'जनाब! यह अथैलो नहीं, 'ऐज़ यू लाइक इट' है।'

यह सुनकर कुछ विद्यार्थी मुस्कराने लगे। नाजिम कुछ बौखला सा

गया और पुस्तक के टायटिल को देखते हुए बोला—

'मुझे अफसोस है।'

उसने आरम्भ से उस नाटक को सुखात्मक ढंग से पढाना आरम्भ किया किन्तु अब उसकी आवाज के उतार चढाव और पढाने के नए ढगमें बनावट अधिक प्रतीत होती थी और बिल्कुल कुछ ऐसी दशा दृष्टिगत होती थी जैसे कोई रोता हुआ आदमी खसियानी सी हसी हसने लगे। नाजिम स्वयं भी अनुभव कर रहा था कि इस सुखात्मक नाटक को पढाते समय उसकी अपनी भावनाए स्पष्ट नही हो रही है और शैक्स्पीयर का एक जीवित नाटक हास्यास्पद सा बन रहा है। उसने अपना स्वर बदलने का यत्न किया किन्तु असफल रहा।

ताहिरा और प्रवीन उसको देख रही थीं और समझ रही थी कि सुखात्मक नाटक को दु.खात्मक बना देने मे उसकी अपनी भावनाओं का हाथ है। ताहिरा के हृदय पर एक आरा सा चल रहा था और डाक्टर नाजिम की उस दशा को देख कर मन ही मन कुढ़ रही थी। उसके नेत्र पुस्तक पर झुके थे किन्तु ध्यान कही और ही था। उसने दो तीन बार नाजिम की ओर देखा। नाजिम से जब उसकी दृष्टि मिलती तो उसके नेत्र झुक जाते।

नाजिम ने जैसे तैसे पीरियड का समय समाप्त किया और क्लास रूम से निकल आया। उसके पीछे-पीछे समस्त छात्र बाहर निकल आए। प्रतिदिन के समान प्रवीन फिर नाजिम से आ मिली किन्तु ताहिरा पीछे से ही खिसक गई।

नाजिम ने प्रवीन को कुछ इस प्रकार से देखा कि वह उसके अतिरिक्त किसी और की भी खोज मे है। प्रवीन समझ गई कि उसके नेत्र ताहिरा को खोज रहे है। प्रवीन ने उसके बोलने की प्रतीक्षा न कर कहा—

'ताहिरा न जाने कहां गई है। अभी मेरे साथ थी। पीछे मुडकर मैंने देखा तो वह खो चुकी थी। मालूम नही वह हम लोगों से अब इतना दूर क्यों रहती है।'

नाजिम ने बड़ी लापरवाई से कहा—

'हां, ऐसा ही होता है इस दुनिया में। यह कोई नई बात नही।'

प्रवीन कुछ और कहना चाहती थी कि नाजिम डग भरता स्टाफरूम की ओर चल दिया और प्रवीन उसे देखती रह गई।

कालेज से निपटने के पश्चात् नाजिम अपने मकान की ओर पैदल चल दिया। तीन बजने वाले थे और नगर के बेफिकरे मैक्लोड रोड पर तीसरे पहर का शो देखने के लिये सिनेमाओं की ओर भागे जा रहे थे। नाजिम रेलवे स्टेशन के चौराहे की ओर से मैक्लोड रोड पर जा रहा था। भाटी दरवाजे को जाने का निकटतम मार्ग तो और ही था किन्तु न जाने उसने यह लम्बा मार्ग क्यों स्वीकार किया। उसका विचार यह था कि मेक्लोड रोड पर से होता हुआ माल रोड़ पर पहुच जाए और वहां से बड़े डाकखाने और वाई० एम० सी० ए० के सामने से होता हुआ अनारकली पहुचे। फिर अनारकली से गुजरकर लोहारी दरवाजा और वहां से भाटी दरवाजा चला जाए। मतलब दस मिनट के मार्ग के स्थान पर उसने पूरा एक घण्टे का मार्ग अपनाया था। उसने सिनेमा जाने वालों को चाव के साथ आगे बढते देखा था। कुछ युवक फिल्मी गाने गाते हुए जा रहे थे और कुछ अट्टहास करते और फिल्मी-पात्रो की चर्चा करते हुए आगे बढ़ रहे थे। नाजिम ने उन्हें प्रसन्न देखकर अनुभव किया कि इस बहुत बड़े नगर में उसके समान चिन्तित और परेशान लोग ही नही बसते—बहुत से ऐसे भी है जो सांसारिक चिन्ताओं से स्वतत्र है।

नाजिम इस प्रकार की बातें सोचता हुआ कदम बढाए जा रहा था और फिल्मी तमाशाइयों के अट्टहासो और अपनी चिन्ताओ के अन्तर को जाचने का यत्न कर रहा था। इतने में एक मेम का कुत्ता उसकी टांगों से आकर चिमट गया और प्यार करने लगा। मेम ने कुत्ते को 'टाइगर, टाइगर' कहकर पुकारा और नाजिम को सम्बोधन कर बोली—

'मुआफ कीजिएगा। इसे आप पर मेरे पति का सन्देह हुआ है।'

नाजिम को कुछ हंसी-सी आ गई और मुस्कराता हुआ बोला—

'लेकिन अफसोस है मैं वह नहीं हूं।'

यह सुनकर उस मेम ने एक अट्टहास किया और बोली—

'आप तो बहुत हंसोड़ मालूम होते हैं?'

नाजिम ने कहा—

'यह सिर्फ आपकी राय है। नहीं तो आम लोग मुझे लाहौर का सबसे गमगीन इनसान समझते हैं।'

मेम ने उसकी इस बात का कोई उत्तर न दिया। और अपने कुत्ते को लेकर निकलसन रोड की ओर चल दी। नाजिम ने मन ही मन कहा कि कुत्ता तो उस मानव की खोज करता है जिससे उसे प्यार होता है किन्तु मनुष्य में यह विशेषता बहुत कम पाई जाती है। वह अपने विचारों में खोया हुआ आगे बढ रहा था कि पीछे से कार के हार्न की आवाज आई। वह शीघ्रता से सड़क के एक ओर हट गया। कार बिल्कुल निकट आ चुकी थी। किसी स्त्री ने कार में से कहा—

'अंधे होकर चलते हैं।'

नाजिम ने पीछे पलट कर देखा तो वह चकित रह गया और उसके नेत्र खुले के खुले रह गए। कार चलाने वाला वही युवक था जिसे उस ने इशरत के साथ पुस्तकों की दूकान पर देखा था। इशरत भी अगली सीट पर बैठी उसके साथ मिलकर अट्टहास कर रही थी और नाजिम का परिहास उड़ा रही थी। जब नाजिम ने पीछे पलट कर देखा तो इशरत ने उसे पहचान लिया और उसका मुख उतर सा गया। इतने में कार उसके निकट से गुजर गई। नाजिम ने देखा तो इशरत अपने साथी युवक के कान में कुछ कह रही थी। युवक ने अपनी कार पर बैठे २ मुड़कर नाजिम की ओर देखा और मुस्कराता हुआ अपनी कार को लेकर आगे बढ़ गया।

यह तमाशा देखकर नाजिम पर एक बिजली सी गिरी और उसे विश्वास हो गया कि विवाह हो जाने के उपरांत भी इशरत को यह सह्य नहीं कि अपने पुराने साथी के प्यार को छोड़ दे। इशरत से उसे कतई

कोई लगाव न था किन्तु एक पति की स्थिति में वह यह सहन नहीं कर सकता था कि उसकी विवाहिता पत्नी दूसरों के साथ मटर गश्त करती फिरे। अब उसके विचार एक केन्द्र पर घूम रहे थे और इशरत के इस व्यवहार पर उसे खेद हो रहा था। विवाह की पहली रात जब उसने उससे क्षमा मांगी थी तो उसे यह विश्वास हो गया था कि विवाह के पश्चात् वह इन कृत्यों से हाथ खेंच लेगी और शिष्ट घराने की बहू बेटियों के समान पराये के साथ चलने फिरने में संकोच करेगी किन्तु यह दशा अपने नेत्रों से देखकर उसने यही सम्मति स्थिर की कि जो लोग स्वभाव से आवारा होते हैं उनके सुधार की आशा रखना व्यर्थ सी बात है।

नाजिम चलता २ जब पैलेस सिनेमा के सामने पहुंचा तो वही कार एक ओर सिनेमा हाऊस के समीप खड़ी थी। नाजिम को पता चल गया कि वे दोनों सिनेमा देखने के लिए आए थे। नाजिम ने उस सिनेमा हाउस के सामने थोड़ा तेजी से चलना आरम्भ कर दिया और शीघ्रता से उस के समीप से निकल गया। वह प्रायः इस सिनेमा हाउस में आया था किंतु आज उसे इससे कुछ भय सा प्रतीत हो रहा था। न जाने क्यों ?

सिनेमा हाउस के समीप से निकल जाने के पश्चात् भी उसकी गति की तीव्रता में कोई अन्तर न आया। वह कुछ इस प्रकार की भावना अनुभव कर रहा था कि दौड़ने लगे। वह अचेतन भावना के उत्पन्न होते ही कुछ दौड़ा भी किन्तु यह सोचकर रुक गया कि कही लोग उसे पागल न समझने लगें। वह अपनी धुन में बड़ी तेजी के साथ आगे बढ़ रहा था कि एक राही ने उससे पूछा—

'क्यों साहब ! पैलेस सिनेमा कहां है ?'

नाजिम ने कुछ यों अनुभव किया कि उसने इसे एक बहुत बड़ी गाली दी है। इसने उसे घूर २ कर देखना आरम्भ किया। वह व्यक्ति बोला—

'साहब ! मैंने आपसे पूछा है, पैलेस सिनेमा कहां है ?'

नाजिम ने कहा—

'ओहो, पैलेस सिनेमा ?—पैलेस सिनेमा ? हां, पहले तो वह था इसी सड़क पर लेकिन अब शायद नहीं है।'

नाजिम यह कह कर आगे बढ़ गया और वह व्यक्ति आश्चर्य चकित होकर उसकी ओर देखने लगा। नाजिम ने कुछ दूर जाकर पीछे मुड़ कर देखा तो वह व्यक्ति वहीं खडा उसे तक रहा था और अपने एक साथी से कह रहा था—

'मालूम होता है बेचारे का दिमाग कुछ सही नही है।'

नाजिम ने मन ही मन कहा—

'इस शख्स ने ठीक कहा। अपनी बीवी को किसी और के साथ देख कर किसी व्यक्ति का दिमाग सही नही रह सकता।'

अब वह बडे डाकखाने के सामने पहुंच चुका था। घण्टे की ओर उसने देखा तो तीन बजकर बीस मिनट हो चुके थे। वहां से वह माल रोड पर मुडा और वाई० एम० सी० ए०, हाल और एफ० सी० कालेज के मध्य की सडक पर से होता हुआ अनारकली पहुच गया। अनारकली में लोगों की असाधारण भीड़ थी। कारों और लोगों के कोलाहल से कान पडी आवाज सुनाई नही देती थी। वह चुपके से बाजार के एक ओर हो लिया और लोहारी दरवाजा की ओर चल दिया। जब वह किताबों की दूकान के सामने पहुंचा तो दूकानदार उसे दूकान के द्वार पर खडा दिखाई पडा। वह उसके समीप से निकल जाना चाहता था कि दूकानदार ने उसे पहचान लिया और बोला—

'साहब ! आपने हमारी दूकान पर आना ही छोड दिया है। और हां, कल वह लड़की फिर उस नौजवान के साथ यहां आई थी। उसने एक अच्छे भले आदमी की बेइज्जती कर दी। आखिर मे मैंने उससे कह ही दिया कि "श्रीमती जी ! आगे को आप यहां न आए। और अगर आप नही रुक सकती तो मुझे कहिये, मै दूकान छोड़कर चला जाऊं।'

दूकानदार ने यह कहते हुए एक ऊंचा अट्टहास किया और बोला—

'कहिये साहब ! कैसी कही मैंने उससे ? अब नही आएगी वह

यहां। साहब! हम उसके लिए अपने ग्राहकों को नाराज करने से तो रहे। मालूम नही किस शरीफ आदमी की यह बीवी है जिसने उसकी रस्सी ढीली कर रखी है। और वह पराए मर्दों के साथ घूमती फिरती है।'

नाजिम ने उसकी बात का कोई उत्तर न दिया और आगे बढ गया। कुछ कदम जाने के पश्चात् वह रुक गया और बाएं और एक गली में घुस गया। यह गली पैसा अखबार स्ट्रीट मे जा निकलती थी। नाजिम को अपना निश्चित मार्ग इसलिए छोड़ना पड़ा कि मार्ग मे वह कपड़े की दूकान भी पड़ती थी और उसे भय था कि कही उसका मालिक भी उसे देखकर इस प्रकार की कोई बात करे।

वह पैसा स्ट्रीट मे से निकलकर मोरी दरवाजा के सामने पहुच गया और सरक्युलर रोड पर भाटी दरवाजे की ओर चला। उसने घडी देखी तो चार बज चुके थे। भाटी दरवाजा केवल कुछ कदम दूर रह गया था। वह बहुत अधिक थक गया था और यह कुछ कदम का रास्ता भी उसे मील भर से कम दिखाई नहीं देता था। उसके समीप से कुछ कारें हार्न बजाती हुई निकली और उसने उनकी ओर देखने के स्थान पर मुह दूसरी ओर फेर लिया।

जब वह मकान पर पहुंचा तो प्रोफेसर वहीद वहां उपस्थित था। नाजिम उसे देखकर मुस्कराया और कुर्सी पर बैठते हुए बोला—

'क्यों? खैर है? कैसे तकलीफ की आपने?'

वहीद ने कहा—

'अरे भाई! मैने कहा था न कि एक किताब का नोट लिख रहा हूं। बस उसी काम में लगा रहा। शायद आज भी न आता लेकिन सवेरे-सवेरे तुम्हारे अब्बा का आदमी मकान पर पहुंच गया और बोला—'मियां साहब याद फरमाते है।' अब तुम समझ लो कि उस हुक्म को टालना मेरे बस के बाहर था। झट कपड़े पहन कर उनकी खिदमत में हाजिर हुआ। मियां साहब ने बस तुम्हारा किस्सा शुरू किया और बताया कि तुम्हारी शादी बहुत ज्यादा मनहूस साबित हुई है।

बातें उन्होंने इस बारे में बहुत कीं। लेकिन खैर उनकी चर्चा की यहां जरूरत नही। लेकिन हा, तुम यह कहो कि तुम अच्छा खासा घर छोड़ कर यहा क्यों मुसाफिरों की तरह रह रहे हो ?'

नाजिम ने उसकी बात का कोई उत्तर न दिया। वहीद ने उसे मौन देखकर कहना आरम्भ किया—

'भई ! तुम्हारे अब्बा और तुम्हारी बहिन बहुत ज्यादा परेशान हैं। खुदा के लिए छोड़ो इस कबूतर खाने को और अपने घर जाओ। तुम ही बताओ। यह मकान इनसानो के रहने के काबिल है ? अगर कोई ऐसा वैसा मतभेद है तुम्हें घर वालों से तो वह वही आपस की बात चीत से दूर हो सकता है। मगर यह कहां की बुद्धिमानी है कि आदमी घर छोड़कर भाग निकले और अपने सगे सम्बन्धियों को परेशान करे। नाजिम ! मुझे यह तुम्हारी हरकत पसन्द नही है। कई बार मेरा भी घर वालों से कोई छोटा मोटा झगड़ा हो जाता है और यह तुम्हें मालूम ही है कि मैं मामूली-मामूली बातों पर बिगड़ जाने का आदी हू। लेकिन साहब ! मैं तो घर छोड़कर चल देने के बजाए वहीं 'जमीन जुम्बद, न जुम्बद गुल मुहम्मद' धरती हिले तो हिले पर गुल मुहम्मद न हिले वाली कहावत कर बैठता हू। मेरे अब्बा कई बार यह कहते हैं कि आजकल के नौजवान तो कोई झगड़ा हो जाने की वजह से घर छोड़कर चल देते हैं मगर यह कमबख्त और भी जमकर बैठ जाता है। मेरी कहानी तो है यह। अब तुम बताओ कि तुम अपने आप घर चले जाओगे या मुझे कोई डेपुटेशन लेकर आना पड़ेगा जो हजार इज्जत के साथ आपकी सेवा में प्रार्थना करेगा कि साहब ! मुआफी दीजिए और घर लौट चलिए।'

नाजिम फिर भी मौन रहा। वहीद ने उसकी ओर देखते हुए कहा—

'अरे भाई ! क्या तुमने चुपशाह का रोजा रख लिया है ? सुनते हो, मैं क्या कह रहा हूं ?'

नाजिम ने मुस्कराते हुए कहा—

'हां, सुन रहा हूं। तुम अपनी तकरीर खत्म कर लो।'

'बस, यही तो ऐब है तुम में। मैं कोई काम की बात भी कहूं तो तुम्हें वह तकरीर मालूम होती है। अच्छा, फिर बताओ न क्या इरादे हैं दिले नापाक के ?'

'बस यही कि इस मकान मे रहूंगा '

'यह भी खूब रही। मैंने अपनी तकरीर में पूरी शक्ति लगा दी और इन साहब पर कोई असर नही हुआ। मालूम नही मेरी तकरीर मे असर नही या आप लोहे के बने हुए हैं।'

'नही, तुम्हारी तकरीर मे भी असर है और मैं भी लोहे का बना हुआ नही। लेकिन रहूगा यहीं।'

'यह तो परनाला वहीं रहेगा वाली बात है। अरे मियां ! जाने दो छोटी मोटी बातों को और चलो घर। भला यह भी कोई बात है कि मामूली सा झगड़ा हो और किराए के मकान मे रहने लगो। चलो, अगर तुम अपने घर नही जाना चाहते तो मेरे घर चलो। मगर इस हवालात को छोड़ो। भला यह भी रहने के काबिल मकान है ?'

नाजिम ने उससे पीछा छुड़ाने के विचार से कहा—

'बहुत अच्छा। मैं अपने घर ही चला जाऊगा। लेकिन अभी मैं एक खास कारण से इस मकान को छोड़ना नही चाहता।'

वहीद ने एक जोर का अट्टहास किया और भेद पूर्ण स्वर मे कहा—

'वह खास कारण मुझे भी बता दो शायद मैं भी कुछ दिनों के लिए यहीं आ जाऊं।'

'भई ! कहा जो है कि घर चला जाऊंगा। तुम पीछा भी छोड़ो मेरा।'

'बहुत अच्छा। लेकिन भूल न जाना यह बात। हां, तो उस लड़की से फिर कभी भेंट हुई ?'

'कौन सी लड़की ?'

'अरेमियां ! वही जो तुम्हें किताबों की दूकान में मिली थी

यह सुनकर नाजिम पर बिजली सी गिरी और वह घबरा गया। उसे यह पता था कि वह इशरत से अपरिचित है और उसे पता नही कि उस लड़की से इसका विवाह हो चुका है। उसने केवल परिहास के रूप में यह बात कही है किन्तु इस बात ने उसकी नस २ मे एक सनसनी सी फैला दी। और वह बौखला सा गया। वहीद उसकी घबराहट ताड गया और उठते हुए बोला—

'खैर, यह तो एक मजाक की बात थी। भई, ठीक तुम्हारे लिये यही है कि जल्दी से जल्दी घर चले जाओ और इस मकान को छोड़ दो। और हां, मुझे दोबारा प्रार्थना न करनी पड़े।'

वहीद यह कहता हुआ घर से निकल गया। नाजिम कितनी ही देर तक अपने विचारों मे खोया रहा उसके मस्तिष्क में पुस्तकों की दूकान, कलकत्ता हाउस और पैलेस सिनेमा चक्कर लगाने लगे और उसे कुछ यों अनुभव हुआ कि उसका हृदय बैठ रहा है। वह शीघ्रता से उठा और अपने मकान के आंगन में टहलने लगा।

## १४

**

इसके दूसरे ही दिन की बात है कि प्रवीन ने ताहिरा से क्लासरूम में कहा—

'ताहिरा ! पीरियड खत्म होते ही भाग न जाना। मुझे आज तुम से कुछ जरूरी बाते करनी है।'

ताहिरा ने उसकी ओर अर्थभरी दृष्टि से देखते हुए कहा—

'क्यो, खैर तो है ?'

प्रवीन ने कहा—

'खैर होती तो मैं तुम्हें इस बारे में ताकीद न करती।'

डाक्टर नाजिम ने अपना लैक्चर समाप्त किया और स्टाफरूम में चला गया। प्रवीन ताहिरा को लेकर बाहर निकली और उसके साथ सामने के मैदान में जा बैठी। ताहिरा ने बैठते हुए घबराई आवाज में कहा—

'कहो, क्या बात है ?'

प्रवीन ने रोष के स्वर में कहा—

'ताहिरा ! मुझे तुम्हारा प्रेम दर्शन कतई पसन्द नहीं। पता नहीं तुम किस जमाने की बात करती हो कि प्यार का लक्ष्य शादी नहीं बल्कि एक न खत्म होने वाली तड़प होनी चाहिये जो बराबर वियोग का नतीजा होती है। तुम एक ऐसे इश्क की तरफदार बनी फिरती हो जिस

की हैसियत इस दुनिया में सिर्फ कथा कहानी तक है और वह असल में और कुछ नहीं। ऐसा वियोग कतई बदमजा है जिसका नतीजा मिलाप न हो। वह वियोग फिजूल है जिस का अन्त मिलन न हो। अगर मिलन सिर्फ एक खयाली चीज हो तो वियोग से पैदा होने वाली कसक अपने अन्दर कोई आकर्षण नही रखती। रोशनी हमेशा अन्धेरे को देखकर महसूस होती है अगर इनमे से एक चीज न हो तो दूसरी चीज का होना भी साबित नही हो सकता। इसी तरह वियोग और सयोग दो जरूरी चीजे है। वियोग सयोग के बिना और सयोग वियोग के बिना बेमतलब सी चीज है। और दोनो चीजे अपनी २ जगह पर जरूरी है। सयोग भी और वियोग भी। वियोग का स्थान अगर प्यार के राह का लम्बा सफर है तो सयोग उस सफर की मजिल। अगर मजिल ही कोई न हो तो रास्ता और सफर दोनो बेकार चीजे है। इसी तरह प्यार करने वाले दिल का असल मतलब मिलन ही होना चाहिये। अगर मिलन की ही इच्छा न हो तो प्यार कोई चीज नही। क्योकि चहेते से मिलने की कोशिश का नाम ही प्यार है। और यह उस वक्त तक नही हो सकती जब तक मिलन की सही तड़प दिल मे पैदा न हो जाए।

ताहिरा चकित सी प्रवीन की ओर ताक रही थी और उसकी बात सुन रही थी। अन्त मे उसने मुस्कराते हुए कहा—

'इस लम्बी सी तकरीर से तुम्हारा मतलब क्या है ?'

प्रवीन के नेत्रो मे अश्रु झलक आए—

'ताहिरा ! मेरे भाई का जीवन तुम्हारे हाथ में है। तुम देखती हो उन की क्या हालत हो गई है ? शायद वे कालेज आना भी छोड़ देते मगर अब उन्हे कालेज से सिर्फ इतना नाता रह गया है कि यहां उन्हे तुम्हारी सूरत दिखाई पड़ जाती है। खुदा के लिए उनकी हालत पर रहम करो और उन्हे किसी कड़े इम्तिहान मे न डालो। यह मै तुम्हे विश्वास दिलाती हूं कि तुम्हारे लिए वे बड़ी से बड़ी बलि देने के लिये तैयार है। वे अपने प्राण देने से भी नहीं डरते। मगर इससे उनके बूढे बाप की और मेरी

जो हालत होगी उसका अन्दाजा कर लो।'

ताहिरा ने एक दीर्घ निःश्वास लिया और बोली—

'तो क्या तुम्हारा ख्याल है कि मुझे नाजिम से प्यार नही ?'

'है और जरूर है मगर ऐसा प्यार जो कहानियों मे लिखने के लिये बहुत बड़ी चीज है लेकिन व्यवहार मे जिसकी कोई हस्ती नही। लैला मजनू, वामिक अजरा, शीरी फरहाद और इस प्रकार के दूसरे मनघडत किस्सो में जिस प्यार की चर्चा की गई है उनमे भी आशिक माशूक की आखिरी चाह मिलन ही दिखाई गई है। यह और बात है कि हालात ने उसे मुमकिन न होने दिया। इस बेबसी की जुदाई ने उनके दिलो को प्यार की गरमी से गरमा दिया लेकिन यह कहना गलत है कि उन कहानियो के पात्र मिलन से कही वियोग को चाहते थे। खैर, यह प्यार भी किस्से और कहानियो का है। न जाने तुम्हारा प्यार किस तरह का है कि तुम मिलन से कही ज्यादा जुदाई चाहती हो। जहा तक मेरा ख्याल है तुम शैक्स्पीयर के नाटक अथैलो से बहुत ज्यादा प्रभावित हो। मगर अथैलो और उसकी मोना का प्यार भी तो ऐसा नही था जैसा तुम्हारा है। इसमे शक नही कि कुछ हालात प्रेमी और प्रेमिका के मिलन को नामुमकिन बना देते है और उनके दिलो मे प्यार की आग और भड़क उठती है मगर ये हालात ऐसे होते है जिन पर दोनो को अधिकार नही होता। यह तो मैंने कभी नहीं सुना कि ये दोनो अपने आप ऐसे हालात पैदा कर लेते है ताकि वियोग उनकी तड़प को और ज्यादा करता रहे।'

प्रवीन का सोदाहरण और नीति परक भाषण सुनकर ताहिरा मौन हो गई और उसे कोई उत्तर न बन आया। प्रवीन ने उसे मौन देखकर कहा—

'हां, अगर तुमको प्यार का सिर्फ ढोग ही रचना था तो यह और बात है। क्योंकि कुछ औरतें ऐसी भी होती है जो आग लगाकर सिर्फ तमाशा देखने की शौकीन होती है। अगर यही बात है तो मुझे बता दो ताकि मै अपने भाई को इस बनावटी और दिखावटी प्यार के गोरख

धंधे से निकालने की कोई विधि सोचू । और अगर तुम्हें उससे दिलसे प्यार है तो फिर उससे शादी करो ।'

ताहिरा के सुन्दर नेत्रों से बहने वाले अश्रुओं से उसका सारा मुख-मण्डल भीग गया था । जब प्रवीन ने उसके प्यार को ढोग बताया तो वह तड़प सी गई और बोली—

'प्रवीन ! तुमने यह कहकर मेरे प्यार का अपमान किया है । काश, तुम मेरे दिल की गहराइयों में उतर कर देखती । और तुम्हें मालूम होता कि वहां नाजिम की याद के सिवा और कोई चीज नही है ।'

'अगर नाजिम की याद तुम्हे ऐसी ही बेचैन रखती है तो उससे शादी करो । यह क्या कि प्यार का इकरार और शादी से इनकार । प्यार में यह दोगलापन गलत है ।'

'मुझे तो पहले भी नाजिम से शादी करने से इनकार नही था । चाहे मैंने खुद इस बारे में पहल नही की थी लेकिन सिर्फ तुम्हारे कहने से और नाजिम की घरेलू जिन्दगी का ध्यान रखते हुए इस इरादे से बाज़ रही ।'

'नाजिम की घरेलू जिन्दगी तुम्हारे बिना बेकार है । मैंने जो तुम्हे कहा था उसमे एक भेद था और अब वह कभी का खत्म हो चुका । अब तुम्हारे प्यार के पूर्ण होने की सूरत यही है कि तुम भाई जान से शादी करने का इकरार करो ।'

'बहुत अच्छा, मै तैयार हूं ।'

'तो आज ही चलो भाईजान के पास ।'

'मेरा ख्याल है मै अकेली ही जाऊं । तुम्हारे रहते मै कोई बात न कर सकूगी ।'

प्रवीन ने मुस्कराते हुए कहा—

'अगर तुमने फिर कोई उलटी सीधी हांक दी तो ?'

'जब मैंने वचन दे दिया तो फिर इसका सवाल ही नही पैदा होता ।'

प्रवीन ने हास्य के स्वर में कहा—

'वचन तो तुमने पहले भी दिया था।'

ताहिरा ने अपने आसू पोंछते हुए कहा—

'अगर मैं अपना वचन पूरा करने मे सफल न हुई तो उस जुर्म में तुम भी मेरे साथ बराबर की हिस्सेदार थी । जब तुमने मुझे इस बात के लिए तैयार किया कि मैं नाजिम से शादी का विचार छोड दूं तो मैंने सिर्फ अपनी ढारस बांधने के लिए प्यार का एक उल्टा सीधा दर्शन घड़ लिया जिसे अब तुम ढोंग बताती हो। लेकिन मैं तुम्हे विश्वास दिलाती हूं कि इस तरह का प्यार करने को भी मैं तैयार थी। मैं यह मानती हूं कि ऐसे वियोग से वियोग की कसक कम नही हो सकती जो कुछ खास हालात का नतीजा हो मगर यह तुमने क्यों मान लिया है कि नाजिम और मेरे बीच रुकावट बनने वाले हालात मेरे बस मे थे। प्रवीन! मैं तुम्हे सच कहती हूं मुझे नाजिम से बेहद प्यार है। मैं एक पल के लिए भी उनसे अलग नही रहना चाहती। जब तुमने मुझसे यह कहा कि नाजिम की भलाई इसी मे है कि तुम उससे शादी करने की इच्छा न करो तो मैंने उनकी भलाई का ख्याल करते हुए तुम्हारी बात मान ली। चाहिये तो यह था कि तुम मेरे इस बलिदान की तारीफ करती उल्टा मुझे शर्मिन्दा कर रही हो और मेरे प्यार को ढोंग बता रही हो।'

प्रवीन ने हसते हुए कहा—

तुमने अपने आप ही तो यह बताया था कि प्यार का मतलब शादी नही होना चाहिए क्योकि यह प्यार को खत्म करने का कारण सिद्ध होती है। प्यार को जिन्दा रखने के लिए वियोग की जरूरत है।'

ताहिरा ने भर्राई हुई आवाज मे कहा—

'हां, यह मैंने कहा था लेकिन तुम जानती हो कि पिटा हुआ आदमी अपनी तसल्ली के लिए कोई न कोई बहाना खोज लेता है और आखिर अपनी असफलता को ही सफलता ख्याल करके खुश हो जाता है। अगर मैंने भी इस तरह से अपने दिल को खुश कर लिया तो क्या बुराई है?'

प्रवीन ने अट्टहास करते हुए कहा—

'हां, उस हारी हुई लौमड़ी ने इसीलिए अंगूरों को खट्टा बताया था।'

ताहिरा ने कहा—

'तुम्हारी यह मिसाल बेमौका है। मैंने अंग्रेजों को खट्टा कभी नहीं कहा। बल्कि उनकी मिठास और मधुरता की तारीफ की है। हा, इस लिहाज से उस लौमड़ी और मुझमें एक तरह की समानता जरूर है कि उसने असफलता के दुःख से बचने के लिए एक बहाना ढूढ़ लिया और मैंने भी।'

प्रवीन ने मुस्कराते हुए कहा—

'खैर, यह तो एक मजाक था। अब तुम यों करो कि आज ही किसी वक्त भाई जान को उनके मकान पर मिलो और उनकी पूरी तरह से तसल्ली कर दो। खुदा जाने वे तुम्हारे प्यार मे घुले जा रहे है। क्या तुम्हे उन पर रहम नही आता?'

ताहिरा ने हिचकियां लेते हुए कहा—

'प्रवीन! मै तुम्हे कैसे विश्वास दिलाऊं कि मेरी दुनिया इन्ही के दम से आबाद है? वे ही मेरे ख्यालों मे समाए हुए है इन्ही के प्यार से मेरा दिल मस्ती से भरा है। मै भला उन पर किसी तरह की ज्यादती कर सकती हूं?'

प्रवीन उठ खड़ी हुई और बोली—

'अच्छा, मै तो अब जाती हू लेकिन तुम उनसे आज जरूर मिल लेना। वचन दिया है तुमने।'

'हां, हां, तसल्ली रखो। मै उनसे जरूर मिलूगी और आज ही मिलूंगी।'

प्रवीन के जाने के बाद ताहिरा कुछ देर तक वहीं बैठी रही और इस बात पर विचार करती रही कि प्रवीन ने प्यार के बारे मे जो कुछ कहा है वह कहां तक सत्य है। अन्त में वह इस परिणाम पर पहुची कि उसने सत्य कहा है। संयोग भले विवाह के रूप में हो अथवा किसी अन्य रूप में वही प्यार का लक्ष्य है। इसके बिना प्यार कोई वस्तु नहीं।

अब वह चकित थी कि नाजिम से किस ढंग से बातचीत करे जिससे उसकी सफाई भी हो जाए और नाजिम को भी बिश्वास हो जाए। पिछली बार जब वह उससे मिली थी तो उसने अपने हृदय पर बलात्कार कर स्पष्ट शब्दो मे यह कह दिया था कि उसका प्रेम सामयिक और भावुकता का परिणाम था और अब वह उसे केवल डाक्टर नाजिम के रूप में देखती है।

कुछ समय तक इस विषय पर विचार करने के पश्चात् वह उठी और कालेज से निकल आई। दरवाजे के बाहर ही उसका शोफरकार में बैठा उसकी प्रतीक्षा कर रहा था।

उसी दिन साय समय ताहिरा नाजिम के मकान पर पहुंची। नाजिम खाना खा रहा था। उसने ताहिरा से कहा—

'आओ, ताहिरा ! खाना खाओ।'

ताहिरा ने कहा—

'आप खाइए। मै तो खाने के बजाए और कुछ ही खाया करती हूं।'

नाजिम ने उसकी ओर आश्चर्य से ताकते हुए कहा—

'तो क्या तुमने उस नावल को फिर पहले अध्याय से शुरू कर दिया ?'

ताहिरा ने लज्जित स्वर मे कहा—

'नही, नाजिम ! यह बात नहीं।'

'तो गोया मै प्रोफेसर नाजिम से फिर नाजिम बन गया ? जो चाहे आपका हुस्न करिश्मा साज करे।'

ताहिरा ने व्याकुल होते हुए कहा—

'नाजिम ! मुझे अफसोस है आपको मेरी वजह से परेशानी हुई।'

'तो गोया अब तुमने परेशानियों को खत्म कर दिया है ?'

'अगर आपकी परेशानी सिर्फ मेरी वजह से थी तो इसके इलाज के लिए मै हाजिर हूं।'

'शायद तुमने दोबारा नया मजाक शुरू किया है और मुझे तड़पते देखकर अभी तुम्हें पूरी तरह से तसल्ली नहीं हुई। अगर यही बात है तो मेरी सेवा हाजिर है।'

'नाजिम ! आप की ये ताना भरी बातें मेरे हृदय मे तीर बन कर उतर रही है । खुदा के लिए पहिले मेरी बात सुन लो । उसके बाद फैसला करना कि मैंने आप को धोका दिया या मेरे प्यार मे कुछ कमी थी ।'

'अच्छा तो फर्माइए ।'

'नाजिम ! मेरे दिल में आपका जो प्यार है उसमे कोई कमी नहीं हुई है । मै आपको पहिले से भी ज्यादा चाहती हूं । जब मैंने सुना कि आप कुछ खास हालात की वजह से किसी और जगह शादी करने के लिए बेबस है और अगर मैंने आपको उस शादी से रोकने की कोशिश की तो उसका असर आपकी आने वाली जिन्दगी पर बहुत बुरा पड़ेगा तो मैंने अपने दिल पर पत्थर रखते हुए आपको उसकी इजाजत दे दी और यहां तक कह दिया कि मेरी खुशी इसी में है कि आप शादी कर लें । यह कहते हुए मेरे दिल पर जो बीती उसका अन्दाजा कुछ मै ही कर सकती हूं । मैंने अपने आप परेशान होना मंजूर किया लेकिन आपको परेशान देखना सहन न किया । मैंने जान बूझकर कुछ ऐसी बाते की जिनका मतलब यह था कि आप मुझसे मुह फेर लें और अपनी बीवी के साथ खुशी की जिन्दगी बिता सकें । अब आप सोच सकते है कि मैंने आप को धोका दिया या एक बहुत बड़ा बलिदान । जब मुझे यह मालूम हुआ कि मेरे इस बलिदान के बाद भी आप की जिन्दगी दुःख पूर्ण है और आप की सेहत पर बुरा असर पड़ रहा है तो मै इसे भी सह न सकी । और आपके पास एक बार फिर नए सिरे से प्यार के लिए अगर इसे नए सिरे से कहा जा सकता हो आई हूं । अब आप कहिए मै आपकी परेशानियों को कैसे दूर कर सकती हूं ? मै अब भी अपने प्यारे नाजिम की वही ताहिरा हूं जिसने उसे प्यार की दावत देने में पहल की थी लेकिन कुछ कारणों से अपने प्यार को वक्ती बताया था ।'

नाजिम के नेत्र प्रसन्नता से चमक उठे । वह बोला—

'क्या ताहिरा ? तुम यह सही कह रही हो ?'

'हां, प्यारे नाजिम ! मै सही कह रही हूं ।'

'तो क्या तुम्हें वे वचन याद हैं जो हम दोनों में गृहस्थी के सम्बन्ध कायम करने के बारे में हुए थे ?'

'हां, बिल्कुल याद है ।'

इतने में नौकर बर्तन उठाने के लिए आ गया और दोनों मौन हो गए । नाजिम ने उठकर हाथ धोए और फिर अपने स्थान पर आकर बैठ गया । ताहिरा ने अपने भीगे नेत्रों से उसकी ओर देखते हुए कहा—

'नाजिम ! अब तो आपको मेरे खिलाफ शिकायत नहीं है ?'

'ताहिरा ! हर्गिज नहीं । बल्कि मुझे सुनकर शर्मिन्दगी हुई है कि तुम ने तो मेरी और मेरे घर वालों की खुशी का ख्याल रखते हुए अपनी इच्छाओं का खून किया और मुझे शादी की छुट्टी दे दी मगर मुझसे इतना न हो सका कि अपने सगे-सम्बन्धियों की जिद्द की परवा न करते हुए तुम्हारी भावनाओं का ख्याल करता और उस शादी से साफ इनकार कर देता । तुमने असल में बलिदान किया है और मैंने खुदगर्जी का सबूत दिया है । शिकायत तुम्हें होनी चाहिए या मुझे ?'

'नहीं, मुझे हर्गिज कोई शिकायत नहीं । क्योंकि खुद मैंने तुम्हें इस शादी के लिए तैयार किया था । और बात यह है कि मैंने ऐसा अपने दिल पर पत्थर रखकर किया । हां, अगर मेरी मर्जी के खिलाफ शादी कर लेते और पिछले वचनों को भूल जाते तो जरूर मुझे शिकायत होती । प्यारे नाजिम ! बात असल में यह है कि इस बीच के वक्त में जो कुछ हुआ उसके लिए न आप दोषी हैं न मैं ।'

नाजिम ने प्रसन्नता के स्वर में कहा—

'ताहिरा ! मुझे यह विश्वास नहीं आता कि हम में यह बातें स्वप्न में हो रही हैं या जागते में । बात असल में यह है कि मैं तुम्हारी तरफ से बिल्कुल निराश हो चुका था और यह ख्याल करता था कि तुमने सिर्फ मेरे तड़पने का तमाशा देखने के लिए मुझे प्यार की दावत दी या मेरी उस दावत को मंजूर किया । लेकिन जब प्यार का पागलपन मुझ पर पूरी तरह सवार हो गया तो तुम अलग हो गईं । कुछ भी हो आज

मेरी सब भूल दूर हो गई और मैं तुम्हे फिर वही पहली ताहिरा समझने लगा हू । हा, तो यह कहो कि आगे क्या प्रोग्राम है ?'

'आप जो तैयार करें मै उससे सहमत रहूगी ।'

'मेरी मर्जी तो यही है कि हम दोनो की शादी हो जाए ।'

'मुझे मजूर है ।'

'इशरत को तो शायद मै तलाक दे दूगा ।'

'आप उसे तलाक दे या न दे मुझे इससे कोई मतलब नही । मै तो सिर्फ आपके प्यार की भिखारिन हू ।'

'फिर यह काम कैसे शुरू किया जाए ?'

'हमारे खानदान में इस बारे मे लड़कियों पर कोई पाबन्दी नहीं । वे जिसके साथ चाहे शादी कर सकती है और मां बाप को कोई ऐतराज नही हो सकता । जब मै इस बारे मे आजाद हू तो इस काम को शुरू करने का ढग सोचना एक बेकार सी बात है । हा, मै यह जरूर चाहती हूं कि शादी से पहिले आप को अपने सगे-सम्बन्धियो से जरूर मिला दू ताकि उन्हे विश्वास हो जाए कि मेरा कदम गलत नही ।'

नाजिम का हृदय प्रसन्नता के मारे बल्लियो उछल रहा था । उसे यह विश्वास हो चला था कि ताहिरा से नए सम्बन्धों की कोई आशा नही और उसे यों ही व्याकुल जीवन बिताना पड़ेगा किन्तु आज जब वास्तविकता स्पष्ट हुई तो उसकी प्रसन्नता का पारावार न रहा । ऐसी प्रसन्नता जो मृत्युदण्ड पाए बन्दी को सहसा स्वतंत्र होने की सूचना प्राप्त होने पर होती है । नाजिम ने ताहिरा को हाथ से पकड़कर अपने पास बिठा लिया । ताहिरा ने स्वयं उसके गले में बाहे डाल दीं और बोली—

'प्यारे नाजिम ! आज मुझे फिर अपने सुनहरे सपने नजर आ रहे है ।'

नाजिम के नेत्रों से प्रसन्नता के आसू बह निकले और उसने विवशता की दशा में अपने होंठ ताहिरा के पतले-पतले कोमल होठों पर रख दिए ।

## १५

**

डाक्टर नाजिम शैक्स्पीयर का नाटक 'ऐज यू लाइक इट' पढ़ा रहा था। आज उसका मुख कमल के समान खिला दिखाई पड रहा था और उसका स्वर सुखात्मक नाटक के लिए बहुत अधिक उपयुक्त प्रतीत होता था। नाटक के हास्य-पात्र 'टच स्टोन' की चर्चा भी उसने परिहास के स्वर मे की और सभी छात्र हंस पडे। एक छात्र ने दूसरे छात्र से धीरे से कहा—

'प्रतीत होता है डा० नाजिम को यह पता चल गया है कि शैक्स्पीयर का यह नाटक 'अथैलो नहीं 'ऐज यू लाइक इट' है।'

यह सुनकर दो चार छात्र मुस्कराए। डा० नाजिम भी समझ गए कि उनकी मुस्कराहट का क्या अर्थ है ? उसने पूरी क्लास पर एक विहंगम दृष्टि डालते हुए ताहिरा की ओर देखा। वह भी उसे तक रही थी। उसके नेत्रों में प्रसन्नता और प्यार की एक विशेष झलक दिखाई पड़ी। उसने अपने चेहरे पर लहराती हुई बालों की एक लट को सुलझाया और नाजिम को देखकर मुस्कराने लगी। प्रवीन भी कनखियो से उन दोनों को देख रही थी और मन ही मन प्रसन्न हो रही थी कि यह नाटक दु:खान्त बनते-बनते सहसा सुखान्त बन गया। वह अपने भाई को बहुत चाहती थी और उसे दु:खी देखना उसे सह्य न था। जब शैक्स्पीयर का पीरियड समाप्त हुआ तो डा० नाजिम कमरे से बाहर निकला। ताहिरा शीघ्रता से उठकर उसके पीछे पीछे गई और उसे लेकर एक ओर खडी

हो गई। प्रवीन ने विश्वास पूर्वक अपनी पुस्तकें संभालीं और कमरे से निकल कर चल दी। जब वह ताहिरा और नाजिम के समीप से निकली तो वे धीरे २ बाते कर रहे थे। प्रवीन दूसरी ओर मुह करके मुस्कराती हुई आगे बढ गई। उसे देखकर ताहिरा के मुह से स्वत: निकला—

'प्रवीन।'

प्रवीन ने पीछे देखते हुए हसी के स्वर मे कहा—

'आप दोनो इस समय मसरूफ है। फिर भेट होगी।'

यह कहकर वह आगे बढ गई और ताहिरा कुछ लजा सी गई। नाजिम ने मुस्कराते हुए कहा—

'प्रवीन बड़ी शरीर है। उसे सब कुछ मालूम है।'

ताहिरा ने कहा—

'मालूम क्या है, उसी ने तो मुझे आपकी बढ़ती हुई परेशानी की खबर दी और सलाह दी कि मै आपके पास पहुचकर आपकी तसल्ली करूं।'

नाजिम ने कहा—

'अच्छा, तो यह बात है? मैं भी हैरान था कि एक दम मेहरबान निगाह कैसे आ पडी मुझ पर?'

ताहिरा ने बिगडते हुए कहा—

'फिर आपने ऐसी बातें करनी शुरु कर दीं जैसे यह सब प्रवीन के कहने पर हो रहा हो और मै उसके कहने पर आपके पास पहुंची। नहीं तो मेरे दिल में आपके लिए कोई प्यार नही था। यही बात है न?'

नाजिम ने उसे सुनाते हुए कहा—

'प्यारी ताहिरा! यह बात नहीं। यह तो मैंने सिर्फ मजाक से कहा था वर्ना मुझे तुम्हारे प्यार पर पूरा २ विश्वास है। और हां, वह तुम मुझे अपने घर वालों से मिलाने के लिये घर पर कब बुला रही हो?'

ताहिरा ने मुस्कराते हुए कहा—

'यही बात तो मै आप से करना चाहती थी कि प्रवीन ने हमारा ध्यान किसी और तरफ लगा दिया।'

'हां, तो क्या बात है वह ?'

'अम्मा से मैंने चर्चा की थी और आपके बारे में उन्हें सब कुछ बता दिया था। वे इस रिश्ते से खुश हैं। उन्हों ने आज कालेज आते वक्त मुझे कहा था कि नाजिम को वापसी घर लेते आना। अब चलिए मेरे साथ। और हां, आज आप दोपहर का खाना भी हमारे यहा ही खाएगे।'

'लेकिन यह बात तो ठीक नही है। खाने की तुमने पहले से दावत क्यों नहीं दी ? भला यह भी कोई बात है कि ठीक वक्त पर यह कहा जाए कि आज आप दोपहर का खाना हमारे हा खाएंगे ?'

ताहिरा ने नाजिम के कोट की एक सिकुडन ठीक करते हुए कहा—

'मतलब तो जो है वह है ही, यह खाना तो सिर्फ एक बहाना है इस वक्त तो आप मेरे साथ प्रोफेसर नाजिम के रूप में जा रहे हैं लेकिन जब आप वहा से वापस आएगे तो मेरे मगेतर के रूप मे आएंगे।'

नाजिम ने अट्टहास करते हुए कहा—

'बहुत अच्छा। तो मुझे यह तुम्हारी दावत मंजूर है।'

'फिर चलिए। कालेज में आपको और काम तो है नही।'

'लेकिन तुम्हारे तो अभी एक दो पीरियड बाकी हैं।'

ताहिरा ने उसे प्यार से देखते हुए कहा—

'नाजिम ! क्या आप यह ख्याल करते है कि मै पढ़ने के लिए आती हूं ? सच । तो मैं सिर्फ आपको देखने के लिए आ जाती हूं वर्ना कालेज की पढ़ाई तो मै कभी की छोड बैठी हूं।'

नाजिम के नेत्रों मे करुणा झलक आई। वह बोला—

'यही हालत मेरी है। मै भी कालेज की प्रोफेसरी एक समय से छोड़ बैठा हूं। अब तो यह प्रोफेसरी सिर्फ तुम से मिलने का एक बहाना है लेकिन मेरा ख्याल है कि इस रिश्ते के तै हो जाने के बाद तुम कालेज में पढ़ना शुरु कर दो और मै अपने आपको कालेज का प्रोफेसर समझने लगू। कहो, क्या राय है तुम्हारी इस बारे में ?'

ताहिरा ने मुस्कराते हुए कहा—

'हां, मै भी यही चाहती हू। अच्छा तो फिर चलो। देर हो रही है। घर वाले इन्तजार कर रहे होगे।'

नाजिम ताहिरा के साथ हो लिया। कालेज के द्वार पर ताहिरा का शोफर मोटर लेकर पहुंच चुका था। दोनो उसमे बैठ कर चल दिए। ताहिरा की कोठी लारस रोड पर थी। कार ब्राडर्थ रोड से होती हुई मैक्लोड रोड पर पहुची। नाजिम ने सड़क पर दूर तक दृष्टि दौड़ाई। आज उसे यह सडक अनेक मनोरजनों को अपने पल्लू मे समेटे दिखाई पड़ रही थी। पहले एक दिन जब वह इस सड़क से गुजरा था तो उसे उससे एक प्रकार का भय प्रतीत हुआ था। पैलेस सिनेमा को उसने अच्छी प्रकार देखा और मन ही मन कहने लगा। 'यह सिनेमा लाहौर भर के सिनेमा हाउसो से शानदार है। किसी दिन ताहिरा के साथ कोई अच्छा सा फिल्म देखने के लिए यहा आऊगा।'

कार फर्राटे भरती हुई पैलेस सिनेमा के पास से निकल गई। वह माल रोड के चौराहे से गुजरती हुई लारस रोड पर पहुच गई। ताहिरा ने नाजिम को सम्बोधन करते हुए कहा—

'देखिये, वह सामने रही हमारी कोठी।'

नाजिम ने मुस्कराते हुए कहा—

'अब देखे इम्तिहान मे पूरे उतरते है या नही।'

ताहिरा ने धैर्य बधाते हुए कहा—

'आप फिक्र न कीजिए। मेने आपकी कामयाबी का पहले से इन्तजाम किया हुआ है।'

नाजिम ने कहा—

'हां साहब! यह तो सही है लेकिन हमारी मसल तो यह है कि दूध का जला छाछ को फूक २ कर पीता है।'

ताहिरा अभी इसका उत्तर भी न देने पाई थी कि कार कोठी की ड्योढ़ी में जा खड़ी हुई।

ताहिरा नाजिम को साथ लेकर ड्राइंग रूम में चली गई। वहां पहले

से घर के लोग नाजिम से मिलने के लिए बैठे थे। ताहिरा ने एक-एक से नाजिम को मिलाया। अन्त में वह एक नव युवक की ओर सकेत करते हुए बोली—

'मेरे बड़े भाई शमीम।'

उस युवक को देखते ही नाजिम के चेहरे का रग उड़ गया और उसके नेत्र खुले के खुले रह गए। यह वही युवक था जिसे नाजिम ने कई बार इशरत के साथ देखा था। इसके साथ इशरत उस दिन कार पर बैठी सिनेमा देखने जा रही थी। नाजिम ने मुर्झाए हृदय से उसकी ओर हाथ बढाया और उस से हाथ मिलाते हुए कहा—

'बड़ी खुशी हुई आप से मिलकर।'

शमीम ने क्रोधपूर्ण दृष्टि से उसकी ओर देखा और उत्तर मे कुछ न बोला।

ताहिरा ने नाजिम को एक कुर्सी पर बिठा दिया और ताहिर के पिता और माता ने उस से बाते आरम्भ कर दी। उसकी मा ने नाजिम से कहा—

'बेटा! ताहिरा तुम्हारी बहुत तारीफ करती है और कहती है डा० नाजिम कालेज के तमाम प्रोफेसरों से काबिल हैं।'

शमीम को देखकर नाजिम कुछ घबरा सा गया था। वह उस की उपस्थिति मे कोई बात नही करना चाहता था किन्तु जब ताहिरा की अम्मा ने बातचीत का क्रम आरम्भ किया तो विवश उसे उस की बात का उत्तर देना ही पड़ा। उसने घबराए हुए स्वर मे कहा—

'यह ताहिरा की महरबानी है कि वह मुझे ऐसा समझती है। वर्ना मुझ मे तो कोई ऐसी खूबी नही।'

ताहिरा के पिता ने अट्टहास करते हुए कहा—

'अजी साहब! छोड़िए इस बात को। ताहिरा ही क्या इल्मी और अदबी सोसायटी में हर जगह आप के इल्म की तारीफ़े होती हैं। खैर, आप यह बताइए कि अभी तक आप की शादी नहीं हुई?'

नाजिम ने शमीम को देखते हुए कहा—

'तो क्या आप से ताहिरा ने इसकी कोई चर्चा नहीं की ?'

'की क्यों नही ? उसने यह कहा है कि पहली बीवी से आप का कुछ मत भेद है और उस से आपकी नही निभती । लेकिन खैर हमें इसकी परवा नही । जब ताहिरा ने अपको पसन्द किया है तो हमें इस की पसन्द पर कोई ऐतराज नही । डाक्डर साहब ! बात असल मे यह है कि हम शादी और ब्याह के बारे मे बेटे और बेटी की राय का ख्याल रखते है । और इस बात मे कोई बुरा नही मानते । लाहौर मे ऐसे घराने है जो हमारे इस ढग के खिलाफ है और शादी के बारे मे अपने बेटा बेटी से पूछना अपमान समझते है । लेकिन हम उन लोगों मे से नही है । हमारे बच्चो को इस बारे मे पूरी २ आजादी है । खैर, तो मेरा मतलब यह था कि हमे ताहिरा की पसन्द पर कोई ऐतराज नही ।'

वह युवक क्रोध मे भरा हुआ था और बोला—

'आपको ऐतराज नही लेकिन मुझे जरूर है ।'

यह सुनकर सबके श्वास जहा के तहा रुक गए । ताहिरा तो बहुत परेशान हुई । नाजिम भी घबराया किन्तु शीघ्र ही संभल कर बैठ गया और प्रतीक्षा करने लगा कि देखें ये साहब क्या कहते है ?'

ताहिरा के पिता ने चकित होते हुए कहा—

'तुम्हे क्या ऐतराज है ?'

शमीम ने कहा—

'इन्होने अपनी बीवी से जो बर्ताव किया है उसे मै अच्छी तरह जानता हूं । यह बात ख्याल में भी नही लाई जा सकती कि ताहिरा इस शादी से खुश रह सकेगी । जो शख्स बार-बार शादियां करने का आदी हो चुका हो वह किसी बीवी को खुश नही रख सकता ।'

ताहिरा के पिता ने नाजिम की ओर कुछ इस प्रकार देखा जैसे वे इसका उत्तर सुनना चाहते है । नाजिम उनका तात्पर्य समझ गया और बोला—

'मैं इस बारे में कुछ कहना नहीं चाहता। अपनी बीवी से मैंने जो बुरा बर्ताव किया या जिन हालात में मेरी शादी हुई वह ताहिरा को मालूम है।'

ताहिरा ने परेशान होते हुए कहा—

'हां, मुझे अच्छी तरह से मालूम है कि ज्यादती इनकी है या इनकी बीवी की। कुछ भी हो मैं इस बारे में और छानबीन करना नहीं चाहती मैं अपना फैसला दे चुकी हूं और इसे वापस लेने को तैयार नहीं।'

शमीम ने आवेश में आते हुए कहा—

'ताहिरा! तुम गलती कर रही हो। मैं शादी-ब्याह के मामले में लड़के-लड़की की राय की आजादी को मानता हूं लेकिन तुम्हें कूएं में गिरते देखना पसन्द नहीं करता। मैं तुम्हें इस शादी से रोकूंगा और इस कोशिश में कोई कसर उठा नहीं रखूंगा।'

ताहिरा ने क्रोध से उफनते हुए कहा—

'भाई जान! आप मेरे मामले में दखल न दें। नाजिम अच्छे हैं या बुरे हैं मैं उन्हें अपना जीवन साथी चुन चुकी हूं और अपने इस चुनाव को किसी हालत में भी वापस लेना नहीं चाहती।'

शमीम ने क्रोध में भरकर कहा—

'क्या तुम एक बदमाश आदमी से शादी करना पसन्द करती हो?'

ताहिरा कुछ उत्तर न देने पाई थी कि नाजिम ने गम्भीरता से कहा—

'तुमने मेरी बदमाशी क्या देखी?'

'क्या यह सच नहीं कि आपने इशरत से किताबों की दूकान पर एक गन्दा मजाक किया?'

नाजिम ने ताहिरा के माता पिता की ओर मुंह फेरते हुए कहा—

'इससे पहले कि मैं मिस्टर शमीम के ऐतराज का जवाब दूं यह बताना चाहता हूं कि जिस इशरत की चर्चा इन्होंने की है वह कौन है।'

शमीम को अब अपनी भूल का अनुभव हुआ कि उसने एक असंगत

विवाद का श्रीगणेश किया है जिससे उसकी अपनी पोल खुलेगी। अतः उसने कहा—

'मैं कुछ नहीं सुनना चाहता।'

ताहिरा के पिता ने उसे डाटते हुए कहा—

'शमीम ! इनसानों की तरह बैठो। वर्ना यहां से निकल जाओ।'

यह कहने के पश्चात् उसने नाजिम से कहा—

'हां साहब ! वह इशरत कौन है ?'

नाजिम ने कहा—

'इशरत मेरी बीवी का नाम है। जिस वक्त की ये बात करते है उस वक्त मेरी उनसे शादी नही हुई थी। न वह मुझे जानती थी और न मैं उसे। बुर्का उसकी बांह परपड़ा था और वह मि० शमीम के साथ किताबो की दूकान पर किताबो के टाइटिल देख रही थी। मैं भी अपने एक दोस्त के साथ एक किताब की खोज में उसी दूकान पर पहुच गया। पहली बात तो यह कि मुझे इशरत की यह बात बुरी लगी कि वह बुर्का उतारे आजादी से इधर-उधर दूकान में घूम रही थी। मैं बुर्के या पर्दे के खिलाफ नही हूं अगर उसका इस्तेमाल सही हो। हा, घर वालों से पर्दा और गैरों से बेपर्द यह मुझे पसन्द नहीं। हां, तो मैं यह कह रहा था कि बुर्का हाथ में लिए इशरत का आजादी से धूमना मुझे कुछ बुरा-सा लगा। इसके अलावा शमीम से वह कुछ इस तरह की बातचीत कर रही थी जो एक औरत चाहे वह कितनी ही आजाद हो एक पराए मर्द से नहीं कर सकती।'

ताहिरा के पिता ने आरक्त नेत्रों से शमीम की ओर देखा और फिर नाजिम की ओर देखते हुए बोले—

'हां, तो इन दोनों में क्या बातचीत हो रही थी ?'

नाजिम ने उत्तर दिया—

'इन्होंने सैक्स की एक किताब की तरफ इशारा करते हुए कहा, 'शादी से पहले यह किताब पढ़ लो।' इस पर इशरत ने कहकहा लगाया

और बोली 'यह किताब तुम अपनी होने वाली बीवी को क्यों नहीं भेज देते ?' पहले मेरा यह ख्याल था कि ये दोनों या तो भाई बहिन हैं या मिया बीवी। लेकिन इनकी बातचीत ने यह साबित कर दिया कि इनका एक दूसरे से कोई सम्बन्ध नही । मैंने यह देख चुपके से अपने दोस्त से कहा—'बेशर्मी की हद है।' मेरी यह बात इशरत के कान मे भी पड़ गई। उसने यह सुनते ही मेरे मु ह पर एक तमाचा जड दिया। इसके बाद ये दोनों दूकान से निकल गए। दूसरी बार मैंने इन दोनो को फिर एक कपडे की दूकान पर देखा और इन्होने मुझे से मजाक करने शुरू कर दिए। उस वक्त तक मुझे मालूम नही था कि ये ही श्रीमती मेरी बीवी बनने वाली है और न शादी से पहले यह मालूम हो सकता था। क्योंकि बदकिस्मती से मैं ऐसे घराने से सम्बन्ध रखता हूं जो शादी से पहले लड़के और लड़की के मिलाप को अच्छा नही समझता। आखिर शादी के बाद मुझे असल बात का पता चला। अब आप ही कहिये कि ऐसी लड़की से मेरा निबाह हो सकता था जो मेरी तौहीन कर चुकी हो और जिसे मैं एक पराए मर्द के साथ मजाक करते देख चुका था ?'

ताहिरा को इन घटनाओं की इससे पूर्व कोई जानकारी न थी क्योंकि नाजिम ने उसे भी ये घटनाएं न सुनाई थी । वह यह सुनकर आश्चर्य चकित रह गई। उसके पिता ने उत्तर दिया—

'हा, यह आपने सही कहा, ऐसी लड़की से एक शरीफ लड़के का निबाह होना मुश्किल है।'

नाजिम ने कहा—

'अभी यह बात यहीं खत्म नही हो जाती । हां, तो जब हम दोनों में निभ न सकी तो इशरत अपने मैके चली गई और अभी तक वही है। मैं यह जानता हूं कि हमारे यहां कुछ सोसाइटियां ऐसी भी हैं जिनमें कंवारे लड़के और लडकिया आजादी से इकट्ठे घूमते फिरते हैं और उन की दोस्ती पर ऐतराज नहीं किया जा सकता। शादी के बाद लड़की के किसी और मर्द के साथ घूमने-फिरने पर जरूर ऐतराज होता है। शादी

से पहले इशरत का शमीम मियां के साथ घूमना-फिरना इतना बुरा नही माना जाता जितना अब है । लेकिन मैंने उसे शादी के बाद भी इनके साथ घूमते-फिरते और सिनेमा जाते देखा । पूछ लीजिए इनसे ।'

शमीम पर जैसे घड़ो पानी पड़ गया । वह मौन बैठा पश्चाताप कर रहा था । अब उसकी पुरानी शत्रुता सिद्ध हो चुकी थी और इस सम्बन्ध का विरोध करना उसके बस की बात नही रही थी । नाजिम ने फिर कहना आरम्भ किया—

सच पूछिए तो इशरत और मुझ में जो शक-रजी पैदा हुई उसकी तमाम जिम्मेदारी इन शमीम साहब पर है ।'

यह सुनकर शमीम कुछ चमका और बोला—

'आपको उनके साथ मेरा घूमना-फिरना ही बुरा लगा है न ? लेकिन आप शायद नहीं जानते, हमारे घराने मे इस बात को बुरा नही माना जाता । अगर बुरा समझा जाता तो ताहिरा यो आपको आजादी से इस घर मे न ले आती । अब तो मुझे यह भी डर है कि अगर आप इस तरह इकट्ठे घूमने-फिरने पर ऐतराज करते है तो शादी के बाद ताहिरा पर भी कई पाबन्दिया लग जाएगी जिसे इस घर की कोई लडकी सहन न कर सकेगी ?'

नाजिम ने गम्भीरता से कहा—

'मै पहले भी कह चुका हूं कि कंवारपने में लड़की के अपने दोस्त लड़कों के साथ घूमने-फिरने पर सिर्फ आजाद घरानों के लिए लोग ऐतराज नही करते लेकिन शादी के बाद लड़की को किसी दोस्त की जरूरत नही रहती । उसे एक ऐसा साथी मिल जाता है जो उसका दोस्त भी होता है और शौहर भी । जो लड़की शादी के बाद भी दोस्तों के साथ घूमती-फिरती है उसे मै कभी अच्छा नही समझता । अगर शादी के बाद ताहिरा ने भी ऐसा ही किया तो मैं इसे पसन्द नही करूंगा ।'

ताहिरा विजयी के समान मुस्करा-मुस्कराकर शमीम की ओर देख रही थी । नाजिम की अकाट्य युक्तियों ने उसकी एक न चलने दी । उस

की बात सुनने के पश्चात् ताहिरा के पिता ने कहा—

'हा, यह आपने बिल्कुल ठीक कहा है । शादी के बाद लड़की का दोस्त उसका मिया ही होता है । मैं आज़ाद ख्याल का होते हुए भी इसके खिलाफ हूं कि शादी के बाद लड़की अपने दोस्तों के साथ घूमे-फिरे ।' हा, तो बेटा ! मैं अपनी बेटी ताहिरा के इस चुनाव का समर्थन करता हू । मैंने अब तुम्हे डाक्टर साहब के बजाए बेटा कहा है इससे तुम समझ सकते हो कि मेरा यह समर्थन कितना जोरदार है । मुझे शमीम की यह कारगुजारी सुनकर दुःख भी हुआ है और शर्म भी । बात असल मे यह है कि आजाद ख्याल घरानो के कुछ लडके और लड़कियां आजादी का मतलब गलत समझ लेते है और आजाद ख्याली को बदनाम करते है । हम लोग पर्दे के पावन्द नही । शादी ब्याह के मामले में बेटे बेटी की राय पर चलते है लेकिन यह ठीक नही समझते कि हमारे लड़के लड़कियां इस आजाद ख्याली को ही मा बाप समझ बैठे और अपने घरानो को बदनाम करते फिरे ।'

ताहिरा की मा मौन सब बातचीत सुन रही थी । जब उसके मियां बात कर चुके तो वह नाजिम से प्यार करती हुई बोली—

'बेटा ! मैं भी इस मामले में ताहिरा के अब्बा की हमख्याल हूं । शमीम तो तुम जानते हो अभी बच्चा है लेकिन तुम फिक्र न करो । वही बहिन की शादी का सारा प्रबन्ध करेगा ।'

फिर उसने ताहिरा की ओर मुह करते हुए कहा—

'हा, तो ताहिरा ! वह चीज कहा है ?'

ताहिरा ने अलमारी से एक छोटी-सी डिबिया निकाली और अपनी मां के हाथ मे देने लगी । वह यह देख कर बोली—

'नही बेटी ! तुम खुदा का नाम ले कर अपने हाथ से पहनाओ ।'

ताहिरा ने उस डिबिया से ज़मुर्रद के नगीने की एक अंगूठी निकाली और नाजिम की कनिष्ठिका में पहना दी ।

यह देखकर शमीम क्रोध में उफनता बाहर निकल गया ।

## १६

**

नाजिम से ताहिरा का सम्बन्ध तो निश्चित हो गया किन्तु शमीम चिढ़ गया। पहले तो वह अकारण इसके विरुद्ध था किन्तु जब नाजिम ने भरे घर मे पोल खोल दी और उसकी कामुकता का कच्चा चिट्ठा उसके माता पिता के सामने खोलकर धर दिया तो वह और भी नाजिम के विरुद्ध हो गया। नाजिम अति शान्त चित्त व्यक्ति था और इस बात के विरुद्ध था कि किसी की बुराइयों को प्रकट किया जाए किन्तु जब उसने देखा कि शमीम ने एक काल्पनिक और मनघडत घटना का वर्णन करके उसे अपमानित करने का यत्न किया है तो उसे अपनी सफाई में वास्तविकता जितलानी पडी। यदि उसके सम्मान पर आंच न आती और उसे अपमानित होने का भय न होता तो वह किसी दशा में भी शमीम के व्यवहार को नग्न करने का यत्न न करता। उसके विवाह को पर्याप्त समय हो चुका था किन्तु उसने आज तक अपने पिता अथवा बहिन को भी यह नहीं बताया था कि यह इशरत कौन है और विवाह से पूर्व उसे इसके हाथों किस प्रकार अपमानित होना पडा। जो व्यक्ति ऐसी बातें अपने घर के लोगों को भी न बताए उससे किसी प्रकार यह आशा नहीं हो सकती कि वह किसी दूसरे के दोष देखे। उसने यदि शमीम के विरुद्ध कुछ कहा तो विवश होकर। किन्तु इसी कारण वह नाजिम का हार्दिक शत्रु हो गया और उसने निश्चय कर लिया कि इस सम्बन्ध को

असफल कराने का पूरा प्रयत्न करेगा।

शमीम ने इस सम्बन्ध को समाप्त कराने के लिए अनेक उपाय किए किन्तु एक तो उसके माता पिता यह जानते थे कि वह नाजिम के विरुद्ध है और वे सहज ही उसकी बातों मे नही आ सकते थे। दूसरे ताहिरा हर समय चौकस और होशियार रहती थी और उसकी चालों को व्यर्थ सिद्ध करने का यत्न करती रहती थी।

सम्बन्ध निश्चित हो जाने के दूसरे दिन ही ताहिरा ने नाजिम को सम्मति दी कि वह अपने घर लौट जाए। नाजिम ने इस सम्मति को उचित समझा और किराए का मकान छोड़कर वापस घर आ गया। जब मिया मैराज उद्दीन को उसके वापस लौटने की सूचना मिली तो वे बहुत प्रसन्न हुए और उसके कमरे में आकर बोले—

'बेटा ! मै शर्मिन्दा हूं कि मेरी गलतियों का फल तुम्हें भुगतना पड़ा। जिस दोस्त को खुश करने के लिये मैने तुम्हारी शादी इशरत से की उसने भी मुझे नीचा दिखाने मे कोई कमर उठा न रखी। इस शादी की जिद्द को पूरा करने के लिए मैने अपने खानदानी रिवाजो की आड़ ली मगर इस शादी के बाद मुझे जिस तरह नीचा देखना पड़ा वह शायद उन पुराने रिवाजों को तोड़ देने पर भी न देखना पड़ता। अब मैने निश्चय कर लिया है कि दोस्तों या झूठी इज्जत के लिए अपने बच्चों की सुख शान्ति खत्म न करूंगा और शादी ब्याह के बारे में तुम दोनों भाई बहिनों की राय पर चलूगा। —हां, अगर तुम मुझे अपना वालिद जानकर ऐसे कामों में मेरी राय पूछ लो तो तुम्हारी बड़ाई है। नहीं तो इस शादी के बाद मुझे कतई यह हक नहीं रहा कि तुम्हें ऐसे कामों में किसी तरह की राय भी दे सकू।'

नाजिम ने कहा—

'अब्बाजान ! ये आप किस तरह की बातें कर रहे हैं ? इस शादी में मै आपको किसी तरह दोषी नहीं ठहराता। असल में सारा दोष हमारे समाज का है जो ऐसे कामों में लड़के या लड़की से राय लेने में रुकावट

डालता है। आपने वही किया है जो दुनिया करती है। मैं उन लोगो को भी पसन्द नही करता जो समाज की पाबन्दियों से इतने आजाद हो जाते हैं कि ऐसे कामों मे बिल्कुल कोई राय ही नही देते और अपने बच्चो को उनकी मर्जी पर छोड़कर रिश्ता ठूढने की खुली आजादी दे देते है। हम दोनों भाई बहिन भी आपके हुक्म के पाबन्द है और कोई काम आप की राय के बिना करना नही चाहते।'

मिया मैराज ने प्रसन्न होते हुए कहा—

'खुदा का लाख २ शुक्र है कि उसने मुझे ऐसी औलाद दी है लेकिन इस बात का दु ख भी है कि मैंने अपनी औलाद के इस ख्याल का नाजायज फायदा उठाया है। खैर, इशरत से तुम्हारी शादी मेरे लिये एक ऐसा पाठ है जिसे मै कभी नही भूलूगा। हा, मैंने यह भी सुना है कि तुम एक और लडकी से शादी करना चाहते हो। प्रवीन ने मुझे बताया है कि उसके मां बाप ने हा भी कर ली है। अगर यह सच है और लड़की तुम्हे पसन्द है तो मेरी तरफ से तुम्हे इजाजत है।'

नाजिम प्रसन्नता के मारे खिल उठा। उसका विचार था कि सम्भव है उसके पिता अपने स्वभाव से विवश होकर इस विवाह का विरोध करें। जब उसने इन्हे विवाह के लिए तैयार पाया तो उस की प्रसन्नता की सीमा न रही। उसने कहा —

'हा अब्बाजान ! आपकी यह खबर सही है। वे लोग तो कुछ आजाद ख्याल के है और पर्दे वगैरह के भी पाबन्द नही मगर ऐसे घरानों की तरह भी नही जिनकी आजादी निर्लज्जता की हद तक पहुची हुई है। मैंने तो उनके बारे मे छान बीन करली है अगर आप भी चाहे तो कर सकते है।'

मियां मैराज ने कहा—

'बेटा ! अगर तुमने छानबीन करली है तो फिर मुझे इसकी क्या जरूरत है ? तुम शौक से वहा विवाह करो। मै तुम्हारी राय से सहमत हूं।'

मियां मैराज उद्दीन यह कहते हुए अपने कमरे में चले गए।

नाजिम फिर प्रसन्नचित्त रहने लगा। उसके चहरे का पीलापन जाता रहा और वह पुनः आरक्त हो आया। बीते कुछ मासों मे उसे जिस प्रकार धैर्य की परीक्षा देनी पड़ी उन्होने उसके स्वास्थ्य पर बहुत बुरा प्रभाव डाला और उसके परिचित उसे देखकर चकित रह जाते थे कि उसे हो क्या गया है ?

वह वर्षों का रोगी प्रतीत होता था किन्तु ताहिरा से सम्बन्ध निश्चित हो जाने के पश्चात् उसके दिन फिर गए और उसका स्वास्थ्य दिन प्रतिदिन सुधरने लगा। ताहिरा से प्रतिदिन उसकी भेंट होती। कभी कालेज में और कभी घर पर। वह घण्टों उसके समीप बैठी रहती और उससे प्यार की बाते करती रहती। एक दो बार उसने उसे अपने घर खाने पर भी बुलाया। घर के सभी लोग उससे प्यार से मिलते थे केवल शमीम उससे खिचा खिचा सा रहता था और खुलकर उस से बात नही करता था।

शमीम इशरत से भी मिलता रहा। इसने उसे बता दिया कि नाजिम का सम्बन्ध उसकी बहिन ताहिरा से निश्चित हो गया है। वह यह सुन कर बड़ी सटपटाई और बोली—

'तुमने इस रिश्ते को रोकने की कोशिश क्यों नही की ?'

शमीम ने पूरी घटना उसके सामने कह सुनाई और बोला—

'अब बताओ मै क्या कर सकता था ? लेकिन इतना होने पर भी अब तक मेरी कोशिश यही है कि यह बेल मढे न चढ़ने पाए।'

इशरत ने उसकी मिन्नत करते हुए कहा—

'शमीम ! जिस तरह भी हो इस रिश्ते को रोकना चाहिये। इसलिये नहीं कि मै नाजिम के घर जाना चाहती हूं बल्कि इसलिए कि मुझे उस घर से सख्त घृणा है और मै नही चाहती कि तुम्हारी बहिन अब वहां जाए।'

शमीम ने चिन्तित स्वर में कहा—

'मेरा अपना भी यही ख्याल है मगर अब तक तो मेरे तमाम हीले

बहाने बेकार साबित हुए है और मेरे मां बाप समझ गए हैं कि मै सिर्फ दुश्मनी की वजह से इस रिश्ते के खिलाफ हूं ।'

इशरत ने कुछ रुककर कहा—

'लेकिन दुनिया मे कोई काम नामुमकिन नहीं । सिर्फ उसे करने का हौसला चाहिये ।'

'तो फिर क्या करना चाहिये ? तुम ही बता दो ।'

'सिर्फ विरोध करने से यह रिश्ता न टूटेगा ।'

'फिर इस के टूटने की सूरत क्या हो सकती है ?'

'किसी तरकीब से ही इसे खत्म किया जा सकता है ।'

'तो बताओ, क्या तरकीब हो सकती है ? तुम्हारा दिमाग तो ऐसे कामों में बडा चलता है ।'

इशरत ने अट्टहास किया—

'हा साहब ! मै तो इस काम की माहिर हू । खैर, मै कोई तरीका सोचूगी और उम्मीद है कि हमें इस काम मे नाकामी नही होगी ।'

इशरत बडी बनी हुई स्त्री थी । जोड़-तोड करने और लगाने बुझाने में बड़ी चतुर थी । अब उसने शमीम के साथ मिल कर इस शादी को रुकवाने की विधि सोचनी आरम्भ की । हर दूसरे तीसरे दिन दोनों मिलते और इस बारे में विचार विमर्श करते ।

ताहिरा और नाजिम को इन दोनों की योजना का कोई पता न था । वे यह तो जानते थे कि शमीम इस सम्बन्ध के विरुद्ध है । उन्हे यह ज्ञात न था कि इन का विवाह रुकवाने के लिये एक लम्बा चौड़ा कार्यक्रम तैयार किया जा रहा है ।

एक दिन नाजिम कालेज से वापिस घर आया तो वहीद ने उसे टैलीफोन पर कहा—

'भई, आज शाम को किसी वक्त तुमसे मिलने आऊंगा ।'

नाजिम ने कहा—

'क्यों, खैर तो है ?'

'अरे मियां ! तुम हमेशा यही जवाब देते हो जैसे मुझ से तुम्हें मिलना अच्छा नहीं लगता।'

'वाह साहब ! खूब कहा यह भी आपने। तारीफ करता हूं इस की।'

'अरे मियां ! मजाक न करो। आज शाम कहीं जा तो नही रहे हो ?'

'आखिर बात क्या है ? आज गरीब खाना पर आ धमकने के लिए आप इतने बेचैन क्यों है ?'

'मालूम होता है भावज से सुलह हो गई है। वर्ना तुम्हारी आवाज में इस कदर लोच न होती।

नाजिम ने अट्टहास करते हुए कहा—

'हां, यह तो तुम ने सच कहा। वाकई तुम्हारी भावज से सुलह हो गई है लेकिन तुम जानते हो किस भावज से ?'

वहीद उस का तात्पर्य न समझ सका और बोला—

'खैर, यह भी अच्छा हुआ। मैं तो पहले ही कहता था कि यह आपस का मन मुटाव अच्छा नही है। अच्छा तो मैं शाम को आऊंगा। और हा, इस मिलाप की खुशी में मिठाई भी खाऊगा। भावज से कह देना।'

नाजिम ने रिसीवर टेलीफोन पर रख दिया। प्रवीन उस के पास ही बैठी थी। कहने लगी—

'भाई जान ! ये कौन साहब थे ?'

नाजिम ने मुस्कराते हुए कहा—

'वही भाण्ड था प्रोफेसर वहीद। कह रहा था कि आज शाम को मिलने आऊंगा।'

'भाई जान ! बडे मजे के आदमी है ये। जब भी यहां आते हैं हंसी मजाक की ही बातें करते रहते हैं। मैंने कभी इन्हें फिक्र में नहीं देखा।'

नाजिम ने कहा—

'हा, बेचारा अच्छा आदमी है। शहर भर में यही तो एक मेरा दोस्त है। और सच्ची बात है मै भी इस की दिल से इज्जत करता हू।'

'लेकिन भाई जान! ये प्रोफेसर वहीद भी तो बड़ा चाहते है आपको। आप नाराज होकर घर से चले गए तो अब्बा जान ने उन्हे बुलाया। जब उन्हे यह पता चला कि आप घर छोडकर जा चुके है तो बेचारे बडे परेशान हुए और कहने लगे, आप विश्वास रखिये मै उन्हें मना कर लाऊगा।'

'वहां मेरे पास भी तो पहुचे थे। कहने लगे कि अगर तुम किसी वजह से इस वक्त घर जाना नही चाहते तो मेरे यहा चलो। उन्होंने बहुतेरा कहा मगर मैने कोई बहाना बना कर उन्हे टाल दिया।'

ये दोनों बहिन भाई बाते कर ही रहे थे कि प्रवीन की कोई सहेली उसे मिलने के लिये आ गई और वह उसे लेकर अपने कमरे मे चली गई।

प्रवीन के जाने के पश्चात् नाजिम ने अंग्रेजी का एक नावल पढ़ना आरम्भ कर दिया और इस प्रकार से साझ का समय कर दिया। इतने में प्रोफेसर वहीद आ धमके और आते ही उच्च स्वर में बोले—

'अस्सलाम अलेकुम।'

नाजिम ने मुस्कराते हुए उसकी ओर देखा और बोला—

'वा लेकुम सलाम।'

वहीद ने कुर्सी पर बैठते हुए कहा—

'सब से पहले मिलाप की वधाई मंजूर कीजिये और उसके बाद मिठाई लाइये जिस का तुमने टेलीफोन पर वचन दिया था।'

नाजिम ने कहा—

'मियां! पहले आराम से बैठ जाओ। आते ही मिठाई की धुन सवार हो गई तुम पर।'

वहीद ने हंसते हुए कहा—

'अरे भई! मिठाई तो बैठ कर ही खाऊंगा। खड़े-खडे खाने का मैं आदी नही।'

'अरे कोई काम की बात भी किया करो। हर वक्त मजाक ही सूझता रहता है तुम्हे।'

वहीद ने भेदपूर्ण स्वर में कहा--

'नाजिम ! तुम्हे एक मजेदार और दिलचस्प बात सुनाऊ। हमारे एक मित्र हैं। उनके वालिद का इन्तकाल हो गया है। कल मैं उनके घर पहुचा लेकिन मेरे यार ! जाते ही मैंने दो एक फिकरे चुस्त किये तो वे साहब खिलखिला कर हस पड़े। जनान खाना मे औरतो को जब ठहाकों की आवाज सुनाई दी तो सब पजे झाड़कर मेरे पीछे पड़ गई। बस, फिर तो मुझे वहां से दुम दबाकर भागना पड़ा। शाम तक एक शिकायती चिट्ठी हमारे वालिद के पास आ पहुची जिस मे यह लिखा था कि आपके साहबजादे पहले दर्जे के बदतमीज है और मरने वालों का मजाक उड़ाते है। बस फिर न पूछो कि हम पर क्या बीती। अब्बा जान ने वह अकल ठिकाने की कि तोबा भली।'

नाजिम की हस-हंस कर बुरी दशा हो गई। वह बोला—

'तुम भी तो चुगद हो। भला मातम पुरसी करते वक्त भी कोई मजाक की बाते करता है ? अच्छा यह बताओ कि क्या सलाह करना चाहते थे तुम मुझ से।'

वहीद ने कहा—'मियां ! वह भी मिठाई की बात है।'

'क्या है वह मिठाई की बात ?'

'अरे भाई ! हमारी शादी होने वाली है।'

'कहां रिश्ता हुआ है ?'

वहीद ने कहा—

'भई ! अच्छा घराना है। खत तो कई दिन से आया हुआ था लेकिन जवाब मैंने आज ही दिया है। मतलब हां कर ली है।'

'लड़की शक्ल सूरत से अच्छी है क्या ?'

वहीद ने अपनी जेब से फोटो निकाल कर नाजिम के हाथ मे दे दिया और बोला—

'अरे मियां ! तुमसे चोरी थोडी है ? तुम खुद देख कर सूरत के बारे में फैसला कर सकते हो। रहा मामला स्वभाव का सो अपना तो यह विश्वास है कि

'सूरत के हम गुलाम है।'

नाजिम ने जब चित्र देखा तो वह सन्नाटे में रह गया। वह चित्र ताहिरा का था। उस के नीचे ताहिरा के हस्ताक्षर थे। नाजिम को कुछ यों अनुभव हुआ जैसे उस पर बिजली गिरी है। उसकी दृष्टि फोटो पर थी किन्तु ध्यान किसी और तरफ था। वहीद ने उसे मौन देख कर कहा—

'देखते क्या हो, इस लडकी को तुम जानते हो। यह तुम्हारे ही कालेज मे तो पढ़ती है।'

नाजिम ने संभलते हुए कहा—

'तो क्या तुम्हारा रिश्ता यहां हो गया है ?'

'अरे, हो ही गया समझो। एक छोटी सी रुकावट है वह भी कुछ दिनों तक दूर हो जाएगी।'

'वह रुकावट क्या है ?'

'वह यह है कि इस लड़की का रिश्ता किसी दूसरे लड़के से हो चुका है। उस का भाई तो शुरु से ही इस रिश्ते के खिलाफ था मगर बाद मे उसने अपने मां बाप और बहिन को भी अपना हम-खयाल बना लिया। अब ये लोग चाहते हैं कि कोई बहाना बनाकर पहले रिश्ते को तोड़ दें लेकिन उन्होंने यह कहला भेजा है कि जब तक पहला रिशता खत्म न हो जाए नए रिशते का ऐलान न किया जांए। उस के बाद मंगनी की रस्म पूरी की जाएगी।'

'तो क्या लड़की भी नए रिश्ते के लिए राजी हो गई है ?'

'अरे, तुम भी कमाल करते हो। यह घराना बड़ा आजाद खयाल है। भला वे लोग लड़की की राजी के बिना कुछ कर सकते हैं ? मुझे यह विश्वास दिलाया गया है कि लड़की भी राजी हो चुकी है।'

नाजिम ने कुछ देर मौन रहने के पश्चात् कहा—

'तो क्या तुम इस रिश्ते को पसन्द करते हो ?'

'यह भी खूब रही। क्या मैंने हां यों ही कर दी है ? अरे मियां ! मैं पसन्द ही करता हूं तो यह बात तै हुई है वर्ना कैसे हो जाती ?'

'फिर ठीक है। खुदा तुम्हें यह रिश्ता मुबारिक करे।'

'बड़ी बेदिली से तुमने यह कहा है ? क्या तुम्हें यह रिश्ता पसंद नही ?'

'पसन्द ही है तो मैंने तुम्हें मुबारिक दी है।'

'नही, मेरा मतलब यह है कि तुम्हारे ही कालेज मे तो यह पढ़ती है। हो सकता है इस में कोई बुराई हो और तुम इस रिश्ते को ठीक न समझते हो। अगर कोई ऐसी ही बात है तो मुझे बता दो। मैं अब भी इनकार कर सकता हूं।'

'नही, लड़की मे कोई बुराई नही। मेरे खयाल मे वह बहुत नेक लडकी है।'

'तो बस फिर यों समझ लो कि रिश्ता हो गया। सिर्फ तुम्हारी मंजूरी की देर थी। लेकिन देखो, अब शहबाला बनने की बारी तुम्हारी है।'

नाजिम ने उस की इस बात का कोई उत्तर न दिया। वहीद ने उसे मौन देख कर कहा—

'हां, यह तो तुम ने बताया ही नहीं कि भावज कहा है ? क्या इस वक्त घर ही मे है ?'

'नही।'

'कब तक आने वाली है ?'

'शायद कभी नहीं आएगी।'

'है, यह क्या ? तुम ही ने तो कहा था कि तुम दोनों में फिर मिलाप हो गया है ?'

'मेरा भी यही खयाल था मगर अब मैंने महसूस किया कि नहीं हुआ और शायद आगे भी न हो सकेगा।'

यह सुन कर वहीद उठ खडा हुआ और बोला—

'भई ! तुम्हारी ये बेतुकी बातें तो मेरी समझ मे आती नहीं। अच्छे भले चगे आदमी थे मालूम नही तुम्हे हो क्या गया है ? अच्छा मै तो अब चलता हू । सिर्फ तुम्ही से सलाह करनी थी इस मामले मे। खुदा हाफिज ।'

'वहीद यह कह कर कमरे से निकल गया। उस के जाते ही नाजिम को धरती और आकाश घूमते प्रतीत हुए और वह कुर्सी से गिर कर निश्चेष्ट हो गया।

## १७

**

वहीद का नाजिम के पास ताहिरा का चित्र लेकर पहुचना और यह कहना कि उस लड़की का सम्बन्ध उससे किया जा रहा है उस षड्यत्र का परिणाम था जो इशरत और शमीम ने नाजिम के विरुद्ध आरम्भ कर रखा था। इसका अर्थ यह नहीं कि वहीद उस षड्यंत्र मे सम्मिलित था। वास्तव में बात यह थी कि इशरत, वहीद और नाजिम के पारस्परिक सम्बन्धों से परिचित थी और उसे ज्ञात था कि वे एक दूसरे के हार्दिक मित्र है। और किसी दशा में भी एक दूसरे का हृदय दुखाना सहन नहीं करेगे। उसने शमीम द्वारा ताहिरा का एक हस्ताक्षर सहित चित्र प्राप्त कर लिया और किसी व्यक्ति के हाथ वहीद के यहां सम्बन्ध की सूचना भिजवा दी। हालाकि ताहिरा अथवा उसके माता-पिता को इस बारे में कुछ जानकारी न थी। इशरत को यह आशा थी कि वहीद इस बारे में नाजिम से सलाह लेगा। परिणाम यह होगा कि नाजिम मित्रता का विचार रखते हुए ताहिरा के सम्बन्ध से स्वयं को अलग कर लेगा। और वह मन ही मन ताहिरा तथा उसके माता-पिता के विरुद्ध हो जाएगा। हुआ भी यही। और नाजिम को ताहिरा और उसके माता-पिता के वचनों पर सन्देह हो गया। इसके अतिरिक्त उसने अपने हृदय में हठात् निश्चय कर लिया कि वह इस सम्बन्ध में रुकावट डालकर अपने मित्र को क्रुद्ध न करेगा।

इस घटना के दूसरे दिन रविवार था और कालेज मे छुट्टी थी। ताहिरा अपने मा-बाप के साथ कही घूमने-फिरने के लिए गई हुई थी। घर मे केवल शमीम था। उसने मैदान खाली देखकर इशरत को टेलीफोन किया कि आज घर के लोग कही गए हुए है शाम तक वे लौटेंगे। तुम आज यही आ जाओ। यहा हमारे आनन्द मे विघ्न करने वाला कोई नही।'

इशरत ने कहा—

'बहुत अच्छा, मै अभी पहुचती हूं।'

इसके थोडी देर पश्चात् इशरत वहां पहुंच गई। शमीम ने उसे देखते ही कहा—

'आइए, बस आप ही का इन्तजार कर रहा था।'

इशरत ने मुस्कराते हुए कहा—

'यह भला हो सकता है कि आपका हुक्म हो और मै न मानू ? बस जैसे ही टेलीफोन पर आपकी आज्ञा मिली कार में बैठकर यहां पहुच गई।'

इशरत ने अपनी रिस्टवाच की ओर देखते हुए कहा —

'ज्यादा से ज्यादा आध घण्टे के अन्दर-अन्दर मै आ गई हूं।'

शमीम ने परिहास के स्वर में कहा—

'हां साहब ! आप तो मेरी कोई बात रद करती ही नहीं। बात असल में यह है कि घर के लोग आज सैर-सपाटे के लिए कही बाहर गए हुए है। मै अकेला बैठा-बैठा घबरा रहा था। मैने सोचा चलो इशरत को ही बुला लो। जरा गप्प ही रहेगी। हां, तो क्या बना प्रोफेसर वहीद का ?'

इशरत ने अट्टहास करते हुए कहा—

'हजरत ! ऐसा शीशे मे उतारा है उस प्रोफेसर वहीद को कि तुम भी क्या याद करोगे ? वह सचमुच यह समझे हुए है कि यह पैगाम उसे तुम्हारे मां-बाप की तरफ से मिला है। मुझे यह उम्मीद है कि वह इस मामले में जरूर नाजिम से सलाह करेगा और फिर जो होगा बड़ा मजा आएगा।'

दोनो बैठे हुए बाते कर ही रहे थे कि टेलीफोन की घण्टी बजी। टेलीफोन इशरत के समीप ही पडा था। उसने रिसीवर उठाया और बोली—

हैलो—कौन साहब —प्रवीन—कौन प्रवीन—अच्छा प्रोफेसर नाजिम की बहिन—हा, हा, सुन रही हू —प्रोफेसर नाजिम बेहोश पड़े है कल शाम से ?—क्यो—वहीद के जाने के बाद ही बेहोश हो गए ?—लेकिन ताहिरा तो यहा मौजूद नही है और अगर वह होती भी तो आपके यहा क्यो आने लगी थी—मैं—मैं ताहिरा की अम्मा बोल रही हू—आदाब अर्ज।'

यह कहते हुए, इशरत ने रिसीवर रख दिया और खिलखिलाकर हस पडी और शमीम से सम्बोधन कर बोली —

'लो, नाजिम मिया तो लम्बे-लम्बे लेट गए। प्रवीन बोल रही थी। कह रही थी कि कल शाम को प्रोफेसर वहीद नाजिम को मिलने के लिए आए। उनके जाने के बाद वे बेहोश हो गए और अब तक उसी हालत मे पड़े है।'

शमीम ने हसते हुए कहा—

'और यह तुमने खूब कहा कि मैं ताहिरा की अम्मा बोल रही हूं। और अगर ताहिरा होती भी तो वह आपके यहां क्यो आने लगी थी। मैं तुम्हारी सूझ-बूझ की दाद देता हू। सच पूछो तो यह हाजिर जवाबी मेरे बस का रोग नही।'

'इशरत ने परिहास करते हुए कहा—

'हजरत ! यह खुदा की दी हुई चीज है। सीखने से नही आ सकती।

'हा भई ! यह तो तुमने ठीक कहा है लेकिन अगर उन्होने छान बीन की और रिश्ते-विश्ते की बात गलत निकली तो ?'

अव्वल तो उम्मीद ही नही कि वे इस बारे मे छानबीन करे। और अगर उन्होंने की भी तो असल बात मालूम होने तक मियां नाजिम पूरे तौर पर पागल बन चुके होंगे और यही हम चाहते है।'

'हां, यह तो तुम्हारा कहना सही है।'

'लेकिन एक बात अगर तुम कर सको तो फिर हमारी सफलता सौ फी सदी है।'

'वह क्या है ?'

'वह यह कि किसी न किसी तरह से ताहिरा को कुछ दिन तक कालेज जाने से रोको। मेरा मतलब यह है कि यह साजिश कुछ देर तक जाहिर न होने पाए।'

'यह बात तो कुछ टेढी सी है लेकिन खैर मै कोशिश करूगा।'

'अगर सोचोगे तो ताहिरा को रोकने का कोई न कोई बहाना निकल ही आएगा।'

शमीम कुछ देर मौन बैठा सोचता रहा। फिर बोला—

'हा, एक सूरत उसे कालेज जाने से रोकने की है और वह यह कि कुछ दिनों के लिए उसे लाहौर से बाहिर किसी जगह ले जाऊ। मेरे मामू पेशावर मे है। उन्होने हम दोनों बहिन भाइयों को कई बार बुलाया भी है। मेरा ख्याल है ताहिरा से छुट्टी की दरखास्त दिलवाकर उसे पेशावर ले जाऊं। शायद वह मान जाए।'

इशरत ने प्रसन्न होते हुए कहा—

'हा, यह बड़ी अच्छी तरकीब है। मेरा ख्याल है तुम ढग से बात करोगे तो वह मान जाएगी।'

'हां, मै कोशिश तो पूरी करूगा।'

इशरत और शमीम दिन ढले तक वहीं बैठे खुश गप्पियां करते रहे। जब सांझ होने को निकट हुई तो इशरत अपने घर चल दी।

नाजिम गत दिन की सांझ से निश्चेष्ट पड़ा था। कभी कभार आखें खोलता और फिर उस पर तन्द्रा सी छाने लगती। प्रवीन और उस के पिता अत्यन्त घबराए हुए थे। उन्होंने एक के बाद एक कई डाक्टरों को बुलाया और उन्होंने एक मत से यही कहा कि नाजिम को सहसा कोई हार्दिक चोट पहुंची है जिससे वह निश्चेष्ट हो गया है। सम्भव है शाम तक होश में आ जाए। अन्त में पर्याप्त उपचार के पश्चात् शाम को

नाजिम चैतन्य हुआ। प्रवीन ने भर्राए स्वर में कहा—

'भाई जान ! यह आपको क्या हुआ है ?'

नाजिम ने उसकी इस बात का कोई उत्तर न दिया और विवश उस के मुख से ताहिरा का नाम निकल गया।

प्रवीन ने उसे धैर्य देते हुए कहा—

'मैंने टेलीफोन पर ताहिरा को आप की बीमारी की खबर देनी चाही। ताहिरा तो थी नही। उसकी मा ने टेलीफोन सुना। जब मैंने उसे सारा किस्सा सुनाया तो वह बड़ी बेरुखी से बोली और कहने लगी कि 'ताहिरा आप के हां क्यों आने लगी ?' मालूम नही क्या वजहहै ?'

नाजिम ने धीरे से कहा—

'हा प्रवीन ! वह अब यहा नही आएगी।'

प्रवीन उसका तात्पर्य न समझ सकी और बोली—

'अच्छा भाई जान ! छोड़ो इन बातों को। डाक्टरों ने कहा है कि कुछ दिन तक आपको पूरी तरह आराम करना चाहिए। ये बाते तो बाद में भी हो सकती है।

अब नाजिम को विश्वास हो गया कि वास्तव में ताहिरा का सम्बंध वहीद से हो गया है। अन्यथा उसकी मां प्रवीन की बात का उत्तर यों न देती। वह पलग पर लेटा २ इस बात पर विचार कर रहा था। अन्त मे उस ने प्रवीन की ओर देखा और उसे धैर्य दिलाते हुए बोला—

'प्रवीन ! जाओ—अब तुम अपना काम करो। मै अब बिल्कुल ठीक हू।'

प्रवीन यह सोच कर उठ खड़ी हुई कि संभवतः नाजिम आराम करने के विचार से उसे जाने के लिए कह रहा है। वह कमरे से बाहर चली गई। नाजिम पलंग पर लेटा २ एक कुर्सी को ध्यान से देख रहा था। यह वही कुर्सी थी जिस पर एक दिन ताहिरा बैठी उससे बातें कर रही थी और भावी जीवन का कार्य क्रम बना रही थी। उसे ज्वर भी था और दीवार पर सफेदी के छोटे २ धब्बे विचित्र २ मूर्तियों के रूप में

दिखाई पड़ रहे थे। एक धब्बे को उसने ध्यान से देखना आरम्भ किया तो उसे कुछ इस प्रकार अनुभव हुआ कि हाथी का चित्र है। एक और धब्बे मे उसे एक स्त्री एक पुरुष को धक्का देती हुई दिखाई दी। यह देख कर उसने आखे नीची कर ली और फिर उस कुर्सी की ओर देखने लगा। अब उसे कुछ ऐसा अनुभव हुआ कि ताहिरा उस पर बैठी उसे आरक्त नेत्रो से घूर रही है। उसने शीघ्रता से अपने नेत्र बन्द कर लिए। थोडी देर के बाद उसने नेत्र खोल कर कुर्सी की ओर देखा तो वह खाली थी। वह समझ गया कि ज्वर के कारण एकाग्रता बढ गई है और अपने ही विचार उसे विभिन्न रूपो मे दिखाई पड़ रहे है।

दूसरे दिन प्रातः जब वह सो कर उठा तो बिल्कुल ठीक था। ज्वर भी उतर चुका था। उसने अपने हृदय पर हाथ रखा तो उसकी धडकन कम हो कर स्वाभाविक हो चुकी थी। उसन यह अनुभव किया कि अब वह स्वस्थ है। उसने इस विषय पर अब गम्भीरता से विचार करना आरम्भ किया। उसने मन ही मन कहा कि यदि ताहिरा और उसके माता पिता अपने वचन पर स्थिर भी रहते तो सभवत मै एक मित्र को मध्य मे देखकर पीछे हट जाता और अपने सम्बन्ध पर अधिक बल न देता। ताहिरा का सम्बन्ध एक ऐसे मित्र से हो रहा है जिस का मेरे हृदय मे सम्मान है। यदि उसे यह ज्ञात होता कि ताहिरा का सम्बन्ध पहले मुझ से किया गया है तो वह निश्चय ही इस के लिये प्रस्तुत न होता। उसने जो कुछ किया है अज्ञान के कारण। अब मुझे उसके मार्ग का रोडा नही बनना चाहिए। मुझे इस विषय मे हृदय पर अकुश रख कर यह बलिदान करना ही होगा किन्तु मै ताहिरा को एक अन्य पुरुष की गोद मे जाते हुए किस प्रकार देख सकूगा ? चाहे वह व्यक्ति मेरा हार्दिक मित्र ही क्यों न हो ? मेरा हृदय उसे कैसे सहन करेगा ? किन्तु हां, एक मार्ग है और वह यह कि लाहौर को सदा के लिये छोड दू और फिर अब लाहौर मे मेरे लिए आकर्षण ही क्या रह गया है ? मेरा संसार ताहिरा के दम से बसा था। वह बात ही समाप्त हो गई है। अब्बा और प्रवीन मेरे वियोग को

सहन नही कर सकेंगे किन्तु आशा है कुछ समय बीतने पर इन के हृदय भी शान्त हो जाएंगे। आखिर लोग मरने वालों को भी तो भूल जाते है। इनके लिए यह क्लेश अस्थायी होगा। यदि मै केवल इनके क्लेश के विचार से लाहौर मे ही रहूं तो जो दुःख मुझे होगा वह सदा के लिए होगा। इस दुःख से छुटकारा पाने के दो ही मार्ग है। मृत्यु अथवा यहां से चले जाना। आत्म हत्या को मै पसन्द नही करता और मृत्यु मेरे बस का रोग नही है। हां, लाहौर त्याग कर जा सकता हूं। और फिर लाहौर रह कर अब करूंगा भी क्या ? यहा का जीवन मृत्यु से भी अधिक कटु होगा।—नाजिम इसी प्रकार के विचारों मे डूबा था कि नौकर ने चाय ला कर उसके सन्मुख तिपाई पर रख दी और चला गया। इतने में प्रवीन आ गई और उसे बैठे हुए देख करमुस्कराई और बोली—

'भाई जान ! अब तो आप की तबीयत ठीक मालूम होती है।'

नाजिम ने मुस्कराते हुए कहा—

'हां, मेरा भी यही ख्याल है। अब मै बिल्कुल ठीक ठाक हू।'

'मेरा ख्याल है कुछ दिन कालेज न जाइये और पूरी तरह आराम कीजिये।'

'हा, मै कालेज नही जाऊगा।'

प्रवीन ने प्याली में चाय बना कर नाजिम की ओर सरका दी और वह पीने लगा। प्रवीन ने कुछ आश्चर्य से कहा—

'मालूम नही प्रवीन की मा ने इतना रूखा जवाब क्यो दिया ? अगर ताहिरा कुछ मिनटो के लिए भी आ जाती तो क्या बुराई थी ? उस वक्त तो वह घर में नहीं थी लेकिन वापसी पर तो उसे आपकी बीमारी की खबर मिल गई होगी।'

नाजिम ने एक बनावटी सी मुस्कराहट बखेरते हुए कहा—

'हां, ऐसा अक्सर होता है। यह कोई बड़ी बात नही।'

प्रवीन नाजिम के मुख से इस बीमारी का वास्तविक कारण जानना चाहती थी किन्तु उसने एक गोल मोल सी बात कह दी और प्रवीन को

अपने प्रश्न का कोई सन्तोषजनक उत्तर न मिला। वह स्पष्ट शब्दों में उस से इस समय इस विषय में कुछ पूछना न चाहती थी क्यों कि उसे भय था कि कहीं उस के स्वास्थ्य पर इस का बुरा प्रभाव न पडे। उस ने कुछ अधिक पूछना उचित न समझा और उठ कर अपने कमरे मे चली गई।

नाजिम दिन भर अपने कमरे में पलंग पर लेटा रहा। प्रवीन कई बार द्वार पर आई और उसे लेटा देख कर वापस लौट गई। जब शाम का समय हुआ तो नाजिम ने उठ कर वस्त्र पहने और छडी हाथ में लेकर कमरे से बाहर निकला। प्रवीन ने उस से पूछा—

'भाई जान ! कहां जा रहे हैं आप ?'

नाजिम ने कहा—

'प्रवीन ! थोड़ा टहलने के लिए जा रहा हूं। लेटे २ तबीयत घलरा गई है।'

'तो क्या मै आप के साथ चलू ?'

'नही। तुम्हारे साथ जाने की क्या जरूरत है ? मै कोई बच्चा थोड़े ही हूं ?'

'तो कब तक आप वापस आएगे ?'

'आ जाऊंगा।'

नाजिम ने अधूरा सा वाक्य कह कर डग बढाया और घर से चल दिया। प्रवीन उसे जाते हुए तकती रही। उसके मन में अनजाने यह इच्छा सी उत्पन्न हो रही थी कि वह उसे जाने से रोके किन्तु न जाने क्या सोच कर उसे रोकने के लिए आगे न बढ़ी।

नाजिम ने घर से निकलते ही स्टेशन का मार्ग पकड़ा। जब वहां पहुंचा तो उसे पता चला कि दिल्ली जाने वाली गाड़ी के छूटने में केवल पांच मिनट शेष है। उसने शीघ्रता से सैकेंड क्लास का टिकट लिया और गाड़ी में जा कर बैठ गया। उसके बैठते ही गाड़ी चल दी। गाड़ी प्लेट फार्म को छोड़ कर यार्ड में पहुंची और मुगल पुरा की ओर चल दी।

नाजिम की दृष्टि रेलवे स्टेशन पर जमी हुई थी जो क्षण प्रतिक्षण उस से दूर होता जा रहा था। उसने पहले कभी लाहौर से बाहर जाते समय स्टेशन को इस भावुकता से नहीं देखा था जितना वह उसे आज देख रहा था। धीरे २ लाहौर की उच्च अट्टालिकाओं के शिखर दृष्टि से ओझल होते गए और सम्पूर्ण नगर क्षितिज की ओट में चला गया। उसने दूसरी ओर देखा तो विवश सूर्य अस्ताचल के परे गिर रहा था और उसकी अन्तिम किरणें आकाश को रक्तिमा से रंग रही थी।

## १८

**

नाजिम जब पर्याप्त रात्रि बीत जाने पर भी घर न लौटा तो प्रवीन और उस के पिता को चिन्ता हुई। मिया मैराजउद्दीन तो दस ग्यारह बजे तक प्रतीक्षा करने के पश्चात् अपने कमरे में जाकर सो गए किन्तु प्रवीन रात भर बैठी रही। उसने सोने का यत्न किया किन्तु उस की आखो मे नीद कहां ? उस के मन में विभिन्न विचार उठ रहे थे। कभी वह सोचती कि नाजिम से उस का कोई मित्र मिल गया होगा और उसे लौटने मे देर हो गई। कभी वह सोचती कि सभव है ताहिरा के व्यवहार से निराश हो कर उस ने कोई ऐसा कार्य कर लिया हो जो साधारणतया ऐसी दशा का परिणाम होता है। यदि नाजिम ने वास्तव मे कोई ऐसा कार्य किया है तो उस की स्थिति क्या होगी ? इस विचार से ही प्रवीन काप उठती थी। उस के मन में ऐसे ही बुरे-बुरे विचार उठ रहे थे। वह अत्यन्त परेशान हो रही थी। उसने अपनी सामर्थ्य के अनुसार यह सोचने का पूर्ण प्रयत्न किया कि नाजिम के वापस न आने का क्या कारण हो सकता है और परिस्थिति उस कारण का कहां तक समर्थन करती है। प्रवीन का ध्यान एक ही स्थान पर केन्द्रित था और पूरी तरह एकाग्र होने के कारण उस की घबराहट क्षण प्रति क्षण बढ़ रही थी। उस का हृदय जोर-जोर से धड़क रहा था और धड़कन की ध्वनि स्पष्ट उस के कानों में आ रही थी। उसने अपने सिर को जोर से

झटका दिया जसे अपने विचार को किसी अन्य ओर लगाने का यत्न कर रही हो। वह शीघ्रता से उठी और कमरे मे इधर उधर टहलने लगी। अब उसने अपने मन को धैर्य दिलाने के लिये यह सोचना आरम्भ किया कि नाज़िम के वापस न आने के और भी कारण हो सकते हैं। सभव है वह सिनेमा देखने चला गया हो और अभी सिनेमा का दूसरा शो समाप्त होने में कम से कम डेढ़ घण्टा शेष है। फिर उस के मन में सहसा विचार आया कि वह तो अकेले सिनेमा जाने का आदी ही नहीं। वह जब भी इस उद्देश्य से गया या तो उस के साथ उस का मित्र प्रोफेसर वहीद होता था या वह स्वयं उस के साथ जाती थी। सिनेमा का ध्यान आते ही प्रवीन के मन में आशा की एक झलक उत्पन्न हो गई थी किन्तु जब उसे यह स्मरण आया कि नाजिम कभी अकेला सिनेमा देखने नही जाता तो उस की रही सही यह आशा भी जाती रही। उस का हृदय फिर जोर-जोर से धड़कने लगा और उसके माथे पर पसीने के बिन्दु झलकने लगे। कष्ट और चिन्ता के मारे उसे अपना सिर चकराता हुआ प्रतीत हुआ। और उस ने कुछ यो अनुभव किया जैसे कमरे का वायु-मण्डल घूम रहा है। उसने शीघ्रता से कमरे की खिडकी खोल दी और उस के सामने जा खड़ी हुई। बाहर की ताजा हवा ने उस की परेशानी और घबराहट को अस्थायी रूप से कम कर दिया किन्तु क्यों कि परेशानी का कारण बराबर बना था अतः वायु की स्वस्थता उस की स्थायी रोक थाम न कर सकी। प्रवीन रात्रि के अधकार मे देख रही थी। उस के नेत्र रात्रि के अंधकार में किसी की खोज कर रहे थे। कोठी का मुख्य द्वार उसे दिखाई पड़ रहा था और उस के सामने से गुजरने वाली सड़क भी किन्तु अब उस सड़क पर सन्नाटा था। दिन के समय इस सड़क पर तांगों और मोटरों की एक भीड सी रहती थी। आने जाने वालों का तांता सा लगा रहता था किन्तु उस समय जब कि आधी रात बीत रही थी यह सड़क शान्त थी।

प्रवीन कितनी ही देर तक खिड़की के सामने खड़ी बाहर की ओर

देखती रही। सडक के साथ-साथ धीमे-धीमे जलने वाली बिजली की रोशनी में उस ने दृष्टि को पसार कर दूर तक देखा। उसे कोई व्यक्ति उस पर चलता दिखाई न पड़ा। उस ने जोर से खिडकी का द्वार बन्द किया और फिर अपने स्थान पर आ कर बैठ गई। उस ने घडी की ओर देखा तो एक बजने वाला था। अब वह नाजिम की वापसी के बारे में बिल्कुल निराश हो गई। नगर के सिनेमा अब समाप्त हो चुके थे और दर्शक अपने-अपने घरों में वापस पहुच चुके थे। अब नाजिम की वापसी की प्रतीक्षा करना व्यर्थ था। प्रवीन अपने पलंग पर लेट गई। उस ने सोने का बहुत प्रयत्न किया किन्तु उस के समस्त प्रयत्न व्यर्थ सिद्ध हुए। उसने हठात् नेत्र बन्द कर लिये और उन पर तन्द्रा का आह्वाहन करना चाहा किन्तु जब उस ने देखा कि उस का मस्तिष्क उसके नेत्रों का साथ देने के लिए तैयार नही तो उसने पुनः नेत्र खोल लिये। उसके बिल्कुल सामने दीवार पर नाजिम का एक मानवाकार चित्र लटक रहा था। अब उसने उस चित्र को देखना आरम्भ किया। यह चित्र नाजिम ने अपने गत जन्म दिवस पर खिचवाया था। उस चित्र को देख कर प्रवीन का ध्यान पुनः उसी बिन्दु पर केन्द्रित हो गया और उस के मन मे फिर बुरे-बुरे विचार उठने लगे।

प्रवीन ने सारी रात आखों में काट दी। प्रातः होते ही मियां मैराज-उद्दीन फिर कमरे मे आए और बोले—

'बेटी! नाजिम रात घर नहीं आया? यह उसकी जिन्दगी में पहला मौका है कि वह यों रात भर घर से बाहर रहा है। मैं बहुत ज्यादा परेशान हो रहा हूं। तुम बताओ क्या किया जाए।'

प्रवीन ने कहा—'अब्बा जान! मैं आप यही सोच रही हूं। मेरा ख्याल है कि प्रोफेसर वहीद से पूछना चाहिये। जिस दिन वे भाई जान से मिल कर गए थे उन के जाते ही उनकी तबीयत खराब हो गई थी। हो सकता है प्रोफेसर वहीद कुछ बता सके कि वे कहां हैं और रात घर क्यों नहीं आए?'

मियां मैराजउद्दीन ने कहा—

'हां, मेरी भी यही राय है। प्रोफेसर वहीद को जरूर मालूम होगा। अच्छा तो फिर यों करो कि गाड़ी ले कर खुद वहीद के मकान पर पहुंचो और उस से सब कुछ पूछ कर आओ।'

'बहुत अच्छा अब्बा जान ! मैं अभी उनके पास जाती हूं।'

प्रवीन यह कहती हुई उठ खड़ी हुई और वस्त्र बदलने चली गई। शोफर को आवाज दे कर उसने कार तैयार करने को कहा। जब वह वस्त्र बदल चुकी तो कार में बैठकर प्रोफेसर वहीद के मकान की ओर चल दी। वहां पहुंचकर उसने भीतर सूचना भिजवाई तो प्रोफेसर वहीद स्वय बाहर आया और बोला—

'प्रवीन ! तुम सवेरे-सवेरे यहां कैसे ? खैर तो है ?'

प्रवीन ने निराश स्वर में कहा—

'भाईजान ! खैर होती तो यहा सवेरे-सवेरे क्यों आती ?'

वहीद घबरा सा गया और बोला—

'क्यों ? क्या बात है ? और हा, अन्दर आजाओ और फिर मुझे बताओ कि तुम कैसे आई हो ?'

प्रवीन वहीद के पीछे-पीछे ड्राइंग रूम में जा कर एक कुर्सी पर बैठ गई। वहीद ने उस के सामने दूसरी कुर्सी पर बैठते हुए कहा—

'अब बताओ क्या बात है ?'

प्रवीन ने कहा—

'भाई जान कल शाम से गायब हैं। सैर करने गए थे फिर वापस नहीं आए।'

'क्यों, घर मे कोई झगड़ा हो गया था ?'

'जी नही।'

'फिर क्या बात हुई ?'

'जिस दिन आप उन से मिलने के लिए गए थे उस दिन उन की तबीयत कुछ खराब हो गई। दूसरे दिन उनकी तबीयत संभली और वे

कपड़े पहन कर टहलने के लिये घर से निकल गए। फिर उनका कुछ पता नही।'

'हैरानी है। लेकिन यह तो मालूम होना चाहिये कि अगर वे घर से चले गए हैं तो उस की वजह क्या है? मेरा मतलब यह है कि एक बार पहले भी तो वे घर से चले गए थे और एक दूसरे मकान मे जा रहे थे। उस वक्त तो उन के जाने की वजह समझ मे आती थी। अब क्या वजह हो सकती है?'

'जहां तक मुझे मालूम है कोई ऐसी वजह पैदा नही हुई। हां, आप के जाने के बाद ही उन की तबीयत का खराब हो जाना यह जितलाता है कि आपसे कोई उनकी बात हुई है जिस से वे परेशान हो गए हैं।'

'लेकिन मैंने तो उन से कोई ऐसी बात नही की। मैं तो उन्हे एक खुश खबरी सुनाने गया था और उन्हे खुश होना चाहिये था।— और मेरा ख्याल है वे खुश हुए भी।'

'खुश ख़बरी क्या थी वह?'

'खुश खबरी यह थी कि एक जगह से मुझे शादी का खत आयाथा। और लडकी की तस्वीर भी आई थी। मैंने वह तस्वीर दिखाई। उन्हो ने मुझे राय दी कि जरूर उस लड़की से शादी कर लू।'

'क्या वह तस्वीर अब भी आपके पास है?'

'हा, है। वह सामने अलमारी मे पड़ी है। क्यों, देखोगी?'

'हा, दिखा दीजिये।'

वहीद ने उठकर सामने की अलमारी से चित्र निकाला और प्रवीन के हाथ मे दे दिया। चित्र देखते ही वह ठिठकी सी रह गई और बोली—

'तो क्या आपकी शादी इस लड़की से हो रही है?'

वहीद ने कहा—

'इस मे हैरान होने की क्या बात है? क्या इस लड़की में कुछ नुक्स है?'

'कोई नुक्स नही। अच्छी भली लड़की है और एक शरीफ घराने से सम्बन्ध रखती है।'

'फिर तुम हैरान क्यों हुई ?'

'इस लिये कि इस लड़की का रिश्ता भाईजान से हो चुका है।'

वहीद चकित रह गया और बोला—

'क्या यह सच है ?'

'बिल्कुल सच। इस लड़की का नाम ताहिरा है। हमारे ही कालेज में पढती है और सम्बन्ध तय हुए एक महीने से ज्यादा हो गया है।'

'लेकिन नाजिम ने तो मुझ से यह चर्चा नही की।'

'वे अगर चर्चा करते तो शायद आप उसे उन का स्वार्थ समझते। उन्हों ने शायद इसी लिये आप से चर्चा नही की। वे आप के सच्चे दोस्त हैं और आप को किसी हालत मे भी नाराज करना नही चाहते।'

वहीद ने कहा—

'यह तो सही है कि नाजिम मेरे दोस्त हैं लेकिन सच्ची बात को कहने से दोस्ती में क्यों फर्क आने लगा ? मुझे यह मालूम हो जाता कि यह लड़की नाजिम को मागी जा चुकी है तो मै कभी इस रिश्ते की हां न करता। हैरानी तो इस बात की है कि इस लड़की के मां बाप ने एक जगह रिश्ता करने के बाद मेरे हां खत क्यों भिजवाया ?'

'हा, यह हैरानी मुझे भी है।'

यह बात अब भी मेरी समझ मे नही आ सकी कि अगर इस लडकी की वाकई नाजिम से सगाई हो चुकी है और उन्हो ने मुझसे इसकी चर्चा सिर्फ इस लिये नही की कि कही हमारी दोस्ती मे फर्क न आ जाए तो घर से यों चले जाने का मतलब क्या है ? क्या उन्हें इस से प्यार है ?'

'हा, यही बात है। अब से नहीं इशरत के साथ शादी करने से भी पहले का है। दोनों एक दूसरे को चाहते हैं और बहुत ज्यादा चाहते हैं। यह चोट उन के लिए सहन करने लायक नही है कि उस लड़की का रिश्ता किसी और जगह हो रहा है।'

'अफसोस है कि मुझे इस बात का पता नहीं था। मैं अब उस लड़की से किसी हालत मे भी शादी करने को तैयार नही। आज ही उस के मा बाप को मै कहला भेजूगा कि मै इस रिश्ते से इनकारी हूं। अब मेरी खुशी इस में है कि नाजिम ही उस से शादी करें। बल्कि मैं कोशिश करूगा कि यह शादी हो जाए। मुझे इस बात का दुःख है कि नाजिम ने मुझ से इस बात की चर्चा नही की। जब वे मुझे अपना प्यारा दोस्त समझते है तो उन्हें यह बात मुझ से छुपानी नही चाहिये थी। लेकिन प्रवीन! असल में कुसूरवार मै हूं। उन्हों ने अपने दोस्त को निराश करना मुनासिब न समझा। और अपने दिल पर जबर कर के एक ऐसी कुर्बानी की जो इनसानी तारीख में अपनी तरह की एक है।'

प्रवीन ने चिन्तित स्वर में कहा—

'जो कुछ हो चुका है उसका तो अब कोई इलाज नहीं। अब सवाल यह है कि मेरे भाई है कहा? और उन्हें किस तरह वापिस बुलाया जाए। मेरी और अब्बा जान की हालत बहुत ज्यादा बुरी हो रही है और अगर वे कुछ दिन तक वापिस न आए तो मै जिन्दा न रह सकूगी।'

यह कहकर प्रवीन रोने लगी। वहीद का भी दिल भर आया। और उसकी आंखो से आंसू गिरने लगे। उसने प्रवीन को तसल्ली देते हुए कहा—

'प्रवीन! तुम फिक्र न करो। मै तुम्हारे भाई को ढूढकर लाऊगा। वे मेरे दोस्त है। मेरी जिन्दगी भी उनके बिना बेकार है। मेरे लिए उन्होंने जो बलिदान किया है वह कोई मामूली नहीं। अब मेरा फर्ज है कि उनको खोजकर वापस घर लाऊं। तुम तसल्ली रखो। तुम्हारा भाई अव्वल तो आज शाम तक घर वापस आ जाएगा और अगर दो-चार दिन लग भी जाएं तो तुम्हें घबराना नही चाहिए।'

प्रवीन रोती हुई उठ खड़ी हुई और बोली—

'बहुत अच्छा, अब मै जाती हूं। आप उन्हें खोजने की कोशिश कीजिए।'

प्रवीन वहीद के मकान से निकलकर कार में बैठ गई और घर की तरफ चल दी। अब उसे पता चल गया कि नाजिम के सहसा घर से चले जाने का क्या कारण है। वह मन ही मन चकित थी कि ताहिरा के पिता ने अपनी इच्छा से सम्बन्ध किया और फिर अपनी सम्मति बदल ली। आखिर उसका कारण क्या है ? और यदि किसी कारण से उन्होने अपना निर्णय बदल दिया था तो ताहिरा उन पर दबाव डाल सकती थी। आखिर वह एक स्वतत्र विचार की लडकी है और उसके माता-पिता भी इसी विचार के है। यह कैसे हो सकता है कि वे ताहिरा की इच्छा के विरुद्ध पहला निर्णय बदल दे। इसका अर्थ यह हुआ कि जो कुछ हुआ है ताहिरा की सम्मति से हुआ है और यदि ताहिरा की सम्मति से हुआ है तो यों कहना चाहिए कि नाजिम से उसे केवल दिखलावे का प्यार था।

प्रवीन ने इस विषय पर बहुत विचार किया किन्तु उसकी समझ में कोई बात न आई। उसकी कार घर के निकट पहुंच चुकी थी। सहसा उसे कोई विचार आया। और उसने शोफर से कहा—

'कालेज को चलो।'

शोफर ने कार घुमाकर उसका मुह कालेज की ओर कर दिया। कालेज का खुलने का समय हो चुका था। जब वह कालेज पहुंची तो ताहिरा क्लासरूम के सामने बैठी थी। उसे देखते ही वह उठ खड़ी हुई और बोली—'नाजिम कहा है ?'

प्रवीन ने अश्रुपूर्ण नेत्रों से उसकी ओर देखते हुए कहा—

"नाजिम कही भी हों तुम्हारी बला से। तुम्हें उनकी बीमारी की खबर दी गई और तुमसे इतना भी न हुआ कि खड़े-खड़े आ सको।"

ताहिरा घबरा गई और बोली—

'मुझे यह बिल्कुल मालूम नही कि वे बीमार है ? खबर किसको दी और कौन नही आया ?'

प्रवीन ने क्रोध से कहा—'जब तुमने अपना निश्चय ही बदल लिया तो तुम्हारी तरफ से कोई जिए कोई मरे।'

ताहिरा और अधिक परेशान हो गई और बोली—

'प्रवीन ! खुदा के लिए मुझसे इस तरह की पहेलिया न बुझवाओ और साफ-साफ कहो तुम्हारा मतलब क्या है ?'

'मतलब यही है कि तुम्हारा रिश्ता अब प्रोफेसर वहीद से हो चुका है।'

'मेरा रिश्ता प्रोफेसर वहीद से ?'

'हा, हां, मै गलत नही कह रही हूं । और मेरा ख्याल है कि यह सब काम तुम्हारी मर्जी से हुआ है । तुम्हारे मा-बाप तुम्हारी मर्जी के खिलाफ कुछ नही कर सकते ।'

'यह तुम क्या कह रही हो ? मै अब तक नही समझी हू ।'

प्रवीन ने अति गम्भीरता से कहा—

'तुम्हारे मां-बाप की तरफ से प्रोफेसर वहीद के यहा तुम्हारे रिश्ते का खत पहुंचा और तुम्हारा दस्तखती फोटो भी । उन्होने रिश्ता मजूर कर लिया । रिश्ता तै होना इसी को कहते है या इसका मतलब कुछ और होता है ?'

ताहिरा के शरीर मे आग लग गई और बोली—

'यह बिल्कुल गलत है । न मेरे मा-बाप ने इस तरह का कोई खत प्रोफेसर वहीद के यहा भिजवाया और न मुझसे इस बारे मे कोई राय ली गई । मै और मेरे मा-बाप अभी तक उस फैसले के पाबन्द है और पाबन्द रहेंगे । मेरी अगर शादी होगी तो नाजिम से होगी वर्ना नही होगी। मेरे बड़े भाई इस रिश्ते के खिलाफ जरूर है मगर इस बारे में उनकी राय की कोई कीमत नही । मेरा ख्याल है यह सब कुछ उन्होने ही किया है । मेरी एक दस्तखती तस्वीर उन्हीं के पास थी । अगर नाजिम को इस रिश्ते के बारे में कोई शक हो गया है तो मै तुम्हारे साथ चलकर उनकी तसल्ली करने को तैयार हूं । चलो, इसी वक्त चलो मेरे साथ ।'

ताहिरा यह कहती हुई उठ खड़ी हुई । प्रवीन ने निराश स्वर में कहा—

'यह बात सही हो या गलत अब तुम्हारा मेरे साथ जाना बेकार है।'

ताहिरा ने व्याकुल होते हुए कहा—

'तो इसका मतलब यह है कि यह झूठी खबर सुनकर नाजिम ने अपना निश्चय बदल दिया ?'

'यह बात नहीं। उन्होने अपना निश्चय नहीं बदला।'

'फिर तुम मेरे साथ चलो।'

'नाजिम अब घर मे नही है।'

'कहा है ?'

'यह मै नही जानती। यह खबर सुनते ही वे बेहोश हो गए। दूसरे दिन शाम के करीब उन्हें होश आया। फिर उनकी तबीयत कुछ सभली और वे शाम को टहलने का बहाना करके घर से निकल गए। और अब तक नही लौटे। खुदा जाने कहां है।'

ताहिरा पर जैसे बिजली गिर पड़ी। वह हृदय थाम कर वही बैठ गई। प्रवीन ने उसे उठाते हुए कहा—

'चलो, मै तुम्हें घर छोड़ आऊं।'

ताहिरा ने एक विचित्र दृष्टि से प्रवीन की ओर देखा। उसके नेत्रों से आसुओं के फव्वारे उबल रहे थे। वह लड़खड़ाती हुई प्रवीन के साथ चल दी और बोली—

'हां, मुझे अब तुम घर पहुचा दो। अब शायद मै फिर कालेज न आऊं।'

## १६

**

नाजिम दिल्ली में आकर एक होटल में ठहरा । यह होटल रेलवे स्टेशन के निकट ही दिल्ली के एक घने बाजार मे स्थित था । नाजिम का कमरा होटल के ऊपरी कक्ष पर था । उसकी खिड़किया बाजार की ओर खुलती थी और उनमे से बाजार मे चलते हुए टागे और मोटरे स्पष्ट दिखाई देती थी । नाजिम होटल मे तो आकर ठहर गया किन्तु न उसके पास कोई बिस्तर था और न कोई पहनने का कपडा । केवल वे ही वस्त्र थे जिन्हे वह पहने हुए था । उसने होटल के नौकर को बुलाकर कहा—

'क्यो भई ! बिस्तर वगैरह का भी प्रबन्ध हो सकता है ?'

'हा, सरकार ? हो सकता है । अभी लाता हू ।'

नौकर यह कह कर चला गया और कुछ ही देर मे बिस्तर लेकर आ गया । बिस्तर पलग पर बिछाकर वह फिर निकल गया ।

नाजिम उस पर बैठकर सोचने लगा कि उसका भावी कार्यक्रम क्या होना चाहिए ? उसके नेत्र सामने की दीवार पर किसी अस्पष्ट विन्दु को तक रहे थे और ध्यान किसी अन्य ओर था । उसके पास अब थोड़े से पैसों के अतिरिक्त और कोई वस्तु न थी । यदि वह वस्त्र और बिस्तर आदि खरीदता तो सभवतः वह पूजी उसके लिए भी पर्याप्त न होती । नाजिम ने पहले मन मे यह विचार किया कि मैंने घर से निकलकर भूल की है । और यदि निकलना ही था तो फिर आवश्यक वस्तुए लेकर चलना चाहिए

था। इसके साथ ही उसे ताहिरा और वहीद के सम्बन्ध का ध्यान आया तो घर से निकलने का कारण सन्तोषजनक प्रतीत हुआ। उसने मन ही मन सोचा कि वहीद मेरा मित्र अवश्य है और मैंने इस सम्बन्ध के बारे में रुकावट उत्पन्न करना उचित नहीं समझा। किन्तु इस पर भी उसके विवाह से मुझे चोट पहुंचती और ताहिरा तथा वहीद दोनों को पति-पत्नी के रूप में देखकर मुझे अत्यन्त खेद होता। ऐसी स्थिति में मेरे लिए यही उचित था कि मैं लाहौर छोड़ दूं और किसी अन्य स्थान पर जा रहूं। इसलिए मैंने जो कुछ किया है ठीक किया है।'

नाजिम ने आरम्भ से लेकर अब तक की परिस्थितियों पर दृष्टि डाली। उसके मस्तिष्क में उस दिन की धुंधली-सी रूपरेखा खिंच गई जब वह अथैलो पढ़ा रहा था और ताहिरा के मुंह से हलकी-सी चीख निकल गई थी। फिर नाजिम के विचार में वे मधुर क्षण नृत्य करने लगे जब उसके हृदय में प्यार की कसक उत्पन्न हुई थी किन्तु उसे इस प्यार के प्रकटीकरण का अवसर न मिल सका था। फिर उसने ध्यान ही ध्यान में देखा कि ताहिरा उसकी गोद में है और वे दोनों एक-दूसरे से प्यार की बातें कर रहे हैं। इसके पश्चात् उसके सम्मुख वे दृश्य आए जिनमें उसने अपने आपको एक अलग मकान में रहते देखा। यही दो एक बार ताहिरा उससे मिलने के लिए आई थी। यहां से उसका ध्यान उसे लेकर ताहिरा के मकान पर पहुंचा जहां शमीम ने उसके सम्बन्ध में रुकावट डालने का यत्न किया किन्तु नाजिम का भाषण काम कर गया और उस का सम्बन्ध निश्चित हो गया। अन्त में उसने देखा कि वहीद ताहिरा का चित्र लेकर उसके समीप पहुंचा है और कह रहा है कि उस लड़की का सम्बन्ध मुझसे किया जा रहा है।

यह विचार आते ही वह तड़प-सा गया। उसका कल्पना-जगत् समाप्त हो गया और उसने अपने आपको होटल में बैठे हुए पाया। उसके सामने पलंग पर किराए का बिस्तर बिछा हुआ था और खिड़कियों से मोटरों और तांगों के चलने की आवाजें आ रही थीं।

वह उठकर कमरे में इधर-उधर टहलने लगा । उसका मन कुछ घबरा-सा रहा था। वह बाजार की ओर एक खिड़की के सामने आकर खडा हो गया । बाजार मे आने जाने वालों की अपार भीड़ थी। जहां तक दृष्टि जा सकती थी मनुष्य ही मनुष्य दिखाई पड़ते थे । एक ओर बहुत दूर बाजार के नुक्कड़ पर उसे ट्राम चलती हुई दिखाई दी। ट्राम मनुष्यों से खचाखच भरी हुई थी और बहुत से व्यक्ति बाहर लटके हुए थे । आने जाने वालो का अनन्त क्रम देखकर नाजिम को सहसा ध्यान आया कि यह ससार भी एक ऐसी ही सडक है। सहस्रों वर्षों से लोग इस पर से गुजर रहे है किन्तु यह क्रम अभी तक समाप्त नही हुआ। और आने जाने वालों का अब तक ताता बधा हुआ है। हां, एक प्रकार से यह सड़क उस बाजार से भिन्न है और वह यों कि उस बाजार से गुजरने वाले तो न जाने इसमे पहले भी कितनी बार गुजर चुके है किन्तु इस संसार की सड़क पर केवल एक ही बार गुजरने का अवसर मिलता है। दूसरी बार नही। किसी पथिक मे यह शक्ति नहीं कि तै किए हुए मार्ग को दोबारा देखे अथवा समाप्त किए मार्ग को पुनः आरम्भ कर दे। इस के साथ ही नाजिम के मन मे यह विचार चुटकियां लेने लगा कि मै भी संभवतः इस मार्ग की अन्तिम मजिल पर पहुचने वाला हूं। यह विचार आते ही उसके हृदय की धड़कन तीव्र हो गई और उसके नेत्रों से अश्रु गिरने लगे। उसने खिड़की का दूसरा पट भी खोल दिया ताकि ताजा वायु भीतर आ सके। उसने बाजार को पुनः एक बार एक सिरे से दूसरे सिरे तक देखा और वापस अपनी कुर्सी पर आकर बैठ गया। इतने मे होटल का बैरा आया और बोला—'सरकार ! चाय लाऊं ?'

नाजिम ने कहा—

'हां, ले आओ।'

बैरे के जाने के पश्चात् उसने अपना बटवा निकाल कर देखा। और मन ही मन सोचने लगा 'अभी दो-चार दिन का खर्च जेब में है और शायद जीवन भी इतना ही है।'

अभी वह इस प्रकार की बातें सोच ही रहा था कि बैरा चाय लेकर आ गया। उसने कमरे के एक ओर से तिपाई लाकर उसके सामने रख दी और उस पर चाय रखकर चला गया। नाजिम ने चाय प्याली में उण्डेली और पीने लगा किन्तु उसके विचारों का क्रम न टटा।

उसका मस्तिष्क अब भी पूरी तरह व्यस्त था। अब उसका ध्यान बीती हुई बातो की ओर नही था। अपितु उन बातो की ओर था जो आगे चलकर उसके सामने आने वाली थी। उसके मानसिक नेत्रो के सामने अब वे सम्भाव्य दृश्य थे जिनसे उसे दो चार होना था।

जब वह चाय पी चुका तो बैरा बर्तन उठाने के लिए आया और बोला—

'हुजूर! आप रात का खाना यही खाएंगे?'

नाजिम ने मुस्कराते हुए कहा—

'अगर जिन्दा रहा तो।'

बैरा आश्चर्य के साथ बोला--

'हुजूर। मैं आपकी इस बात को नही समझा।'

नाजिम ने गम्भीरता से कहा--

'मिया! जिन्दगी का क्या भरोसा? मालूम नही कब समाप्त हो जाए? इनसान आने वाली जिन्दगी के बारे में बड़े-बड़े हवाई किले बनाता है मगर उन्हे गिरते एक मिनट भी नही लगती। मेरा मतलब यह है कि अभी रात के खाने में पूरे चार घंटे हैं। उस वक्त तुम्हे खाने का आर्डर दे दूगा। वक्त से पहले कहने की क्या जरूरत है?'

यह सुन कर बैरा चुपके से कमरे से निकल गया। वह यह सोच रहा था कि इस व्यक्ति के मस्तिष्क का कोई पेच ढीला प्रतीत होता है।

बैरे के जाने के पश्चात् नाजिम होटल से निकला और चादनी चौक में जा पहुँचा। वहां से उसने किले की ओर मुह फेरा। बाजार में बहुत अधिक भीड़ थी। वह उस भीड से बचता-बचाता डग आगे बढाता चला जा रहा था। उसके सामने घण्टा घर दिखाई पड़ रहा था। उसने देखा

तो उसको घड़ो साय काल के छः बजा रही थी। वह उस घण्टा घर के एक ओर हो कर आगे वढ गया। जब वह फव्वारे के चौक में पहुंचा तो वहा एक सिनेमा हाउस के सामने दर्शको की भीड लग रही थी और लोग पक्ति बद्ध टिकट घर के सामने खड़े अपनी बारी की प्रतीक्षा कर रहे थे। उसने लोगो को देख कर मन मे कहा—

'इस ससार मे बहुत से व्यक्ति ऐसे है जो सैर सपाटे को अपने जीवन का एक आवश्यक अग समझते है किन्तु यह सैर सपाटा भी उन्ही लोगो के लिये है जिन्हे ससार मे कोई क्लेश नही। दुःखी व्यक्तियो के दुःख को ये सिनेमा भी दूर नही कर सकते।'

नाजिम दर्शको की भीड़ पर एक विहगम दृष्टि डालता हुआ आगे बढ़ गया और किले के सामने एक खुले मैदान मे जा पहुचा। उस मैदान मे एक ओर कुछ लडके फुटबाल खेल रहे थे और दूसरी ओर कुछ बेफिक्रे कनकव्वे उडा रहा थे। कही-कही दो-दो चार चार व्यक्ति बैठे आपस में वाते करते हुए दिखाई दे रहे थे और उनके अट्टहास वातावरण मे गूंजते हुए सुने जाते थे। नाजिम ने किले के द्वार की ओर देखा तो वहा दो गोरे हाथों मे बन्दूके लिये पहरे पर खड़े थे।

नाजिम कितनी ही देर तक इस मैदान मे फिरता रहा। उसने पश्चिम की ओर देखा तो सूर्य रूपी अग्नि का गोला जामा मस्जिद के पीछे अस्त होता दिखाई दिया। लडकों ने फुटवाल का खेल बन्द कर दिया। पतंग उडाने वाले भी डोरो की चर्खिया और पतग बगल मे दबाकर वहा से चल दिये। धीरे-धीरे रात्रि का अधकार फैलने लगा और कोई आध घण्टे मे बिल्कुल अधेरा हो गया। सब लोग एक-एक करके उस मैदान से चल दिये और पूर्ण मौन और शान्ति का साम्राज्य छा गया। समीप की सडक से कोई कार अथवा तागा निकलता तो मौन कुछ समय के लिये टूटता और फिर स्तब्धता छा जाती।

नाजिम बडी रात गए तक उस मैदान मे टहलता रहा। एक ओर उसे किले की ऊची दीवार रात्रि के अधकार मे उभरी दिखाई पड़ती थी

और दूसरी ओर सडक पर धीमी-धीमी जलने वाली बिजलियों की एक लम्बी पंक्ति। वह कभी किले की ओर देखता और कभी उस सड़क की ओर। जब रात्रि के कोई ग्यारह बजे तो नाजिम होटल कीओर लौटा। चाद की सभवतः इक्कीसवी या बाईसवी तारीख थी। चारों ओर घुप अधेरा छाया हुआ था। सडकों पर जलने वाले बिजली के बल्ब उस अधकार में टिमटिमाते हुए जुगनू प्रतीत होते थे। नाजिम ने जब अपने होटल को लौटते हुए किले की ओर देखा तो उस का शिखर कुछ प्रकाशमान् दिखाई दे रहा था। वह समझ गया कि च द्रमा के उदय के चिह्न है। वह धीरे-धीरे कदम उठाता हुआ चला और चादनी चौक में पहुच गया। यह बाजार किले के सामने से आरम्भ हो कर फतह पुरी चौक तक चला गया है। जब वह इस बाजार के प्रथम चौक से गुजर कर आगे बढा तो वह एक सिनेमा के सामने जा पहुचा। अब उस सिनेमा के आस पास पूर्ण शान्त वातावरण था और फिल्म के दूसरे शो के समाप्त होने मे अभी कुछ देर थी। कुछ तागे सिनेमा हाउस के सामने खड़े शो समाप्त होने की प्रतीक्षा कर रहे थे। एक कोचवान ने उसे देखते हुए कहा—'साहब ! तागा चाहिये ?'

नाजिम ने एक क्षण के बाद धीरे से कहा—'नहीं।'

यह कह कर वह सिनेमा के समीप से आगे बढ़ गया। उस ने कुछ पथिको को देखा। वे शीघ्रता से डग उठाए चले जा रहे थे किन्तु नाजिम की गति उन को देखते हुए बहुत सुस्त थी। उस ने मन ही मन सोचा कि इन की तीव्र गति और मेरी धीमी चाल मे जो अन्तर है वह कोई आश्चर्य जनक बात नही। वे शीघ्र से शीघ्र घर पहुच जाने की चिन्ता मे है किन्तु मेरा इतने बड़े नगर मे कोई घर नही है। इसलिये तेज चलने का प्रश्न ही नही उठता। मुझे होटल पहुना है और वहा मेरे स्वागत के लिये कोई उत्सुक नही। मेरे शीघ्र पहुचने से किसी को सन्तोष और देर से पहुचने पर किसी को व्याकुलता नही होगी। देर से पहुचू या शीघ्र दोनों बराबर है।

यह विचार मन में आते ही उस की गति और मद्धम हो गई। उस ने बाजार के दोनों ओर की दूकानों पर दृष्टि दौड़ाई तो उस ने देखा कि अधिकतर दूकानें बन्द हो चुकी हैं। कहीं-कहीं पनवाड़ियों और मिठाई वालों की दूकानें खुली हैं। वह चलता-चलता पुलिस के दो सिपाहियो के समीप से गुजरा। उन्हों ने उसे सन्दिग्ध दृष्टि से देखा किन्तु मौन रहे। नाजिम उनकी सन्दिग्ध दृष्टि का अर्थ समझ गया और मन ही मन कहने लगा कि इतनी रात गए किसी को इस प्रकार देखना उन का अधिकार है। बदमाश अथवा शरीफ शब्द किसी के मस्तक पर नही लिखे हुए। ये लोग किसी की चाल ढाल देख कर ही जानने का यत्न करते हैं कि वह किस प्रकार का व्यक्ति है।

वह इस प्रकार के विचारों में डूबा आगे बढा। इतने मे उसे पीछे से मोटर के हार्न की आवाज सुनाई दी। वह शीघ्रता से एक ओर हटा। उस का ध्यान पीछे से आने वाली कार की ओर था। उस का सिर बिजली के एक खम्भे से जोर से टकराया। उस के नेत्रो के सामने कुछ चकाचौध सी उत्पन्न हुई जैसे बिजली की चमक से होती है। फिर उस ने अनुभव किया कि बाजार में जलने वाले बिजली के बल्बों का प्रकाश कुछ धुधला सा हो गया है। पीछे से आने वाली कार का तीव्र प्रकाश भी उसे धुधला-धुधला सा दिखाई पड़ा। धीरे-धीरे उस के सामने बिल्कुल अधकार छा गया। उसने अपना दाया हाथ अपनी आखो के सामने फिराया किन्तु वह भी उसे दिखाई न दिया। अब उसे विश्वास हो गया कि उस की ज्योति जाती रही है। वह वही बैठ गया। इतने मे दो चार व्वक्ति उस के आस पास एकत्र हो गए। उन में से एक बोला—

'ओहो, इसका तो सिर फट गया। और खून बह रहा है।'

इसके पश्चात् नाजिम को अपना हृदय डूबता हुआ प्रतीत हुआ। फिर उसे ज्ञात नही क्या हुआ। जब उसे होश आया तो वह एक हस्पताल में पलग पर पड़ा था और उस के सिर पर पट्टी बंधी हुई थी। उस ने देखने का यत्न किया किन्तु उसे कुछ सुझाई न पड़ा। उसके मुख से एक

हलकी सी चीख निकली—'मेरी आंखे।' समीप ही एक नारी-कण्ठ की आवाज सुनाई पडी—आप आराम से लेटे रहिये। सिर का घाव अभी ताजा है। ऐसा न हो कि तकलीफ बढ जाए।'

यह एक नर्स की आवाज थी। नाजिम ने परेशानी से कहा—

'मै कहा हू और आप कौन है ?'

'आप हस्पताल मे है और मै नर्स हू।'

'नर्स ! मेरी आखो को क्या हुआ ?'

'घबराइये नही। ये ठीक हो जाएंगी। सिर मे चोट आ जाने की वजह से आप की आखो की रोशनी जाती रही है। डाक्टरो की राय है कि वह ठीक हो जाएगी।'

नाजिम कुछ देर तक सोचता रहा फिर सन्तोष के स्वर मे बोला—

'यदि न भी ठीक हों तो मुझे उस का दु.ख नही। अब मुझे आखों की जरूरत नही है।'

नर्स यह सुनकर आश्चर्य में डूब गई और बोली—

'हर आदमी को आखों की जरूरत है आप को क्यों नही ?'

नाजिम ने पूरे धैर्य से कहा—

'जिस चीज को देखने के लिए मुझे आखो की जरूरत थी वह अब मेरी नही पराई हो चुकी है। अगर आखें ठीक भी हो जाएं तो शायद उसे मै दोबारा न देख सकू। फिर इन आखों से लाभ ?'

नर्स ने उत्सुक स्वर में कहा—'वह क्या वस्तु है ?'

'नर्स ! यह एक लम्बी कहानी है। न मै सुना सकूगा और न शायद आप सुन सकेगी। बस इतना ही समझ लो कि एक राही जब कठिन रास्तों को पार करता अपनी मजिल के निकट पहुंचा तो उसे उसमें दाखिल होने की इजाजत न दी गई। फिर उस के सफर ने ऐसा रास्ता पकड़ा जिस की कोई मंजिल नहीं और वह अब तक इधर उधर भटक रहा है।'

नर्स यह सुन कर मौन हो गई। और उसने रोगी को परेशान करना उचित न समझा।

## २०

**

जब ताहिरा कालेज से वापस घर आई तो वह अति परेशान और घबराई हुई दिखाई पडती थी। उसकी मा ने उसे इस दशा मे देख कर पूछा—

'क्यो बेटी ! आज जल्दी ही कालेज से वापस आ गई हो और कुछ परेशान सी नजर आती हो। क्या बात है ?'

ताहिरा ने भर्राई हुई आवाज मे कहा—

'अम्मा ! आज आखरी बार कालेज गई थी। इस के बाद शायद कभी न जाऊं।'

उसकी माता ने घबराए स्वर में कहा—

'क्यों ? क्या बात हुई ? साफ २ कहो।'

'नाजिम कालेज छोड़ कर कही चले गए है।'

यह कहते हुए ताहिरा की चीखें निकल गई और उसने फूट २ कर रोना आरम्भ कर दिया। उसके पिता साथ ही के कमरे मे बैठे हुए थे। चीखो की आवाज सुन कर दौडे हुए आए और ताहिरा की माता से सम्बोधन कर बोले—

'है, यह रो रही है ? क्या हुआ है ?'

'मै खुद अभी तक नही समझ सकी। मैने पूछा तो बोली कि शायद अब मै कालेज कभी न जाऊं।'

'आखिर कोई बात तो होगी।'

'कहती है कि नाजिम कही चला गया है।'

'कहा चला गया है ?'

'ताहिरा से ही पूछिए।'

यह सुन कर ताहिरा के पिता ने कहा—

'क्यो बेटी ! नाजिम कहा चले गए है और क्यों चले गए है ?'

ताहिरा ने अपने पिता और माता को पूरी घटना कह सुनाई और बोली—'इस साजिश मे निश्चय ही भाई जान का हाथ है। उन्होंने ही मुझसे मेरी एक तस्वीर ली थी और वही प्रोफेसर वहीद को भेजी गई।'

ताहिरा के पिता ने कहा—

'हा, मेरा भी यही ख्याल है। क्यो कि वह इस रिश्ते के खिलाफ था। इस लिए उसने यह हरकत की होगी। मै अभी उससे पूछता हूं।'

यह कहते हुए उन्हों ने एक नौकर से कहा—

'शमीम को बुलाओ।'

शमीम अपने कमरे मे बैठा एक उपन्यास पढ रहा था। नौकर उसे लेकर कुछ ही मिनटों मे आ पहुंचा। उसके पिता ने क्रोध पूर्ण दृष्टि से देखते हुए कहा—'क्यो जनाब ! यह हरकत आप ने क्या की है ?'

शमीम ने प्रश्न सूचक दृष्टि से अपने पिता की ओर देखा और बोला—'क्या अब्बा जान !'

'प्रोफेसर वहीद के घर ताहिरा के रिश्ते की खबर किस ने भिजवाई है ?'

शमीम यह सुन कर घबरा सा गया और बोला—

'अब्बाजान ! मुझे क्या पता ?'

'ताहिरा की तस्वीर क्या तुम्हारे पास थी ?'

'हा, एक दिन मैंने ताहिरा से ली थी।'

'क्यों ली थी ?'

शमीम और घबरा गया और लड़खडाती हुई ध्वनि मे बोला—

'वह तस्वीर—वह तस्वीर—असल में अब्बाजान—वह तस्वीर मैंने अपने पास रखने के लिए ली थी।'

'वह तस्वीर प्रोफेसर वहीद के पास कैसे पहुच गई ?'

शमीम के पास इस प्रश्न का कोई उत्तर नही था। वह मौन हो गया। उसके पिता को पता चल गया कि सारा दोष इसी का है। वे क्रोध से कापते हुए बोले—

'आज से तुम इस घर में नही रह सकते। इसी वक्त यहा से निकल जाओ और जिन्दगी भर इस घर मे कदम मत रखो। मै आज ही यह वसीयत कर दूगा कि मेरी जायदाद से तुम्हारा कोई सम्बन्ध नही।'

शमीम बाप का यह निर्णय सुन कर सटपटा गया और बोला—

'अब्बाजान ! मै अपने कुसूर की माफी चाहता हू। वाकई मैंने यह अपराध किया है लेकिन यह सब कुछ मैंने इशरत के कहने से किया।'

'यह इशरत कौन है ?'

'नाजिम की बीवी है। असल में वह इस रिश्ते के खिलाफ थी। मैंने भी उसके कहने से रिश्ते का विरोध किया। मै अपनी इस हरकत पर शर्मिन्दा हू कि मैंने अपनी बहन का भविष्य तबाह करने की कोशिश की और एक मक्कार औरत के धोखे मे आकर एक ऐसा काम कर गया जो मुझे नही करना चाहिए था।'

मै तुम्हारी पाजियाना हरकतों को जानता हूं। अब तुम सारा काम खराब करने के बाद शर्मिन्दा होकर अपनी सजा से बचना चाहते हो। मै इस के लिए किसी तरह तैयार नहीं। मेरा फैसला अटल है। बस तुम इसी वक्त मेरे घर से निकल जाओ। मै तुम्हारा मुह देखना नही चाहता। जो आदमी दूसरों के साथ मिल कर अपनी बहिन के रास्ते में काटे बोता है उससे मुझे नेकी की कोई उम्मीद नहीं हो सकती।'

ताहिरा के पिता की आवाज ऊंची होती गई। वे क्रोध में कांप रहे थे और उनके नेत्र रक्त उगलते दिखाई पड़ रहे थे। ताहिरा की माता

ने अपने पुत्र की सफाई देनी चाही किन्तु उन्हों ने उसे भी झाड़ दिया और बोले—

'मैं तुम्हारी सिफारिश मानकर आस्तीन मे साप पालना नही चाहता। इस नालायक को इसी वक्त मेरे घर से बाहर हो जाना चाहिए। वर्ना मै इसे पुलिस के हवाले करवा दूगा।'

शमीम ने बहुतेरे हाथ पाव जोडे किन्तु पिता का क्रोध कम न हुआ। अन्त में उसे मन मार कर घर से निकलना पड़ा। शमीम के जाने के पश्चात् पिता ने ताहिरा के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा—

'बेटी ! तुम सन्तोष रखो। मै खुद नाजिम को ढूढ कर लाऊगा। मै आज ही उस की खोज में आदमी भेजता हू। उम्मीद है वह मिल जाएगा।'

ताहिरा के नेत्रों से अश्रु बह रहे थे। उस के केश बिखरे थे और चेहरा पीला था। पिता के धैर्य पूर्ण शब्द सुन कर उसे कुछ सन्तोष सा हो गया। उसे आशा थी कि नाजिम अन्त मे मिल जाएगा। पिता ने उस की खोज मे कोई कमी उठा न रखी किन्तु इस पन्द्रह दिन की भाग दौड़ का कोई सन्तोषजनक परिणाम न निकल सका और नाजिम का कोई पता न चल सका।

ताहिरा को यह तो पता न था कि नाजिम कहा गया है किन्तु उसे यह सन्देह अवश्य था कि सम्भवत: वह दिल्ली चला गया हो। क्योंकि जिस समय वह हवा खोरी का नाम लेकर घर से निकला दिल्ली जाने वाली गाड़ी उसी समय छूटती थी। जब नाजिम की खोज के सम्पूर्ण प्रयत्न व्यर्थ सिद्ध हुए तो उसने दिल्ली जाने का निश्चय कर लिया। वह जानती थी कि यदि उसने अपने माता पिता को अपने निश्चय से सूचित किया तो वे उसे दिल्ली जाने की आज्ञा न देंगे। इस लिए उस ने चुपके से घर से निकल जाने और नाजिम को खोज निकालने का निश्चय कर लिया।

ताहिरा कालेज जाना त्याग चुकी थी। उसके माता पिता ने बार २ उसे कालेज जाने के लिए कहा किन्तु वह इस के लिए तैयार न हुई।

एक दिन शाम से कुछ देर पहिले वह वस्त्र आदि पहनकर घर से निकली। वह साय काल भ्रमण करने जाती थी। उसकी माता ने सोचा कि वह कही टहलने जा रही है किन्तु ताहिरा टहलने के लिए घर से नही निकली थी। वह नाजिम की खोज मे दिल्ली जाने का निश्चय कर चुकी थी। उसने सडक पर पहुच कर अपनी हाथ घडी देखी तो दिल्ली जाने वाली गाडी छुटने मे कोई पन्द्रह बीस मीनट शेष थे। वह शीघ्रता से एक तागे में सवार हो कर स्टेशन की ओर चल दी। उसने इससे पूर्व कभी अकेले रेल की यात्रा न की थी। वह इस से घबराती थी किन्तु नाजिम को खोज निकालने की इच्छा इतनी बलवती हो चुकी थी कि यात्रा के भय उसे अकिञ्चित् प्रतीत हो रहे थे। उसका तागा पूरी तेजी मे स्टेशन की ओर जा रहा था। मार्ग मे उसे स्त्री और पुरुषो की बहुत सी ऐसी टोलिया मिली जो सैर सपाटे के लिए घरो से निकली थी। दोपहर के समय तपने वाली कोल तार की सडक शाम के सुहाने समय मे बडी आकर्षक प्रतीत होती थी। उसके दोनो ओर उद्यान थे और उन मे सुन्दर कोठिया। पुष्पो की भीनी २ सुगन्ध आ रही थी किन्तु इन सम्पूर्ण आकर्षणो के होते हुए ताहिरा को लाहौर की वह साझ कुछ उदास सी दिखाई पड रही थी। ताहिरा ने सोचना आरम्भ किया कि जो वातावरण साधारण लोगों के निकट अत्यन्त आकर्षक और रोचक है वह उसके लिए क्यो उदास है? अन्त में वह इस परिणाम पर पहुची कि किसी वस्तु का आकर्षण अथवा सौन्दर्य वास्तव मे स्वयं कोई वस्तु नही अपितु वह देखने वालों की दृष्टि पर आधारित है। यदि देखने वाले के हृदय मे प्रसन्नता के भाव है तो करुण से करुण दृश्य भी उसे सुन्दर और आकर्षक प्रतीत होगा और यदि उसका हृदय दुःख और क्लेश की भावना से पूर्ण है तो अति सुन्दर वस्तु भी उसे भयानक प्रतीत होगी। लाहौर की साझ उन लोगों के लिए नही जिनके हृदय क्लेश मे डूबे है।

ताहिरा का तागा रेलवे स्टेशन के मुसाफिर खाना के सामने जाकर रुक गया। वह शीघ्रता से उतरी और तागे का किराया चुकाने के पश्चात्

टिकट घर की ओर बढ़ गई। गाड़ी छूटने मे अब केवल पांच मिनट शेष थे। उसने शीघ्रता से टिकट खरीदा और गाडी मे जा कर बैठ गई। कुछ देर बाद इंजन ने सीटी दी और गाड़ी चल दी।

ताहिरा अपने डिब्बे से सिर निकाले बाहर देख रही थी। गाड़ी को अब अमृतसर के स्टेशन पर रुकना था। उसके देखते २ सूर्य पश्चिम में डूब गया और रात्री का अधकार फैलना आरम्भ हो गया। पन्द्रह बीस मिनट के समय में घुप अधेरा हो गया। रेल गाडी रात्रि के अधकार को चीरती हुई पूरी गति के साथ आगे बढ रही थी। जब वह किसी स्टेशन पर से गुजरती तो एक विचित्र गूज सी उत्पन्न हो जाती और गाडी चलने का शोर दुगना हो जाता। रेलवे स्टेशन को पार करने के पश्चात् फिर एक प्रकार की शान्ति सी छा जाती और गाड़ी की गति स्थिर हो जाती। गाड़ी मार्ग के स्टेशनों को पीछे छोड़ती हुई कोई एक घण्टे में अमृतसर के स्टेशन पर जा कर रुकी। ताहिरा उस डिब्बे मे अकेली थी। अमृतसर के स्टेशन पर दो और स्त्रियां उसमे सवार हो गई। एक युवती थी और दूसरी अधेड। ताहिरा ने अनुमान लगाया कि एक मा है और दूसरी बेटी। नव युवती ताहिरा के निकट ही आ कर बैठ गई और बोली—

'बहिन ! आप कहां जा रही है ?'

'दिल्ली जा रही हूं।'

'हम लोग भी दिल्ली जा रहे है।'

ताहिरा ने कोई उत्तर न दिया। उस लड़की ने बात चीत का क्रम बनाए रखने के लिए कहा—

'मै दिल्ली में नौकर हूं। छुट्टी पर आई थी। छुट्टी खत्म हो गई है और अब अपनी माता जी के साथ दिल्ली जा रही हूं।'

उस लड़की का ख्याल था कि इस के पश्चात् बात चीत का क्रम आरम्भ हो जाएगा किन्तु इस बार भी वह सफल न हो सकी और ताहिरा ने उत्तर में कुछ न कहा। फिर उस ने ताहिरा से पूछा—

'आप किस के पास दिल्ली जा रही है ?'

ताहिरा कुछ क्षण उस की ओर देखती रही फिर बोली—

'किसी के पास नही ।'

यह सुन कर उस लडकी को बहुत क्रोध आया और उठ कर अपनी मा के निकट जा बैठी । उस की मा ने उस से कहा—

'ये लडकी कौन है ?'

वह मुह बना कर बोली—

'होगी कोई । बडी गर्वीली मालूम होती है ।'

ताहिरा ने उसके ये शब्द सुन लिए और खिड़की से बाहर सिर निकाल कर देखने लगी । गाडी अमृतसर से छूट चुकी थी । थोड़ी देर पश्चात् उन दोनो स्त्रियो ने विस्त्र बिछाए और लेट गई । ताहिरा बराबर अपने स्थान पर बैठी रही और अपने विचारो मे खोई रही । उस का ध्यान केवल उस एक बिन्दु पर केन्द्रित था कि नाजिम को कहां खोजे । उस ने सारी रात बैठे-बैठे गुजार दी और रेलगाडी उस के तेखते-देखते सैकडों मील का मार्ग पार करने के पश्चात् दिल्ली स्टेशन पर पहुच गई । वे दोनो स्त्रिया अब जाग गई थी और अपना सामान सभालने मे लगी हुई थी । लडकी ने ताहिरा को आश्चर्य से देखा और अपनी मा के समीप जा कर धीरे से बोली—

'यह लडकी सारी रात एक ही जगह बैठी रही है । मालूम नही यह कौन है ? सामान भी तो इस के पास कुछ नही ।'

मा ने कहा—'बेचारी कोई दुःखिया मालूम होती है ।'

लड़की ने कुछ करुण स्वर मे कहा—

'हां, मेरा भी यही ख्याल है ।'

दोनों ये बातें कर ही रही थीं कि ताहिरा प्लेट फार्म पर उतर गई और उनके देखते-देखते सामने के पुल पर चढ़ गई ।

रेलवे स्टेशन से बाहर निकलने के पश्चात् वह सोचने लगी कि जाए तो कहां जाए ? दिल्ली में उस के दो चार सम्बन्धी भी थे किन्तु वह उन के पास ठहरना नहीं चाहती थी । होटल में अकेले ठहरना उसने

उचित न समझा। वह इसी प्रकार के विचारों मे डूबी हुई थी कि एक कोचवान ने उस के निकट आ कर कहा—

'आप कहां जाएंगी ? क्या आपको तागा चाहिये ?'

ताहिरा ने कहा—

'हां, चाहिये। मुझे किसी जगह नही जाना। सारे शहर का एक चक्कर लगाऊगी। तुम मुझे सारे शहर की सैर कराओ।'

कोचवान ने कहा—

'बहुत अच्छा। किराया तै कर लीजिये।'

ताहिरा ने तागे पर बैठते हुए कहा—

'किराया जो तुम कहोगे दे दूगी।'

कोचवान तांगा ले कर रेलवे स्टेशन की सीमा से निकल गया। ताहिरा का यह विचार था कि तागे में सवार हो कर सारे नगर मे घूमू। सम्भव है कही नाजिम दिखाई पड़ जाए। तागे ने नगर के गली कूचो का चक्कर लगाना आरम्भ कर दिया। ताहिरा तागे मे बैठी इधर उधर खोज पूर्ण दृष्टि से देखती रही। तागे पर घूमते हुए उसे दो तीन घण्टे हो गए किन्तु नाजिम उसे कही दिखाई न पडा। कोचवान ने एक स्थान पर पहुच कर तागा खड़ा कर दिया और बोला—

'पुराने शहर की तो आप सैर कर चुकी। अब आप कहें तो नई दिल्ली ले चलू आप को।'

ताहिरा ने कहा—'हा, हां, चलो।'

कोचवान तागे को ले कर फैज बाजार रोड से होता हुआ दिल्ली दरवाजे की ओर चल दिया। दिल्ली दरवाजे से निकल कर तागे ने प्राचीर के साथ-साथ पश्चिम की ओर मुह फेरा। सड़क के बाई ओर बहुत बड़ी बिल्डिग थी। ताहिरा ने कोचवान से पूछा—

'यह कौन सी बिल्डिग है ?'

कोचवान ने कहा—'यह दिल्ली का बड़ा हस्पताल है।'

ताहिरा के मन में विचार आया कि सम्भव है नाजिम हस्पताल में

हो किन्तु उसके साथ ही उस ने सोचा कि वह तो बामार न था। उसे हस्पताल आने की क्या आवश्यता पड़ी थी। वह तागे पर बैठी बिल्डिग के निकट से गुजर रही थी और मन ही मन यह अनुभव कर रही थी कि हस्पताल मे नाजिम को खोजना व्यर्थ है किन्तु न जाने उस का हृदय हस्पताल की ओर क्यो खिचा जा रहा था। उस के मन में अचेतन रूप मे यह इच्छा उत्पन्न हो रही थी कि हस्पताल के वार्डों को एक दृष्टि देख ले। उसने पहले तो अपनी इस इच्छा को कोई अधिक महत्व न दिया किन्तु जब यह इच्छा बलवती हो कर उस के हृदय और मस्तिष्क पर छा गई तो उस ने कोचवान से कहा—

'तागा पीछे मोड़ लो। और मुझे हस्पताल के दरवाजे पर उतारदो।

कोचवान ने तागा मोड़ा और हस्पताल के द्वार पर पहुचा। उसने तागा रोकते हुए कहा—

'तो क्या मैं आपकी राह देखू ?'

'नहीं, राह देखने की जरूरत नही। तुम अपना किराया लो और जाओ।'

यह कहते हुए ताहिरा ने दस रुपये का एक नोट निकाल कर कोचवान के हाथ पर रख दिया और वह आशीष देता तांगा ले कर चल दिया।

ताहिरा कितनी ही देर तक हस्पताल में घूमती रही। क्यों कि रोगियो से भेट करने का समय निश्चित होता है अतः उसे वार्डों मे जाने से रोक दिया गया। वह परेशान थी कि क्या करे ? वह एक बरामदे में घूम रही थी कि एक लड़की ने पीछे से उस के कधे पर हाथ रख दिया। यह वही लड़की थी जो अपनी मा के साथ अमृतसर के स्टेशन पर गाड़ी में सवार हुई थी। ताहिरा उसे देखते ही लज्जित सी हुई। वह लड़की उस की लज्जा को ताड़ गई और बोली—

'कहिये, क्या काम है ? मैं इस हस्पताल मे डाक्टर हू। शायद आप की कोई सेवा कर सकू।'

ताहिरा ने उस की ओर कृतज्ञता पूर्ण दृष्टि से देखते हुए कहा—

'सब से पहले मैं अपनी बेरुखी की माफी चाहती हू। बात असल में यह है कि मैं बहुत परेशान थी और अब तक हू। इस लिये रेल के डिब्बे में आप की तरफ ध्यान नही दे सकी।'

लड़की ने हंसते हुए कहा—

'यह कोई ऐसी बात नहीं है। अगर मेरी भी यही हालत होती तो मैं भी वही करती जो आपने किया। आप से कोई शिकायत करने का प्रश्न ही नहीं उठता। हां, तो कहिये आप यहां हस्पताल मे कैसे आई ?'

ताहिरा के नेत्र अश्रुपूर्ण हो गए। वह बोली—

'मैं किसी को खोजती यहा पहुची हू।'

'क्या आप को मालूम है वह इस हस्पताल मे है ?'

'नहीं, यह तो मुझे मालूम नहीं।'

'फिर इस हस्पताल में उसे खोजने से लाभ ?'

'मेरा दिल कहता है वे यहीं है।'

उस लड़की ने मुस्कराते हुए कहा—

'अच्छा तो यह दिल का मामला है।'

ताहिरा कुछ लजा सी गई। उसने कुछ कहना चाहा किन्तु उस के होंठ फडफड़ा कर रह गए। उस लड़की ने उसे धैर्य दिलाते हुए कहा—

'आप चिन्ता न कीजिये। मैं उन साहब को ढूढने मे आपकी पूरी-पूरी सहायता करूगी। लेकिन हा, यह बताइये कि असल मे मामला क्या है ?'

ताहिरा कुछ देर तक मौन खड़ी रही। फिर उस ने वही खडे-खड़े संक्षेप से अपनी कहानी कह सुनाई। वह लड़की उस की करुण कथा सुन कर बड़ी प्रभावित हुई और उस के नेत्रों में अश्रु झलकने लगे। वह उसे ले कर अपने कमरे में आ गई और एक चपरासी से बोली—

'साथ के कमरे से इनडोर रोगियो का रजिस्टर उठा लाओ।'

इस के बाद उसने ताहिरा को बैठने के लिये कुर्सी दी और बोली

'अगर वे साहब इस हस्पताल मे है तो रजिस्टर देखकर मालूम हो जाएगा। और हा, उन का नाम क्या है ?'

ताहिरा नें कहा—'डाक्टर नाजिम।'

इतने मे चपरासी साथ के कमरे से इनडोर रोगियों का रजिस्टर ले कर आ गया और लेडी डाक्टर ने दस पन्द्रह दिन में प्रविष्ठ होने वाले रोगियो की सूचि देखनी आरम्भ की। रजिस्टर के पृष्ठ देखते हुए उस की दृष्टि एक स्थान पर जा कर अटक गई। नाजिम और उस के पिता का नाम मिया मैराजउद्दीन लिखा था। यह देखते ही उस के नेत्र प्रसन्नता से चमक उठे और ताहिरा की ओर देखकर मुस्कराती हुई बोली—'आप के दिल ने आपको सही रास्ता दिखाया।'

'तो क्या नाजिम इस हस्पताल मे है ?'

'हा, इसी हस्पताल मे है।'

'लेकिन क्या बीमारी है ?'

लेडी डाक्टर ने बीमारी के कोष्ठ मे देखते हुए कहा—

'इन के सिर पर चोट आई है और उन की आखों की रोशनी जाती रही है।'

यह सुनते ही ताहिरा अत्यन्त घबराई और बोली—

'तो क्या आखे जाती रही ?'

लेडी डाक्टर ने सहानुभूति के स्वर में कहा—

'हां, रजिस्टर से तो यही मालूल होता है।'

'क्या मै उन्हे इस वक्त देख सकती हू ?'

'बड़े शौक से।'

'लेकिन उन्हें यह पता न चलना चाहिये कि कोई उन्हें देखने के लिये आया है। क्यों कि अगर उन्हे मेरे आने का पता चल गया तो वे मुझे नही देख सकेंगे और उन्हे अपनी आखो के जाने का दुःख होगा।'

मेरा भी यही ख्याल है कि उन्हे आप के आने का पता नहीं होना चाहिये। नहीं तो डर है कि उनके स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़े और रोग मे और ज्यादा उलझन पैदा हो जाए।'

'तो फिर चलिये।'

लेडी डाक्टर यह सुन कर उठ खड़ी हुई और ताहिरा को साथ ले कर उस वार्ड की ओर चल दी जहा नाजिम को रखा गया था। मार्ग में ताहिरा ने लेडी डाक्टर को सम्बोधन करते हुए कहा—

'आप ने बड़ी महरबानी की है। क्या मैं आप का शुभ नाम जान सकती हू?

लेडी डाक्टर ने मुस्कराते हुए कहा—

'कौशल्या कुमारी।'

ताहिरा और कौशल्या दोनों बाते करती हुई वार्ड मे पहुच गई। यह एक बहुत लम्बा कमरा था जिस के दोनों ओर रोगियो के पलग बिछे हुए थे और बीच मे चलने के लिये मार्ग था। कौशल्या चलती हुई एक पलंग के पास जा कर रुक गई और रोगी की ओर सकेत करते हुए धीरे से बोली—

'क्या वे ही साहब है?'

ताहिरा ने नाजिम को पहचान लिया और बोली—

'हा, वे ही है।'

नाजिम पलग पर लेटा हुआ था। उस के प्रकाश हीन नेत्र खुले हुए थे। उस की यह दशा देख कर ताहिरा के हृदय मे एक तीर सा लगा। उस के नेत्रों से अश्रुओं का एक प्रवाह सा बह चला और उस की दशा बिगड़ने लगी। कौशल्या ने उसे बचाया और उसे सहारा दे कर वहां से ले गई। जब ताहिरा वार्ड से बाहर निकल गई तो विवश उस की चीखें निकल गईं। वह उस भवन के सामने घास के एक मैदान मे बैठ गई और उस के निकट ही कौशल्या बैठ कर उसे धैर्य दिलाये का यत्न करती हुई बोली—

'जिस चीज की आप खोज में थीं वह तो आप को मिल गई। अब रोने धोने से क्या लाभ ? क्या आप को यह दुःख हुआ है कि जिस से आप प्रेम करती है यह अधा हो गया ?'

ताहिरा ने कहा—

'बहिन ! यह बात नही। वे अधे हों या आखों वाले। दोनो हालतों में मेरे लिये पूजनीय है। मेरे प्यार मे कोई फर्क नही आया। दुःख मुझे सिर्फ इस बात का है कि मेरे लिये डाक्टर नाजिम को कैसे-कैसे कठिन हालात से गुजरना पड़ा है। मुझे उन का दुःख देख कर रोना आ गया है और कोई बात नही।'

कौशल्या ने उसके हृदय को बढ़ावा देते हुए कहा—

'आप चिन्ता न कीजिये। नाजिम शीध्र ही स्वस्थ हो जाएगे। अभी उनके सिर के घाव का इलाज हो रहा है। जब वह भर जाएगा तब उन के नेत्रो का प्रकाश लौटाने का यत्न किया जाएगा। और आशा है कि वे फिर ठीक ठाक हो जाएगे। इस बारे मे मुझ से जो कुछ हो सकेगा आप की पूरी-पूरी सहायता करूगी। आज से आप मेरी सहेली है और आप की सहायता करना मै अपना कर्तव्य समझती हू।'

ताहिरा ने कहा—

'मै आप की शुक्र गुजार हू। आप ने मेरे लिये बड़ी तकलीफ उठाई है लेकिन अब जब कि आप ने मुझे सहेली कहा है तो मै आप को एक और तकलीफ दूगी।'

कौशल्या ने कहा—

'हा, हा, कहिये। मै आपकी क्या सेवा कर सकती हू ?'

'मै नाजिम के सामने रहना चाहती हू। कोई इसका उपाय कीजिए।'

'यहां हस्पताल मे नर्सों की दो-चार जगह खाली है अगर आप कहें तो मै आपको रखवा दू। इसके बाद मै यत्न करके आपकी ड्यूटी उस वार्ड मे लगवा दूगी।'

'हा, यह तरकीब तो अच्छी है। मै नर्स की नौकरी करने को तैयार

हू । ग्रार सच पूछिए तो मेरी यह बहुत बड़ी इच्छा है कि इस बीमारी में मुझे नाजिम की खिदमत करने का मौका मिले । इसके ग्रलावा मैं उनकी ग्रच्छी तरह से देखभाल भी कर सकूगी ।'

'बहुत ग्रच्छा । मैं ग्राज ही इसका प्रबंध करती हू ।'

कौशल्या ने उसी दिन ताहिरा का नाम ऐप्रेण्टिस नर्स के रूप में लिखवा दिया ग्रौर उसकी ड्यूटी उस वार्ड में लगवा दी जहा नाजिम था। ताहिरा ने नाजिम की देखभाल का काम ग्रपने हाथ मे ले लिया । ड्यूटी के समाप्त होने के पश्चात् भी उसका ग्रधिकतर समय उस वार्ड में करता ग्रौर वह हर समय नाजिम की सेवा मे लगी रहती किन्तु उसने यह प्रकट न होने दिया कि वह ताहिरा है।

नाजिम कई दिन से यह ग्रनुभव कर रहा था कि नई नर्स उसकी बहुत ग्रधिक सेवा करती है किन्तु उसे इसकी वास्तविकता का ज्ञान न था । ज्ञान होता भी कैसे ? वह यह ध्यान में भी न ला सकता था कि नर्स के रूप मे ताहिरा हो सकती है । एक दिन ताहिरा उसके सिर की पट्टी ठीक कर रही थी कि नाजिम से न रहा गया ग्रौर बोला—

'नर्स ! ग्राप मेरी बहुत खिदमत करती है । ग्रापसे पहले भी कई नर्सों की ड्यूटी इस वार्ड मे लग चुकी है मगर वे कोई ज्यादा ध्यान नहीं देती थी । ग्राप तो मेरी बहुत ज्यादा देखभाल करती है ।'

ताहिरा ने मुस्कराते हुए कहा—

'तो क्या ग्रापको मेरा यह व्यवहार पसन्द नही ?'

नाजिम ने कहा —

'यह ग्रापने कैसे कह दिया कि मुझे यह ग्रापका व्यवहार पसन्द नही ? मैं तो ग्रापका बहुत शुक्रगुजार हू लेकिन ग्रापसे यह पूछना चाहता हू कि ग्राप मुझ पर इतनी ज्यादा तवज्जोह क्यों दे रही है ? ग्राखिर इस वार्ड में ग्रौर भी तो कई मरीज है । जहा तक मैं जानता हू ग्राप मेरी ज्यादा देख-भाल करती है ।'

'हां, यह ग्रापने सही कहा । बात ग्रसल मे यह है कि दूसरे रोगियो

की देख-भाल करने वाले तो और भी है। उनकी कुशल पूछने और उन की सेवा करने के लिए उनके सगे-सम्बन्धी पहुचते रहते है लेकिन आपको पूछने के लिए यहा कोई नही आता। अब अगर मै भी आपकी तरफ ज्यादा ध्यान न दू जैसा कि दूसरी नर्से करती ह तो यह आपके साथ एक अन्याय होगा।'

नाजिम के प्रकाशहीन नेत्रों में आंसू आ गए और बोला—

'नर्स! यह आपने बिल्कुल ठीक कहा है। इस दुनिया मे मेरी खबर लेने वाला कोई नही। सिर्फ आप ही एक है जो मेरी हालत से प्रभावित होकर मेरी इतनी सेवा करती है। काश—मै आपको इसका कोई बदला दे सकता। लेकिन मै गरीब आदमी भला इस काबिल कहा?—नर्स! एक बात कहू अगर आप बुरा न मानें तो।'

'हां, हा, कहिए।'

'मुझे आपकी आवाज से बड़ी घृणा है।'

'क्यो?'

'आपकी आवाज उस बेवफा की आवाज से मिलती-जुलती है जिसने मेरे प्यार को ठुकराकर मुझे धोखा दिया और मुझे इस हालत को पहुचाया।'

'वह कौन है?'

'साफ है कि वह एक औरत ही होगी।'

'हा, यह तो मुझे मालूम है मगर यह आपको कैसे मालूम हो गया कि उसने आपसे धोका किया है। हो सकता है आपको गलतफहमी हुई हो।'

'क्या आपका ख्याल है कि मैने उसकी हमदर्दी को गलती से मुहब्बत समझ लिया?'

'यह बात नही। हो सकता है कि वह आपसे प्यार ही करती हो। लेकिन आपने उसके प्यार को जाहिरदारी का प्यार समझ लिया हो। और उसे बेवफा समझ बैठे हों। आपके पास इसका प्रमाण क्या है?'

'यह तो आप यों कह रही हैं जैसे आप उसे जानती हैं और उसकी बेगुनाही का आपको पता है।'

ताहिरा ने गम्भीरता से कहा—

'मैं उसे नही जानती लेकिन मेरा ख्याल है कि कई बार भूल से भी ऐसे हालात पैदा हो जाते हैं।'

'यह आप कैसे कह सकती हैं ?'

'क्योंकि ऐसे ही हालात मुझ पर भी गुजर चुके हैं।'

'तो फिर हो सकता है कि आपके बारे मे किसी को या किसी के बारे मे आपको भूल हुई हो। लेकिन मेरा मामला आपके मामले से बिल्कुल अलग है।'

नाजिम ने यह कहते हुए करवट ले ली। ताहिरा समझ गई कि वह इस बारे मे कुछ सुनना नही चाहता। उसने कुछ कहना उचित न समझा और बातचीत का क्रम वही समाप्त हो गया।

दूसरे दिन जब ताहिरा अपनी ड्यूटी पर आई तो नाजिम को दवाई पिलाकर बोली—

'हा, कल तुमने उस बेवफा का नाम तो बताया ही नही था।'

'नाजिम ने धीरे से कहा—'ताहिरा।'

'तो क्या आपको विश्वास है कि ताहिरा ने आपसे बेवफाई की है ?'

'आप मेरे सामने ताहिरा की चर्चा न करें। मुझे दुख होता है।'

'कल तो आप ही ने यह चर्चा की थी।'

'यह सही है। लेकिन मेरा मतलब यह नही था कि इस चर्चा को सदा के लिए बहस का विषय बना लिया जाए। आपको उससे क्या दिलचस्पी है ?'

'सिर्फ इतनी ही कि ताहिरा भी मेरी तरह एक लडकी है।'

'सिर्फ इस बात का ध्यान रखते हुए आपने उसकी सफाई देना शुरू कर दिया है ? जैसे ज्यादती और बेवफाई करना औरतों का काम ही नहीं ?'

'लेकिन आप भी तो उसकी बेवफाई का कोई सबूत नही दे सकते।'

'सबूत देने की कोई जरूरत नही। मेरा दिल जानता है।'

नाजिम ताहिरा की इस बीतचीत से चिड रहा था किन्तु वह आनन्द लेने के लिए इस चर्चा को छेडे हुए थी। अन्त मे नाजिम ने तंग आकर कहा—'नर्स! खुदा के लिए इस चर्चा का छोड दीजिए। ताहिरा का नाम सुनकर मुझे दुःख होता है।'

ताहिरा अब भी समय की गम्भीरता को न समझ सकी। और मुस्कराती हुई बोली—

'अगर ताहिरा यहां खुद आकर आपको कायल करे कि आप उसके बारे में गलती पर है तो फिर ?'

यह सुनकर नाजिम स्वय पर काबू न पा सका और जोर से चीखकर बोला—

'नर्स! मै आपकी ये बातें नही सुन सकता। आप मेरी तौहीन कर रही है।'

नाजिम अपने पलग पर इस जोर से उछला कि उसका पाव जोर से ताहिरा के पेट में लगा और वह गिरकर तड़पने लगी। इसके साथ ही नाजिम का सिर पलग की लोहे की पट्टी से टकराया और उसे यों अनुभव हुआ जैसे उसकी आखों के सामने धुधला-सा प्रकाश नृत्य कर रहा है। धीरे-धीरे उसके नेत्रो का प्रकाश लौट आया और उसे आसपास के लोग स्पष्ट दिखाई पड़ने लगे। उसने देखा तो उसके पलग की थोड़ी-सी दूरी पर ताहिरा धरती पर पडी थी और दो-चार डाक्टर और नर्सें उसे घेरे मे लिए थी। नाजिम उसे देखते ही पहचान गया। और शीघ्रता से उस के समीप जाकर बोला—

'ताहिरा!'

ताहिरा ने नेत्र खोल दिये और बोली—

'हा, मैं ताहिरा ही हू। क्या आपकी गलतफहमी दूर हो गई ?'

नाजिम ने सिर पीटते हुए कहा—

'ताहिरा ! मैंने तुम पर जुल्म किया है ।'

ताहिरा के होठो पर मुस्कराहट फैल गई और रुकती हुई बोली—

'आपने मुझ पर अहसान किया है । मैं 'डस डी मोना' की मौत मरना चाहती थी । मै खुश हू कि मेरी यह आखिरी खाहिश पूरी हो गई है ।'

यह कहते हुए ताहिरा ने आखे बन्द कर ली । नाजिम ने उसका सिर अपनी गोद मे लेते हुए जोर से कहा—

'ताहिरा !'

ताहिरा ने नेत्र खोल दिए । उसने कुछ कहने का यत्न किया किन्तु न कह सकी । नाजिम ने उसे देखते हुए कहा—

'ताहिरा ! तुम्हारी यह खाहिश तो पूरी हो गई लेकिन यह ड्रामा उस वक्त तक अधूरा रहेगा जब तक मैं अथैलो की मौत न मरूं ।'

ताहिरा की वाक् शक्ति समाप्त हो चुकी थी । उसकी आखें नाजिम से प्रार्थना करती हुई प्रतीत हो रही थी कि

'ऐसा न करना ।'

तत्पश्चात् ताहिरा ने अन्तिम हिचकी ली और पंचभूत से उसकी आत्मा का सम्बन्ध विच्छेद हो गया ।

## २२

**

ताहिरा का शव दिल्ली दरवाजे के बाहर काटला फीरोजशाह के पीछे एक कब्रिस्तान में दफन कर दिया गया। उसके अन्तिम सस्कार का प्रबध कौशल्या ने किया। क्योकि ताहिरा की मृत्यु सहसा हुई थी इसलिए पुलिस ने इस बारे मे कोई कार्यवाही न की। नाजिम को कुछ उन्माद के लक्षण उभर आए थे। उसने चीख-चीखकर अपने अपराध को स्वीकार किया और पुलिस से प्रार्थना की कि वह उसे वन्दी बना कर अभियोग चलाए किन्तु उसकी चीख-पुकार की कोई परवा न की गई और कुछ दिनो के पश्चात् उसे हस्पताल से डिस्चार्ज कर दिया गया।

नाजिम हस्पताल से निकलते ही कब्रिस्तान मे पहुचा। उन्माद उस पर पूरी तरह छा चुका था। उसके वस्त्र फटे हुए थे और बाल बिखरे थे। उसने एक कब्र खोदने वाले से पूछ कर ताहिरा की कब्र का पता लगा लिया और कब्र के समीप जा खड़ा हुआ। वह कितनी ही देर तक वहां मौन खड़ा रहा। कब्रिस्तान के उदास-उदास वातावरण में वह एक प्रकार का सन्तोष अनुभव कर रहा था। न जाने क्यो, उसने एक सिरे से दूसरे सिरे तक कब्रिस्तान पर एक सरसरी दृष्टि डाली और कुछ यो अनुभव किया जैसे यहा की शाति जीवन के हंगामों से कही अच्छी है। यह कब्रिस्तान एक लम्बे-चौड़े भूखण्ड पर फैला था। उसमें हर प्रकार की कब्रें थी। पक्की भी और कच्ची भी। कुछ कब्रें बहुत अधिक सुन्दर बनी

थी और उनके सिरहाने कतबे लगे हुए थे जो मरने वाले के सगे सम्बन्धियो के शोक को स्पष्ट करते थे। नाजिम ने निकट ही एक कब्र के कतबे को पढकर उन्मादपूर्ण अट्टहास किया और बोला—

'पागल कही के। मरने वालो से भी मजाक करने से नही रुकते। अगर ये मरने वालो के गम मे ऐसे ही घुले जाते है तो जिन्दा क्यो है? इनके साथ ही क्यो न मर गए?'

इतना कहकर नाजिम मौन हो गया और सोचने लगा 'मै तो उन लोगो से भी गया बीता हू। उन्होने तो फिर भी अपने मरने वाले मित्रों के लिए कुछ न कुछ किया है चाहे उसकी हैसियत प्रदर्शन ही है। मुझसे तो यह भी न हो सका और खुद जिन्दा रहकर, दूसरो को जिन्दा रहने का ताना दे रहा हू।'

नाजिम ने ताहिरा की कब्र पर एक भरपूर दृष्टि डाली और उसके सिरहाने बैठ गया। ताहिरा छ -सात फुट गहरी धरती मे लेटी थी और मनो मिट्टी मे दबी हुई थी किन्तु नाजिम की दृष्टि समस्त भौतिक रुकावटों को चीर कर उस स्थान तक पहुचने का यत्न कर रही थी जहा ताहिरा मीठी नीद सोई थी। नाजिम पूर्ण काग्रता से कब्र को देख रहा था और उसे कुछ यो अनुभव होने लगा जैसे मिट्टी का ढेर अणु के रूप मे ऊपर उडा जा रहा है और कब्र का आन्तरिक भाग धीरे-धीरे स्पष्ट हो रहा है। अन्त मे उसकी दृष्टि की पहुच शव तक हो गई और उसे ताहिरा कफन से लिपटी हुई दिखाई पड़ने लगी। सहसा सिरहाने की ओर से कफन खुल गया और ताहिरा का चहरा उसे स्पष्ट दिखाई पड़ने लगा। ऐसा प्रतीत हुआ जैसे वह मीठी नीद सो रही है। नाजिम ने मन ही मन सोचा कि वह वास्तव में गहरी नीद सो रही है। इतनी गहरी कि प्रलय के दिन ही उसकी आख खुलेगी।

इतने में निकट ही से एक काग जोर से बोला और नाजिम समाधि जगत् से पुनः इस जगत् मे लौट आया। अब ताहिरा उसकी दृष्टि से ओझल हो गई और उसके स्थान पर उसकी दृष्टि मिट्टी के एक ढेर पर

पड़ रही थी । उसने पुनः उसी स्थिति में पहुंचने का यत्न किया किन्तु एकाग्रता के टूटने के कारण उसकी यह आशा पूर्ण न हो सकी । अब उसने पुनः यही सोचना आरम्भ किया कि शोक सतप्त लोग केवल बातो से मृतको को धोका देने का यत्न क्यों करते है ? क्या वास्तव मे मरने वाले अपने प्रियो का वियोग उनके लिए असह्य होता है ? यदि यह सत्य है तो फिर वे इस वियोग की दीवार को तोड़ने का यत्न क्यो नही करते ? क्यो नही अपने प्रिय से जा मिलते ? अब फिर उसे अपने अपराध का अनुभव होने लगा । और सहसा उसे ध्यान आया कि 'डस डी मोना' की मृत्यु के पश्चात् अथैलो ने क्या किया था ? यह विचार आते ही उसका मुख प्रसन्नता से चमकने लगा । जैसे जीवन और मृत्यु के मध्य की लोह-भित्ति तोड़ने का कोई सफल उपाय हाथ लग गया हो ।

वह कब्र के सिरहाने से उठा । उसने पश्चिम की ओर देखा तो सूर्य अस्त हो चुका था और रात्रि का अधकार क्षितिज पर प्रभुत्व जमाता प्रतीत हो रहा था । सिर पर कागो की पक्तिया काएं-काए का शोर मचाती हुई उड़ी जा रही थी । नाजिम के देखते-देखते रात हो गई और रात्रि के अधकार ने चतुर्दशी के चन्द्रमा की किरणो को अधिक उजागर कर दिया । वह ताहिरा की कब्र के सिरहाने उसी प्रकार मौन तथा स्तब्ध खड़ा था और विचारो मे खोया था । वह यह सोच रहा था कि लोग मृत्यु से क्यो घबराते है ? और जीवन के सघर्षों को मृत्यु की शान्ति से क्यो बहतर समझते है ? सहसा इस प्रश्न का उत्तर उसके हृदय मे आ गया और वह यह कि 'मनुष्य ने मृत्यु के बारे मे जो भयानक विचार स्थिर कर रखा है वही वास्तव मे मृत्यु से उसकी घृणा का कारण है ।' कुछ देर के पश्चात् उसने विचार किया कि यह उत्तर भी गलत है । जीवन से प्यार और मृत्यु से घृणा का कारण यह नही बल्कि यह है कि जीवन के सघर्षों का अभ्यस्त होने के कारण मनुष्य उसे ही जीवन का लक्ष्य समझने लगता है और मृत्यु से उसे घृणा-सी हो जाती है । इसके अतिरिक्त मृत्यु के पश्चात् प्राप्त होने वाली शान्ति से क्योकि उसका

परिचय नहीं होता इसलिए वह उसका मूल्य पहचानने में असफल रहता है।'

नाजिम बड़ी देर तक जीवन और मृत्यु के दर्शन पर विचार करता रहा और यह अनुमान लगाने का यत्न करता रहा कि इन दोनो मे से अच्छी कौन सी वस्तु है। अन्त में उसने निर्णय किया कि जीवन की कटुताओ का यदि कोई निदान है तो वह केवल मृत्यु की ही शान्ती में है। यही कारण है कि जीवन से उकताए हुए मृत्यु ही की शरण लेने को विवश हो जाते है। इसके पश्चात् उसका ध्यान पुनः शैक्सपीयर के नाटक 'अथैलो' के अन्तिम दृश्य की ओर खिच गया और उस से उसके निर्णय का समर्थन हो गया।

वह मृत्यु की सी समाधि से सहसा जागा। उसने देखा तो चन्द्रमा की किरणे अपने पूरे प्रकाश के साथ कब्रिस्तान पर पड़ रही थी। उसने चारों ओर दृष्टि दौड़ाई तो उसे दूर २ तक फैला कब्रिस्तान दिखाई पड़ा। कही २ कब्रों पर टिमटिमाते हुए दीपक दिखाई दे रहे थे। नाजिम को उस वातावरण मे बहुत अधिक आकर्षण दिखाई पड़ा। उसने ससार के बड २ सुन्दर और गहन नगरों का भ्रमण किया था किन्तु जो शान्ति और सन्तोष उसे यहा प्राप्त हुआ कही भी नही मिला था। उसे यहां का सन्नाटा संसार की बस्तियों से कही अधिक अच्छा प्रतीत होता था और उसे यों अनुभव हो रहा था कि एक लम्बा मार्ग तै करने के पश्चात् राही को जो शान्ति और सुख लक्ष्य पर पहुच कर प्राप्त होता है वही ससार त्याग कर जाने वालों को यहा प्राप्त होता है। यह भी जीवन के सफर से थके हारे राहियों का लक्ष्य है। यही जीवन का प्राप्तव्य है। बल्कि यदि यों कहा जाय कि लोग जिसे मृत्यु कहते है वह वास्तव मे जीवन है और मृत्यु को उन्होंने भूल से जीवन का नाम दे रखा है तो बहतर होगा।

नाजिम बड़ी रात गए तक कब्रिस्तान मे ताहिरा की कब्र के समीप खड़ा रहा। जब किले के घण्टे ने ग्यारह बजाए तो उसने ताहिरा की

कब्र पर अन्तिम दृष्टि डाली और कब्रितान के फाटक की ओर चल दिया। उसका जी यहा से जाने को नहीं चाह-रहा था और सोच रहा था कि फिर वापस ताहिरा की कब्र के समीप जा खड़ा हो किन्तु सहसा उसे यह ध्यान आया कि जीवितों का मृतकों की बस्ती मे ठहरे रहना एक बेकार सी बात है। जीवन की कारा से स्वतंत्र हुए बिना यहा की शाति का आनन्द प्राप्त करने का विचार निरर्थक है।

यह विचार आते ही वह कब्रिस्तान के द्वार की ओर चल खडा हुआ और मार्ग की ऊंची नीची कब्रों से बचता हुआ कब्रिस्तान से निकल गया। कब्रिस्तान के ठीक सामने एक सड़क है जो दिल्ली दरवाजा महरौली और ओखला जाती है। दिन के समय उस सडक पर काफी गहमा गहमी रहती है और मोटरों तथा तागो का ताता सा बधा रहता है किन्तु अब यह सडक बिल्कुल सुनसान पडी थी। नाजिम उस सडक पर दिल्ली दरवाजे की ओर चल दिया। उस के पाव तो उठ रहे थे किन्तु हृदय और मस्तिष्क पर वही कब्रिस्तान छाया हुआ था। उस के पावो मे लक्ष्य की ओर उठते हुए कदमो की सी तेजी नही थी बल्कि यह कुछ यों लापरवाही से कदम उठा रहा था जैसे उनका काम ही आगे बढना हो चाहे वह व्यर्थ ही क्यों न हो। वह सड़क के एक ओर वृक्षो की छाया मे धीरे २ आगे बढ रहा था। चन्द्रमा के तीव्र प्रकाश ने सड़क पर जलने वाले बल्बो को बहुत अधिक धीमा कर दिया था और वे चतुर्दशी के चन्द्रमा की सुनहरी रोशनी का मुह चिड़ाते हुए प्रतीत होते थे। उन्हे देखकर नाजिम के चिन्तित और दु:खी चेहरे पर मुस्कराहट खेलने लगी और वह मन ही मन कहने लगा कि ससार में अनेक वस्तु मेरे समान बेकार है। जैसे सडक पर जलने वाले बल्व। भला इनको जलाए रखने की अब क्या आवश्यकता है ? क्या बिजली घर वालो को चन्द्रमा के प्रकाश पर विश्वास नही ? वे इन टिम-टिमाटते जुगनुओ के द्वारा चांद को क्यो आंखे दिखा रहे है ?

नाजिम खिलखिला कर हस पड़ा। और उसकी इस उन्मुक्त हसी से आस पास का वातावरण गूज उठा। सड़क के निकट ही दो चार बेफिक्रे

घास पर बैठे बाते मिला रहे थे। वे नाजिम को यों हंसते देख स्वयं भी हंस पडे। उन मे से एक ने अट्टहास करते हुए कहा—

'पागल खाने वालों ने इस पागल को इस वक्त क्यों निकाल बाहर किया है?'

दूसरों ने थोडी सहानुभूति के स्वर में कहा—

'अरे भाई! क्यो मजाक उड़ाते हो इस गरीब का। खुदा इस पागलपन के दौरे से बचाए।'

नाजिम ने इस बात चीत को सुन लिया और मन ही मन कहने लगा 'ये पागल दूसरों को क्यों पागल बताते हैं? इन के नजदीक हर वह शख्स पागल है जो कोई अक्ल की बात करे। क्या बिजली घर वाले पागल नही? जिन्हों ने अच्छी खासी चान्दनी रात मे शहर की सड़कों पर बिजली के बल्ब जला रखे है? अगर मुझे इन बिजली घर वालों की बेवकूफी पर हंसी आ गई तो इस में पागलपन की कौन सी बात है? और अगर मेरी हसी ही इन लोगों के नजदीक पागल पन की निशानी है तो ये खुद भी तो हसते है। मेरी हंसी की तो कोई वजह थी और इन्हो ने बे वजह दात निकालने शुरु कर दिए। अब कोई इन से पूछे कि पागल तुम हो या मै? और फिर इन्ही पर क्या निर्भर है। ससार में हर शख्स पागल है। यह दुनिया पागलों की दुनिया है। बुद्धिमान् इस दुनिया मे नहीं रहते।' यह विचार नाजिम के मस्तिष्क पर इस प्रकार छा गया कि उस का हृदय उच्च स्वर से यह कहने को हुआ—

'मै पागल नही हू। तुम पागल हो। ये दुनिया वाले पागल है। और यह दुनिया पागल खाना है।'

इस के साथ ही उस ने सोचा 'यदि मैने यह कह दिया तो यह भी मेरे पागलपन का प्रमाण होगा। बुद्धिमानों को पागलों की बातों का कोई उत्तर नही देना चाहिए। ये अट्टहास करने वाले सब पागल है और मै बुद्धिमान हूं।'

वह चुपके से आगे बढ़ गया। दिल्ली दरवाजा अब उस से केवल

लगभग एक फर्लांग था। पीछे से एक तागा उसके निकट से निकल गया। कोचवान ने उसकी ओर देखते हुए कहा—

'कहां जाओगे ?'

नाजिम ने मुस्कराते हुए कहा—

'दूसरी दुनिया मे।'

कोचवान ने उसका कोई उत्तर न दिया और अपने एक साथी से बोला—

'पागल है कोई।'

नाजिम ने एक अट्टहास किया। और उच्च स्वर मे बोला—

'हा साहब ! आप ने सही कहा। मै पागल हू और आप होशमंद है।'

कोचवान ने नाजिम को उन्मत्त के समान हसते देखा तो अपने साथी से बोला—

'कहिये मेरा अन्दाजा सही है या नही।'

उसके साथी ने उत्तर मे जो कुछ कहा नाजिम उसे न सुन सका। दिल्ली दरवाजे मे प्रविष्ट हो कर वह फैज बाजार रोड पर चल दिया। सड़क के दोनो ओर की दुकाने बन्द हो चुकी थी। वह एक स्थान पर रुक गया किन्तु फिर यह कहता हुआ सहसा चल दिया 'मेरा जिन्दगी का सफर अभी खत्म नही हुआ। मुझे अभी और अगे जाना होगा।' जब वह फैज बाजार रोड और अन्सारी रोड के चौराहे पर पहुचा तो रात के दो बजने की आवाज आई। वह चकित था कि उसने डेढ़ मील का मार्ग कोई तीन घण्टे मे पार किया है किन्तु उसे यह अनुभव हो रहा था कि वह अभी २ कब्रिस्तान से निकला है और यहां पहुचने मे कोई अधिक समय नहीं लगा। आखिर ये तीन घण्टे इतनी जल्दी बीत कैसे गए ? अन्त में उसके दार्शनिक मस्तिष्क ने इस पहेली को यों हल किया कि जो लोग समय और स्थान के बन्धन को तोड चुके हों अथवा तोड़ने के लिए कमर कस चुके हों उन के लिए वर्षों का समय एक क्षण से अधिक महत्व नहीं रखता।

चौराहे को पार कर के वह ऐडवर्ड पार्क की दीवार के समाने जा बैठा। उसने अपने कोट की जेब से कोई वस्तु निकाली और उन्मुक्त अट्ट-हास करता हुआ बोला—

'आखिर रखी रखाई चीज एक दिन काम आ ही जाती है।'

यह कहते हुए वह वस्तु उसने निगल ली। कुछ देर बाद उसे अपना सिर घूमता अनुभव हुआ। उसने सडक की ओर देखा तो उसकी टिम-टिमाती बत्तिया उसे वातावरण में नृत्य करती हुई अनुभव हुई जैसे जुगनू इधर उधर उड़ रहे हो। उसका सिर और अधिक चकराने लगा और उसने कुछ यों अनुभव किया कि धरती ऊपर की ओर जा रही है और आकाश नीचे की ओर झुका आ रहा है। उसके देखते-देखते धरती और आकाश मिल गए और दोनों के मिलने से एक छोटा सा प्रकाश चिह्न उत्पन्न हो गया। उस चिह्न मे उसे ताहिरा दृष्टिगत हुई। यह बिन्दु फिर फैलना आरम्भ हुआ और उसके साथ ही ताहिरा का शरीर भी बढने लगा। होते २ नाजिम को यो अनुभव हुआ कि दोनों लोको का विस्तार ताहिरा में गुम हो कर रह गया। उसके बाद प्रकाश सहसा तीव्र हो गया। जैसे बुझता हुआ दीपक भडकता है। फिर चारों ओर अधकार छा गया, अपार और अनन्त अंधकार।

प्रातः काल नाजिम का शव ऐडवर्ड पार्क के निकट सड़क के किनारे पडा था और पुलिस कर्मचारी और कुछ लोग उसे घेरे हुए थे। इतने में एक युवक वहा से निकला। उसने एक व्यक्ति से पूछा—

'यहां भीड़ क्यों लग रही है?'

उस व्यक्ति ने कहा—

'किसी ने रात के समय आत्म हत्या कर ली है। उसका शव पड़ा है।'

युवक भीड़ की ओर लपका और भीड़ को चीरता हुआ नाजिम के शव तक पहुंच गया। शव को देखते ही उसके मुख से चीख निकली और बोला—

'नाजिम !'

यह युवक प्रोफेसर वहीद था जो प्रवीन के साथ नाजिम की खोज में दिल्ली आया हुआ था।

वहीद को अपने मित्र के यों आत्म घात कर लेने पर बहुत दु.ख हुआ। अधिक खेद उसे इस बात का था कि नाजिम की मृत्यु का सब से बडा कारण वह स्वय है जिसने इशरत और शमीम के दाव मे आ कर अनजाने अपने अभिन्न मित्र को असह्य चोट पहुचाई और अन्त में यही चोट उसकी मृत्यु का कारण सिद्ध हुई।

वहीद नाजिम के शव के निकट खड़ा अश्रु बहा रहा था और उसके विचार मे चल चित्र के समान एक के पश्चात् एक वे घटनाए आ रही थी जो नाजिम को अपने प्रेम काल मे देखनी पड़ीं। कुछ घटनाओ का उसे ज्ञान न था किन्तु उस ने अपने विचार के अनुसार उन घटनाओं को जिनका उसे ज्ञान था एक दूसरी से सम्बद्ध कर लिया था और इस मानसिक फिल्म को तैयार कर लिया था। यह फिल्म ऐडवर्ड पार्क के निकट मातृभूमि से दूर पडी एक लाश पर आ कर समाप्त हो गई। और वहीद विचार जगत् से पुन. इस जगत मे आ गया। नाजिम के शव को हस्पताल ले जाने के लिए पुलिस के सिपाही एक लारी मे रख रहे थे। एक सब इन्स्पैक्टर ने उस से कहा—

'क्या मरने वाला तुम्हारा कोई सम्बन्धी है ?'

वहीद ने रूमाल से आंसू पोछते हुए कहा—

'हां'

इसके अतिरिक्त वह और कुछ न कह सका।

सब इन्स्पैक्टर ने उससे कहा—

'तो फिर लाश के साथ ही लारी मे बैठ जाइये। पोस्ट मार्टम के बाद लाश आपके हवाले कर दी जाएगी।'

वहीद लारी में बैठ गया और लारी नाजिम के शव को ले कर हस्पताल पहुंच गई। पोस्ट मार्टम आरम्भ हो गया। उसी समय वहीद

ने टेलीफोन पर प्रवीन को पूर्ण वृत्तान्त की सूचना दी। वह उसके एक मित्र के यहा ठहरी हुई थी। यह सुनते ही उसके पाव तले की धरती निकल गई और रोती धोती, गिरती पड़ती हस्पताल पहुची।

पोस्ट मार्टम के पश्चात् नाजिम का शव उन दोनों को सौप दिया गया। पहले तो उन्हों ने निर्णय किया कि शव को लाहौर ले जाए। नाजिम के कोट की जेब से कागज का एक टुकड़ा मिला जिस पर लिखा था कि 'मुझे अमुक कब्रिस्तान में ताहिरा की कब्र के निकट दफन किया जाए।'

नाजिम की इच्छा के अनुसार वहीद और प्रवीन ने उसे ताहिरा की कब्र के दाईं ओर दफन करवा कर दोनों की कब्रे पक्की करवा दी और कब्रों के तावीज एक दूसरे से मिला दिए। कब्रों के सिरहाने दो कतबे लगवा दिये गए जिन पर मरने वालो के नाम लिखे थे और जो अभिभावको के हार्दिक दु:ख को प्रकट करते थे। मतलब यह कि ताहिरा और नाजिम से भी वही परिहास किया गया जो अभिभावक अपने प्रिय मरने वालों से करते है किन्तु नाजिम की आत्मा को वह अनन्त शान्ति प्राप्त हो गई थी जिसे वह खोज रहा था।

●●●